आर.एन.आई. नं. 3653/57
डाक पंजीयन संख्या RJ/JPC/M-07/2009-11
वर्ष : 66 ★ अंक : 4 ★ मूल्य : 10 रु.
10 अप्रेल, 2009 ★ चैत्र 2066

हिन्दी मासिक

जिनवाणी

नमस्कार महामंत्र

णमो अरिहंताणं
णमो सिद्धाणं
णमो आयरियाणं
णमो उवज्झायाणं
णमो लोए सव्वसाहूणं ॥
एसो पंच णमोक्कारो,
सव्व-पावप्पणासणो,
मंगलाणं च सव्वेसिं,
पढमं हवइ मंगलं ।

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल जयपुर

मंगल-मूल, धर्म की जननी,
शाश्वत सुखदा कल्याणी।
द्रोह-मोह-छल-मान-मर्दिनी,
महिमामयी यह 'जिनवाणी'॥

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

पीयें धोवन पानी, बोले मीठी वाणी यही कहे जिनवाणी ।

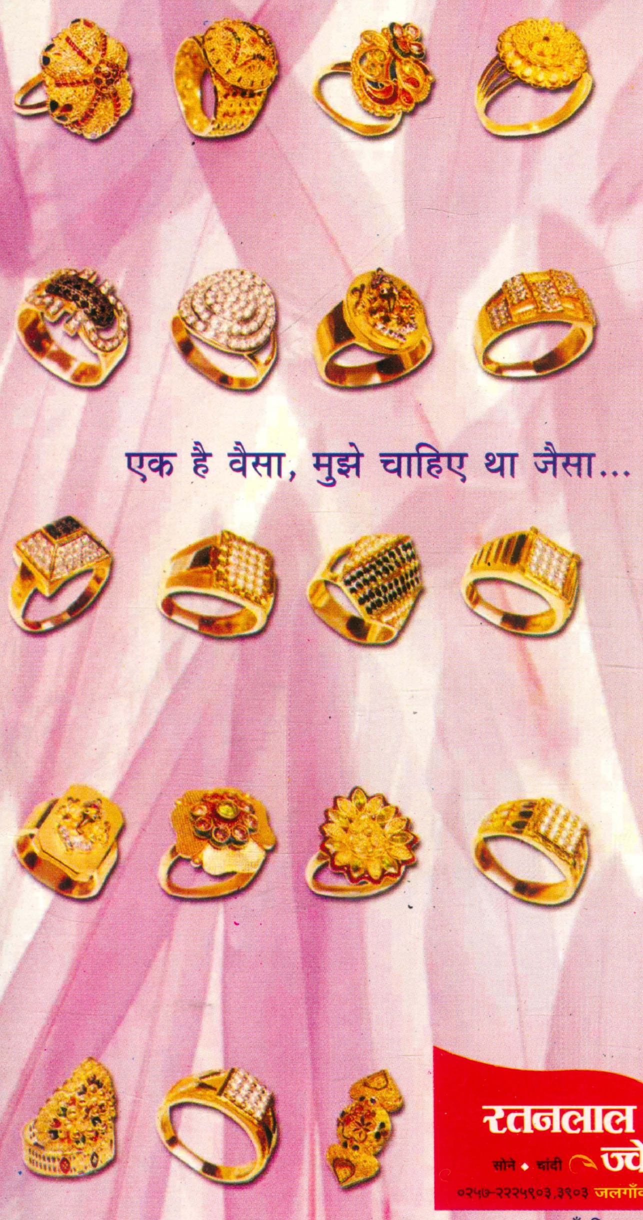

गहने
अलंकार
नक्काशीवाले
चमकिले
तेजस्वी
ओजस्वी

॥ स्वर्णतीर्थ ॥

प्रभावी
अदभूत
अक्षय
अर्थपूर्ण
अष्टपैलू
अगम्य
मोहंर
अनमोल
अप्रतिम
माणिक

रतनलाल सी. बाफना
सोने • चांदी ज्वेलर्स हिरा • मोती
०२५७-२२२५९०३,३९०३ जलगाँव • औरंगाबाद ०२४०-२२४४५२०,२२
जहाँ विश्वास ही परंपरा है।

जिनवाणी हिन्दी-मासिक

मंगल-मूल, धर्म की जननी, शाश्वत सुखदा कल्याणी।
द्रोह-मोह-छल-मान-मर्दिनी, महिमामयी यह 'जिनवाणी'।।

卐 संरक्षक

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ
घोड़ों का चौक, जोधपुर (राज.), फोन. 2636763

卐 संस्थापक

श्री जैन रत्न विद्यालय, भोपालगढ़

卐 प्रकाशक

प्रेमचन्द जैन, मंत्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
दुकान नम्बर 182-183 के ऊपर, बापू बाजार,
जयपुर-302003 (राज.),
फोन नं. 0141-2575997, फैक्स-0141-2570753

卐 सम्पादक

प्रो. (डॉ.) धर्मचन्द जैन
3 K 24-25, कुड़ी भगतासनी हाउसिंग बोर्ड
जोधपुर- 342005, फोन नं. 0291-2730081
E-mail : jinvani@yahoo.co.in

卐 सह-सम्पादक

नौरतन मेहता, जोधपुर
डॉ. श्वेता जैन, जोधपुर

卐 भारत सरकार द्वारा प्रदत्त

रजिस्ट्रेशन नं. 3653/57
डाक पंजीयन सं.RJ/JPC/M-07/2009-11

卐 सदस्यता

स्तम्भ सदस्यता-रू.11000/-संरक्षक सदस्यता-रू.5000/
त्रिवर्षीय सदस्यता-रू.120/-
आजीवन सदस्यता देश में - रू. 500/-
विदेश में- रू. 5000/- इस अंक का मूल्य रू. 10/-
साहित्य आजीवन सदस्यता- रू. 3000/-

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

स पुव्वमेवं न लभेज्ज पच्छा,
एसोवमा सासयवाइयाणं।
विसीयई सिढिले आउयंमि,
कालोवणीए सरीरस्स भेए।।9।।

— उत्तराध्ययन सूत्र 4.9

पूर्व रहा न अप्रमत्त पीछे पालेगा,
यह शाश्वत वादी - कथा है।
आयु - शैथिल्य में कालजनित,
तन-भेद देख मन करता अन्तर्व्यथा है।।9।।

अप्रेल 2009
वीर निर्वाण संवत् 2535
चैत्र 2066

वर्ष 66 अंक 4

मुद्रक : दी डायमण्ड प्रिण्टिग प्रेस, मोतीसिंह भोमियों का रास्ता, जयपुर, फोन: 2562929

ड्राफ्ट 'जिनवाणी' जयपुर के नाम बनवाकर प्रकाशक के उपर्युक्त पते पर प्रेषित किया जा सकता है।

नोट : यह आवश्यक नहीं कि लेखकों के विचारों से सम्पादक या मण्डल की सहमति हो ।

विषयानुक्रम

सम्पादकीय -	महावीर की दृष्टि में नैतिकता (2)	-डॉ. धर्मचन्द जैन	5
अमृत-चिन्तन-	आगम-वाणी	-संकलित	9
	विचार-वारिधि	-आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा.	10
प्रवचन-	जैसी दृष्टि : वैसी सृष्टि	-आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा.	11
	सहयोग का भाव : एक अमूल्य निधि	-महास्थविर तपस्वी श्री प्रकाशमुनि जी म.सा.	15
संघ-चिन्तन -	संघ-संगठन और हमारा उत्तरदायित्व	-डॉ. मंजुला बम्ब	20
शोधालेख -	जैन परमाणुवाद	- श्री चिरंजीव 'अनेकान्त'	47
अंग्रेजी-स्तम्भ-	World's Problems and Jaina View-Point	*-Prof. Sagarmal Jain*	27
पत्र-वार्ता-	समझौते की पहल	-आचार्य श्री विजयरत्नसुन्दरसूरि	35
	बैंगलोर में आयोजित शिविर में संवाद	-श्री गौतमचन्द ओस्तवाल	37
तत्त्व चर्चा-	आओ मिलकर ज्ञान बढ़ाएँ (48)	-श्री धर्मचन्द जैन	42
धारावाहिक-	जम्बूकुमार (59)	-जैन दिवाकर श्री चौथमल जी म.सा.	52
उपन्यास-	सुबह की धूप (2)	-श्री गणेशमुनि जी शास्त्री	58
एकांकी-	क्या मैं सही हूँ?	- श्री दिलीप जैन	68
स्वास्थ्य-विज्ञान-	उपवास से रोग-निवारण कैसे?	- श्री धनरूपमल सुराणा	71
	आरोग्य का मूलाधार : नाभि सन्तुलन	- डॉ चंचलमल चोरडिया	85
युवा-स्तम्भ-	युवा अपनी दिशा बदलें, दशा बदल जायेगी	-श्री पद्मचन्द गांधी	73
नारी-स्तम्भ-	आओ! घर को स्वर्ग बनाएँ (2)	- श्रीमती रतन चोरडिया	76
बाल-स्तम्भ-	माँस सस्ता या महंगा?	- श्री मधुकर मुनि जी	80
विचार-	Nice Thoughts	*-Meenakshi Jain*	62
	चिन्तन-कण	- संकलित	64
	सामायिक : युग की माँग	- श्री लक्ष्मीचन्द जैन	67
गीत/कविता-	चार दिनों का है यह जीवन	- श्री मोहन कोठारी 'विनर'	14
	अपूर्व पूँजी	- श्री जिनेन्द्र कुमार जैन	57
	मोक्ष-मंजिल : शाश्वत निवास	-श्री जितेन्द्र चोरडिया 'प्रेक्षक'	63
	प्रतिकार	- डॉ. दिलीप धींग	79
प्रेरक प्रसंग/संस्मरण-	संवेदनशीलता	- संकलित	51
	अण्डा खाना पाप है	- डॉ. दिलीप धींग	65
	क्षणिकाएँ	-प्रीति जैन	70
संवाद-	समस्या-समाधान (22)		89
साहित्य समीक्षा-	नूतन-साहित्य	-डॉ. धर्मचन्द जैन	90
समाचार विविधा-	समाचार-संकलन		91
	साभार-प्राप्ति-स्वीकार		113

सम्पादकीय

महावीर की दृष्टि में नैतिकता (2)

❖ डॉ. धर्मचन्द जैन

भगवान् महावीर के द्वारा आत्मविशुद्धि के लिए दिए गए उपदेश में नैतिकता का संदेश स्वतः समाहित है। नैतिकता का सम्बन्ध जहाँ अन्य प्राणियों के साथ व्यवहार की निर्मलता, निष्पक्षता एवं न्यायशीलता से है वहाँ आत्मविशुद्धि का सम्बन्ध व्यक्तिगत जीवन की निर्दोषता से है। यह अवश्य है कि व्यक्तिगत निर्दोषता में आस्था रखने वाला व्यक्ति दूसरे प्राणियों के साथ कृत अपने आचरण में नैतिकता का आधान किए बिना नहीं रहता। नैतिकता आत्मविशुद्धि में अनुस्यूत है। इसलिए महावीर जब आत्मविशुद्धि का उपदेश देते हैं तो वे नैतिकता का परिहार नहीं करते।

जिस प्रकार अहिंसा व्यक्ति की आत्मविशुद्धि करने के साथ उसे नैतिक बनाती है, उसी प्रकार सत्य भी दोनों कार्य करता है। सत्य को आगम में भगवान् कहा गया है- 'सच्चं खु भगवं'। सत्य का आचरण ही भगवत्ता को प्राप्त कराने का साधन है। सत्य ही आदरणीय एवं आचरणीय है। सत्य के दो रूप हैं- 1. यथार्थ, परमार्थ अथवा भूतार्थ के रूप में, 2. सत्य वचन के रूप में। दोनों का अपना महत्त्व है। हम प्रायः सत्य वचन तक सत्य को सीमित रखते हैं। साधु एवं श्रावक के महाव्रतों एवं अणुव्रतों में भी इसी सत्य-वचन का प्रतिपादन है, जिसमें मृषावाद का विरमण किया जाता है। किन्तु आगम में उस सत्य का भी प्रचुर प्रतिपादन हुआ है, जो जीवन और जगत् के यथार्थ को अभिव्यक्त करता है। उस यथार्थ सत्य की जिज्ञासा, उसकी सही समझ व्यक्ति में सम्यग्दर्शन के प्रकटीकरण का हेतु बनती है। जीवन का सत्य क्या है? संसार का सत्य क्या है? इसको जानने की जिज्ञासा सम्यग्दर्शन के प्रति रुचि उत्पन्न करती है। इस रुचि से ही व्यक्ति जीवन और संसार के यथार्थ का बोध करता है। जीवन और संसार का यथार्थ स्वरूप ही सत्य है। उदाहरण के लिए- यह सत्य है कि प्राप्त धन, ऐश्वर्य, इन्द्रिय सुख, शरीर आदि विनश्वर हैं। यह भी सत्य है कि इनके प्रति आसक्ति दुःख का कारण है। यह भी सत्य है कि अपने भीतर उत्पन्न होने वाले दुःखों को सम्यक् समझ एवं सम्यक् आचरण के साथ दूर किया जा सकता है। यह भी सत्य

है कि व्यक्ति स्वयं अपने दुःखों का कारण है। इस प्रकार का सत्य परमसत्य है। यही भूतार्थ, परमार्थ अथवा यथार्थ है। इस प्रकार का सत्य जीवन एवं संसार की यथार्थता एवं अयथार्थता की व्याख्या करता है। जैन दर्शन का निश्चय नय इसी सत्य की ओर ले जाता है।

जीवन एवं जगत् विषयक सच्चाई से अनभिज्ञ रहकर अथवा जानते हुए भी मृषा भाषण करना दोषपूर्ण है। मृषावाद के अन्तर्गत प्रश्नव्याकरण सूत्र में उन सिद्धान्तों का समावेश किया गया है जो जीवन और संसार की सही व्याख्या नहीं करते। जीवन का सत्य जानने वाला भला क्यों मृषावाद का आश्रय लेगा? जो सत्य से अनभिज्ञ है, कषायों से आविष्ट है, दृष्टि से मलिन है वही व्यक्ति मृषावाद का आलम्बन लेता है। साधु मृषावाद का पूर्ण त्यागी होता है। इसका तात्पर्य है कि वह मन, वचन एवं काया से मिथ्या नहीं बोलता। उसके चिन्तन, वचन और आचरण में सरलता एवं एकरूपता होती है। वह कठोर, कर्कश, छेदकारी, भेदकारी भाषा का भी प्रयोग नहीं करता, क्योंकि उस भाषा में हिंसा का समावेश रहता है। वह व्यक्ति की मलिनता की सूचक होने के साथ दूसरों को आघात पहुँचाने वाली होने से त्याज्य होती है।

सत्य कथन को परिभाषित करना कठिन है। इसलिए साधु के महाव्रत एवं श्रावकों के अणुव्रतों में मृषावाद विरमण के रूप में सत्य कथन पर बल दिया गया है। मिथ्या अथवा मृषा बोलने से भी बचना है, मर्म को उद्घाटित करने वाले ऐसे कथन से भी बचना है जो विवाद और हिंसा को जन्म देते हैं। हितकारी और मधुर शब्दों का प्रयोग साधु और श्रावक को शोभा देता है। क्षुद्र स्वार्थों में लिपटा व्यक्ति कब झूठ का आश्रय ले लेता है, इसका उसे भान ही नहीं होता। झूठ का सहारा नैतिकता का भी हनन करता है एवं आत्मविशुद्धि में भी बाधक बनता है। अपने भीतर रही हुई लोकैषणा, वित्तैषणा और विषय सुखों की एषणा व्यक्ति को सत्य मार्ग पर चलने से रोकती है। तब वह सत्य का भाषण भी कैसे कर सकता है। कहीं न कहीं उसकी भाषा में मृषा तत्त्व आ ही जाता है।

सत्य की जिज्ञासा से जीने वाला व्यक्ति आध्यात्मिक होने के साथ नैतिक भी होता है। किन्तु मात्र शब्दों में सत्य भाषण करने वाले व्यक्ति का नैतिक होना आवश्यक नहीं है। वह एक पक्ष में नैतिकता को स्थापित करने का प्रयास करता है, किन्तु उसका दूसरा पक्ष अनैतिकता की ओर गमन करने लगता है। उदाहरण के लिए किसी के दोषों को सबके समक्ष उजागर करना सत्य भाषण

तो है, किन्तु दुर्भाव पूर्वक नीचा दिखाने के भाव से किसी के दोषों का कथन करना अनैतिक कार्य है। क्योंकि इससे किसी को गहरा सदमा भी पहुँच सकता है। कुछ दोष जानते हुए भी लोक के समक्ष प्रकट नहीं किये जाते तथा कुछ दोषों को लोकहित में प्रकट भी किया जाता है। यह नैतिकता का विषय है कि क्या बात कही जाए और क्या नहीं, कब कही जाए और कब नहीं।

परस्पर विश्वास का घात करना भी अनैतिक कार्य है। सत्य का मार्ग विश्वास का मार्ग है। सत्य भाषण परस्पर विश्वास उत्पन्न करता है। यह यश का मूल है, इसे स्वर्ग का द्वार एवं सिद्धि का सोपान भी माना गया है। जैसाकि हरिभद्र सूरि के धर्मसंग्रह में कहा गया है-

सच्चं जसस्स मूलं, सच्चं विस्सासकारणं परमं।
सच्चं सग्गद्दारं सच्चं सिद्धीइ सोपाणं।।

-धर्मसंग्रह 2.26 की टीका

दशवैकालिक सूत्र में कहा गया है कि मेधावी पुरुष माया एवं मृषा का अणुमात्र भी सेवन न करे-

अणुमायं पि मेहावी, माया मोसं विवज्जए।

-दशवैकालिक 5.2.21

साधु के दूसरे महाव्रत में मृषा कथन करने का त्याग होता है। वह क्रोध के कारण, लोभ के कारण, भय के कारण और हास्य के कारण भी कभी मृषा वचन नहीं कहता। दूसरों के द्वारा भी मृषा वचन नहीं कहलाता तथा कहने वाले का अनुमोदन भी नहीं करता। यह सत्य के प्रति आस्था एवं निष्ठा का सूचक है। व्यक्ति क्रोध, अहंकार, लोभ, भय आदि के कारण तो झूठे वचन का प्रयोग करता ही है, कभी हास्य अथवा विनोद में भी झूठ बोलता रहता है। साधु हास्य में भी झूठ नहीं बोलता। क्योंकि कभी हँसी में कहा गया कथन भी आघात पहुँचाने वाला बन जाता है।

हम घटनाओं, कथनों अथवा तथ्यों में फेरफारपूर्वक कथन करने को ही मिथ्याभाषण समझते हैं। यह सत्य का स्थूल रूप है, जिसमें इस प्रकार के मिथ्या भाषण का परिहार किया जाता है। आज श्रावक ही नहीं कई साधु-साध्वी मिथ्या भाषण करते हुए देखे जाते हैं। झूठ का आलम्बन एवं उसके प्रति आस्था कभी व्यक्ति को सत्य का साक्षात्कार नहीं करा सकती।

सत्य के आचरण से तात्पर्य है- सम्यग्दर्शन पूर्वक ज्ञान का आचरण।

ऐसा व्यक्ति अपने प्रति एवं जगत् के अन्य प्राणियों के प्रति सच्चा होता है। छल-छद्मपूर्वक अपनी महिमा का विस्तार करने का इच्छुक कभी सत्य का उपासक नहीं होता और उसका आचरण नैतिकता के मानदण्डों पर भी खरा नहीं उतरता। सत्यनिष्ठ व्यक्ति अपने प्रति सच्चा होता है, वह अपनी बुराइयों को भी हस्तामलकवत् जानता है। अपनी कमजोरियों से भी अवगत रहता है। दूसरों की अच्छाइयाँ उसे आकर्षित करती हैं, किन्तु बुराइयाँ छोड़ने योग्य प्रतीत होती हैं। ऐसा सत्यनिष्ठ व्यक्ति नैतिकतापूर्ण आचरण करे, यह स्वाभाविक है। वह दूसरों की निन्दा और अपनी प्रशंसा में रस नहीं लेता। वह मृत्यु के सत्य को भी सामने रखकर चलता है। उसका प्रत्येक आचरण अपने दोषों का परिमार्जन करने के लिए होता है, जिसमें नैतिकता का पुट अपने आप आ जाता है।

आज व्यक्ति दूसरों से सत्य भाषण की अपेक्षा करता है, किन्तु स्वयं असत्य बोलते हुए नहीं हिचकिचाता। इसे नैतिक आचरण नहीं कह सकते।

जीवन के सत्य के अनुसार आचरण सत्य का व्यापक रूप है तथा तदनुरूप भाषा का प्रयोग सत्य का स्थूल रूप है। सत्य भाषण भी तभी महत्त्व का होता है जब वह व्यक्ति को जीवन के सत्य की ओर ले जाता है। भगवान् महावीर ने उसी परम सत्य में आस्था रखने पर बल देते हुए कहा है- **'सच्चम्मि धिइं कुव्वहा।'**-आचारांग, 1.2.3

इसी सत्य को जानने की उन्होंने प्रेरणा की है- **'पुरिसा! सच्चमेव समभिजाणाहि।।**- आचारांग, 1.1.3 इसी सत्य की आज्ञा में उपस्थित रहने वाला मेधावी पुरुष मृत्यु के प्रवाह को तैर जाता है- **'सच्चस्स आणाए उवट्ठिए मेहावी मारं तरइ।'** -आचारांग, 1.3.3

सत्य का यह समस्त प्रतिपादन उस परम सत्य में आस्था रखने के लिए प्रेरित करता है। जो परम सत्य में आस्था रखता है वह मृषावाद से स्वतः विरत हो जाता है। फिर वह भाषा के चार प्रकारों में सत्य भाषा एवं व्यवहार भाषा का ही प्रयोग करता है, असत्य भाषा एवं मिश्र भाषा का नहीं। नैतिकता का सम्बन्ध प्रायः झूठ बोलने से, मिथ्या भाषण से है, जबकि आध्यात्मिकता एवं धर्म का सम्बन्ध सत्यनिष्ठ बनने से है। यही कारण है कि बारहवें गुणस्थान में भी सत्यनिष्ठ साधु में कदाचित् असत्य भाषा का प्रयोग माना गया है। इस दृष्टि से कहा गया है- **सच्चं लोगम्मि सारभूयं।** -प्रश्न व्याकरण 2.2 अर्थात् सत्य ही संसार में सारभूत है।

(क्रमशः)

तत्त्व-चिन्तन

आगम-वाणी

(भृगु पुरोहित और उनके पुत्रों का संवाद)

अह तायगो तत्थ मुणीण तेसिं, तवस्स वाघायकरं वयासी।
इमं वयं वेयविओ वयंति, जहा न होइ असुयाण लोगो ॥8॥
अहिज्ज वेए परिविस्स विप्पे, पुत्ते पडिठप्प गिहंसि जाया।
भोच्चाण भोए सह इत्थियाहिं, आरण्णगा होइ मुणी पसत्था ॥9॥
वेया अहीया न भवंति ताणं, भुत्ता दिया निंति तमंतमेणं।
जाया य पुत्ता न हवंति ताणं, को णाम ते अणुमन्नेज्ज एयं ॥12॥
खणमेत्तसोक्खा बहुकालदुक्खा, पगामदुक्खा अणिगामसोक्खा।
संसारमोक्खस्स विपक्खभूया, खाणी अणत्थाण उ कामभोगा ॥13॥
परिव्वयंते अणियत्तकामे, अहो य राओ परितप्पमाणे।
अन्नप्पमत्ते धणमेसमाणे, पप्पोति मच्चुं पुरिसे जरं च ॥14॥
इमं च मे अत्थि, इमं च नत्थि, इमं च मे किच्च इमं अकिच्चं।
तं एवमेवं लालप्पमाणं, हरा हरंति त्ति कहं पमाए? ॥15॥

-उत्तराध्ययन सूत्र, अध्ययन 14, गाथा 8-9, 12-15

भृगु पुरोहित ने अपने पुत्रों से कहा- "हे पुत्रों! वेदज्ञ कहते हैं कि जिनके पुत्र नहीं होता, उनकी गति नहीं होती। अतः वेदाध्ययन कर, ब्राह्मणों को भोजन करवाकर स्त्रियों के साथ भोग भोगो और अपने पुत्रों को घर का भार सौंप कर मुनि बनना।"

प्रत्युत्तर में दोनों पुत्रों ने कहा-"वेदों का अध्ययन आत्मरक्षक नहीं होता, पुत्र भी त्राण रूप नहीं होते हैं। ये कामभोग क्षणमात्र के लिए सुखदायी होते हैं, किन्तु फिर चिरकाल तक दुःख देते हैं और अनर्थों की खान हैं। जो काम से निवृत्त नहीं है, वह दिन-रात भटकता फिरता है। भोगों में आसक्त होकर धन की खोज में लगा हुआ पुरुष जरा और मृत्यु को प्राप्त हो जाता है। यह मेरा है और यह मेरा नहीं है- इस प्रकार विचार करते हुए उसके आयुष्य का अपहरण हो जाता है। ऐसी स्थिति में भोगों में प्रमाद करना कैसे उचित है।

अमृत-चिन्तन

विचार-वारिधि

आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा.

- यदि विषय-कषाय नहीं घटते हैं तो कहना चाहिए कि अब तक हमारे जीवन में चारित्र नहीं आया है।
- हमेशा याद रखिए कि आदमी की पूजा ज्ञान से नहीं हुई है, आदमी की पूजा अधिकार और स्थिति से नहीं हुई है, उसकी पूजा उसके रूप और वैभव से नहीं हुई है। उसकी पूजा यदि हुई है तो उसके चारित्र से हुई है।
- रावण के पास ज्ञान था, ऋद्धि थी, सम्पदा थी, लेकिन उसमें चारित्र नहीं था, इसलिए आज कोई उसका नाम रखने को तैयार नहीं हैं।
- प्राणी सदा कुछ न कुछ करता रहता है, कभी निष्क्रिय नहीं रहता। किन्तु उसको यह ज्ञान नहीं होता कि कौन सा कर्म करणीय है और कौन सा अकरणीय। बहुत बार वह ऐसे कर्म करता है कि अपने आपको उलझा लेता, फंसा लेता है। अतः ज्ञानियों ने कहा-विवेक पूर्वक आचरण करो, कुकर्म से सुकर्म की ओर बढ़ो।
- चींटी रात-दिन चक्कर काटती है फिर भी कोई मूल्य नहीं। उसके लिए कोई लक्ष्य नहीं है। चोर भी कर्म करता है, रात को गली में वह भी घूमता और संरक्षक दल भी घूमता है, पर एक का भ्रमण कुकर्म रूप है जबकि दूसरे का सुकर्म रूप। एक भयभीत रहता है तो दूसरा निर्भय आवाज मारता है। इसीलिए ज्ञानी कहते हैं कुकर्म से सुकर्म में आओ तो साधना करते अकर्म हो जाओगे।
- संसार में दो तरह से पेट भरा जाता है, एक तो आर्य कर्म से, जिसमें हिंसा कम होती है तथा कूड़-कपट, छल-छिद्र, धोखा आदि के बिना ही काम करके अपना गुजारा चला लिया जाता है। दूसरा वह जिसमें धोखा देकर, झूठ बोलकर, गुमराह करके, सरकारी टैक्स की चोरी करके पैसा मिलाया जाता है। इन दोनों में फर्क है। गृहस्थी के लिए धंधा करना मना नहीं है, लेकिन छल कर्म करके महा आरम्भ का धंधा करना मना है। अच्छा गृहस्थ अपने खाने-पीने में और अन्य खर्च में भी कमी करके गुजर करना मंजूर करेगा, लेकिन महापाप का धंधा नहीं करेगा।

-'नमो पुरिसवरगंधहत्थीणं' ग्रन्थ से साभार

प्रवचन

जैसी दृष्टि : वैसी सृष्टि

आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा.

पूज्य आचार्यप्रवर द्वारा फाल्गुनी चौमासी के दिन सूरतनगर में 10 मार्च,2009 को फरमाए गए, प्रस्तुत प्रवचन को श्री जगदीश जी जैन, अध्यापक ने लिपिबद्ध किया है।-**सम्पादक**

तीर्थंकर भगवान् महावीर ने अनन्त-अनन्त जीव राशि को स्थानांग सूत्र के चौथे ठाणे में चार भागों में विभक्त किया। कुछ जीव ऐसे हैं- जो रूप सम्पन्न हैं और गुण सम्पन्न भी हैं। कुछ ऐसे हैं जो रूप सम्पन्न नहीं, पर गुण सम्पन्न हैं। अनेक प्राणी ऐसे भी हैं, जो न तो रूप सम्पन्न हैं, न ही गुण सम्पन्न। तो कइयों का वर्णन रूप सम्पन्न में हो रहा है, पर उनमें गुण सम्पन्नता किंचित् भी नहीं। पहले विभाग के जीव स्वयं तिरते हैं और दूसरों को भी तारते हैं। वे अपनी आत्मा का उत्थान करने के साथ अनेकानेक भव्य जीवों को आत्मलक्ष्यी बनाने में समर्थ होते हैं - उनमें सबसे पहले क्रम पर तीर्थंकरों एवं गणधर भगवन्तों का है। तीर्थंकर भगवन्तों के रूप के सामने इन्द्र की आभा भी फीकी पड़ जाती है। इन्द्र का समग्र रूप तीर्थंकर भगवन्तों के नख की भी बराबरी नहीं कर सकता। यह रूप सम्पन्नता की बात हुई, अब गुण सम्पन्नता को लीजिये। तीर्थंकर भगवान् के समवशरण में इन्द्रभूति गौतम भी अहंकार को लेकर आये थे, पर गुण और ज्ञान की सम्पन्नता को देखकर अपना सब कुछ समर्पण कर दिया। श्रेणिक को देखकर कई श्रमण-श्रमणियों ने उसके जैसा रूप पाने का निदान कर लिया, लेकिन वही श्रेणिक जब एक समय उद्यान में गया और वहाँ ध्यानस्थ अनाथी मुनि को देखा तो हृदय से उद्गार निकल पड़े-

अहो वण्णं! अहो रूवं! अहो अज्जस्स सोमया।
अहो खंती! अहो मुत्ती! अहो भोगे असंगया॥

-उत्तराध्ययन सूत्र, अ. 20/7

श्रेणिक कह रहा है- जीवन में मैंने अनेक रूप सम्पन्न देखे, पर इनका रूप कुछ विशेष ही है। इनमें रूप के साथ गुणों की भी सम्पन्नता है। इनकी जैसी- सरलता, सौम्यता, कान्ति आदि कहीं, कभी देखने को नहीं मिली। शास्त्र वर्णन करता है कि चेलना के लाख-लाख प्रयत्न करने पर भी श्रेणिक का मिथ्यात्वपना

नहीं छूटा, पर अनाथी का जीवन रूप-रंग एवं सत्संगति को पाकर भी सम्यक्त्वी बन गया। आपने राजा प्रदेशी की बात सुनी होगी। धन के पीछे पागल बने हुए, क्रूर, हिंसा कर प्रसन्न होने वाले प्रदेशी ने जब केशी श्रमण की ओर देखा तो आश्चर्य चकित हो गया- क्योंकि पहला आकर्षण रूप का है ही ऐसा। ऐसे ही महान् अतिशय वाले पुण्यशाली महापुरुष सुबाहुकुमार का सुखविपाक सूत्र में वर्णन आया है, जिनको देखकर गौतम स्वामी प्रभु से पृच्छा कर रहे हैं- "हे भगवन्! इस सुबाहु ने ऐसा क्या दिया? कौन सा महान् कार्य किया? कौन सा आर्यवचन सुना, जिसके फलस्वरूप आज इसने इतना कान्त, प्रिय एवं इष्ट रूप पाया है।"

दूसरे विभाग के अनुसार कुछ रूपसम्पन्न तो नहीं, पर गुण सम्पन्न हैं। उदाहरण स्वरूप हरिकेशी बल- चाण्डाल कुल में जन्म लेकर गुणों से सम्पन्न बन गये, जिसके कारण देवता भी उनकी सेवा में रहने लग गये। हरिकेशी बल के लिये शास्त्र वर्णन करता है- काले, विकराले, फोक्कणा से थे। वे रूप सम्पन्न न होकर भी शासन की बहुत बड़ी प्रभावना कर गये। सूरदास, कालिदास आदि का आपने नाम सुना होगा। उनके शरीर को नहीं देखा जा रहा है, उनके गुणों को देखा गया। पंजाब के महाराजा रणजीत सिंह के लिये कहा जाता है कि एक आँख वाले होते हुए भी अपनी सत्यता-शीलता जैसे गुणों के कारण वे उच्च आदर्श के प्रतीक बन गये। उनकी महिमा के गुणगान आज भी गाये जाते हैं।

तीसरे भंग में न रूप है न ही गुण है। कालू कसाई का उदाहरण लें। उसके जीवन यापन का माध्यम हिंसाजनक था। जैसा नाम वैसा ही वह काला कलूटा था। उसमें सारे अवगुण थे, परन्तु स्वार्थपूर्ति एवं उदरपूर्ति से परिवार जनों के लिये वही एक मात्र सहारा था, ऐसे व्यक्तियों का नाम दुर्गुणता एवं कुरूपता के कारण सुनाया जा रहा है, भले ही घर वालों को वह अच्छा लगता होगा।

इन भंगों में सबसे निकृष्ट भंग है- चौथा। इसमें व्यक्ति रूप सम्पन्न तो है, पर गुण सम्पन्न नहीं। ऐसे लोग तिन्नाणं-तारयाणं की जगह-डुबाणं, डाबयाणं का काम करते हैं। ये स्वयं डूबते हैं और दूसरों को भी डुबाते हैं। अपने रूप को दिखाकर खुद बिगड़ते हैं और दूसरों को भी बिगाड़ते हैं। इसी चौथे भंग में होलिका का वर्णन किया जा रहा है। अपने रूप को लेकर वेश्यावृत्ति करने वाले भी ऐसे कितने ही लोग हैं, जिन्हें सफेद पोश डाकू कहा जा सकता है। गुण

सम्पंन्नता को छोड़कर बाहरी रूप में भटकना डुबाणं डाबयाणं का मार्ग है इसी रूप से ब्राह्मण कुल में उत्पन्न होने वाली होलिका डुबाने वाली बन गई।

पूर्व की पुण्यशालिता से अगर आपने शरीर मैं सौंदर्य पाया है, लक्ष्मीपति बने हैं, ऋद्धि-सिद्धि मिली है, तो इस सम्पन्नता को आप दासवृत्ति, पापवृत्ति कराने के बजाय कर्म काटने में लगायेंगे तो आपका यह सब पाना सार्थक हो जायेगा। राजुल रूप सम्पन्न भी थी तो गुण सम्पन्न भी थी। रथनेमि का मन विचलित होने पर फटकार स्वरूप सुभाषित वचन सुनाकर सन्मार्ग बता दिया, रथनेमि का अस्थिर मन स्थिर हो गया। रूप के साथ यदि गुण नहीं है तो वह भटकने का कारण बन जाता है।

आज का पर्व, अपनी-अपनी दृष्टि की व्याख्या करता है। रागियों के लिये राग बढ़ाने वाला यह उत्सव यदि महोत्सव है तो विरागियों के लिये साधना करने का पर्व है। विद्वानों के लिये विद्वत् सम्मेलन करने का है तो मूर्खों के लिये गधे पर बैठाकर जूतों की माला पहनाकर गाँव-गाँव में गली-गली में चक्कर लगाने का है। पर्व एक है, पर दृष्टियाँ अनेक हैं। अपनी-अपनी दृष्टि से पर्व की साधना आराधना की जाती है। उदाहरण स्वरूप एक षोडशी कन्या सजधज कर, आभूषणों से सुसज्जित होकर पीहर से ससुराल की ओर जा रही थी। अचानक ही जी घबराया, पेड़ की छाँव में विश्राम करने के लिये बैठी और कुछ ही समय में प्राण पखेरू उड़ गये। इतने में उधर से एक कामी पुरुष का निकलना हुआ उसने सोचा पत्नी तो मेरे भी है, पर इतनी रूप सम्पन्न नहीं। यदि इस जैसी पत्नी होती तो भोग का आनन्द कुछ अलग ही होता। कुछ अन्तराल से शराबी का आना हुआ। उसको देखकर शराबी ने सोचा- शराब तो मैंने भी पी रखी है, पर लगता है इसने कुछ विशेष ही पी ली है। इतने में चोर का उधर से निकलना हुआ और देखा- सोने, चाँदी, आभूषणों सहित षोडशी कन्या को और मन ही मन सोचने लगा ये दोनों (कामी और शराबी) कब जायें और कब ये धन मैं प्राप्त कर लूँ। शाम हुई सियार निकला- हुक-हुक की आवाज करता.... आज तो ताजा मांस है, ये तीनों कब यहाँ से हटें, तो मांस खाने को मिले। सूर्योदय तक चारों ईर्द-गिर्द नजर रखकर डटे रहे। सन्त एक ग्राम से दूसरे ग्राम भिक्षा (गोचरी) के लिये निकले। मार्ग में कन्या को देखा तो चिन्तन चला- जीवन क्षणभंगुर है, पता नहीं किस पल में यह मिट्टी का महल इस कन्या की तरह ढ़ह जायेगा। जा रहे थे आठ की तपस्या

का पारणा करने के विचार से, लेकिन प्रसंग (कन्या का असामयिक निधन) का चिंतन करते-करते सन्त ने 16 की तपस्या के प्रत्याख्यान कर लिये। देखो- ''बन्धुओं! शरीर एक है, पर दृष्टि भिन्न है। शरीर किसी से कुछ नहीं कह रहा। अपनी -अपनी दृष्टि, अपने अलग-अलग विचारों से अवगत करा रही है। इसी तरह पर्व अनेक हैं, उन्हें मनाने वालों की दृष्टि भिन्न-भिन्न है। ऐसे ज्ञानी लोग भी हैं- जो चाहते हैं, निमित्त मिले तो हमें ज्ञान-दर्शन-चारित्र की आराधना का अवसर मिलेगा। इसीलिये पूर्व आचार्यों एवं मुनियों ने फाल्गुनी चौमासी के बाद चातुर्मास निर्णय की बात रखी। पर भाइयों! मैं एक हूँ, क्षेत्र अनेक हैं, पर चातुर्मास तो एक ही स्थान पर करूँगा। आप तो अपने संघ में ज्ञान-दर्शन के मोती प्रकटाओ, राजहंस अपने आप आ जायेगा। इन्हीं मंगल भावों के साथ... ।

चार दिनों का है यह जीवन

श्री मोहन कोठारी 'विनर'

चार दिनों का है यह जीवन, फिर मिट्टी मिल जाना है,
सूर्य उदय होता प्रातः में, शाम पड़े ढल जाना है।

कैसा जीवन है यह अपना, इस पर चिंतन करना है,
सद् राहों पर चल कर बंदे, पुण्य से झोली भरना है।
शुभ कर्मों से मिला यह नरतन, बार बार नहीं पाना है।
चार दिनों का है यह जीवन, फिर मिट्टी मिल जाना है ।।1 ।।

रागद्वेष के कांटे हरगिज, राहों में मत बिखराना,
प्रेम के फूल खिलाकर मन में, जन-जन में तुम छा जाना।
दुःखियों की सेवा करने को, तुमको तत्पर रहना है,
चार दिनों का है यह जीवन, फिर मिट्टी मिल जाना है ।।2 ।।

जन्म मरण से हो छुटकारा, ऐसा सुपथ चुन लेना,
भव से पार लगे यह नैया, शुभ करनी तुम कर लेना।
जिनवाणी को धार हृदय में, स्वयं प्रभु बन जाना है,
चार दिनों का है यह जीवन, फिर मिट्टी मिल जाना है ।।3 ।।

-जनता साड़ी सेन्टर, स्टेशन रोड़, दुर्ग-491001 (छत्तीसगढ़)

प्रवचन

सहयोग का भाव : एक अमूल्य निधि

महास्थविर तपस्वी श्री प्रकाशमुनि जी म.सा

महास्थविर तपस्वी श्री प्रकाशमुनि जी म.सा. पंजाबी के द्वारा मूथा जी के मन्दिर, जोधपुर में दिनांक 17.03.2008 को फरमाए गए प्रवचन का आशुलेखन जिनवाणी के सह-सम्पादक श्री नौरतन जी मेहता द्वारा किया गया है।-**सम्पादक**

हमारा विषय नौ निधियों पर चल रहा है। आज आठवी निधि सुना रहा हूँ। आठवीं निधि है साथियों के साथ में सहानुभूति रखें। जो साथ-साथ रहते हैं उनका सहयोग करें। हम भी किसी के साथ रहते हैं तो कोई हमारे साथ भी रहता है। दोनों का साथ-साथ रहना हो रहा है। साथ हैं तो सुख में भी साथ हैं, दुःख में भी साथ हैं। सुख-दुःख दोनों में जिनके साथ हम रहते हैं, उनके साथ हमारी सहानुभूति रहे, सहयोग रहे, समन्वय रहे। यह भी एक बड़ी निधि है।

मानव अकेला नहीं रह सकता। उसे किसी-न-किसी के साथ रहना होता है। समाज एक आदमी से नहीं, समूह से बनता है। समाज बुद्धिमान पुरुषों का होता है। बुद्धिमान पुरुषों का समूह समाज कहलाता है। बुद्धिहीन का समाज तो पशुओं के समान समज कहा गया है। पशुओं का समूह होता है, पर मनुष्य के समूह में संवेदना, सहानुभूति और सहयोग है। परस्पर सहयोग है तो यह इन्सान का धर्म है। सहानुभूति नहीं, सहयोग नहीं,संवेदना नहीं, समन्वय नहीं तो वह समाज किस काम का? वह तो पशुओं के समूह की तरह है। पशुओं में सहयोग की भावना नहीं होती। एक पशु के सामने कोई चीज डाल दें तो वह खुद ही खाने लगेगा। मनुष्य चार आदमियों को बांटकर खाता है। माँ-बाप बच्चों को संस्कार देते हैं कि तुम्हें अकेले नहीं, बांटकर खाना है। आज भी माता-पिता यह बांत कहते हैं, पर कम कहते हैं। अब कहते हैं सबको बांटने की जरूरत नहीं, अपने-

अपने खा लो।

एक घर में चार भाई रहते थे। उन चारों भाइयों की एक रसोई होती थी। घर में कोई चीज़ बनाई जाती तो घर वाले तो खाते ही खाते, पड़ौस में भी देकर खाई जाती। ऊपर-नीचे, आमने-सामने वालों को भी देने के पश्चात् खाया जाता था। आज उस मोहब्बत में कमी आ गई है। पहले घर के लोगों में ही नहीं, अड़ौस-पड़ौस में भी सहयोग होता था, वे एक दूसरे के सुख-दुःख में काम आते थे।

एक बाप ने अपने बेटे से कहा-मेरे मरने के बाद में तुम एक काम करना। घर के चारों तरफ हाथी दांत की बाड़ लगा देना। लड़के ने हाथी दांत की बाड़ बनाने के लिए हाथी दांत मंगाना शुरु किया, पर हाथी दांत मिलना मुश्किल है फिर मंहगा भी बहुत है। वह पिताजी के मित्र के पास गया। बोला- आप मेरे पिता के मित्र हैं, मेरे पिता समान। पिताजी मुझसे मरते समय हाथी दांत की बाड़ लगाने की बात कह गये। हाथी दांत मिलना मुश्किल है, मिलता भी है तो बहुत मंहगा। पिता के मित्र ने समझाया- "तुम्हारे पिता ने जो काम कहा उसका मतलब है पड़ौसियों से प्रेम बनाकर रखना। पड़ौसी ही वक्त पर काम आते हैं, संकट में रक्षा करते हैं।" पहले आदमी मौहल्लों में रहना पसन्द करता, अब तो मौहल्लों के बजाय बाहर जाकर रहना पसन्द करता है, इसलिए बड़ी-बड़ी हवेलियाँ खाली पड़ी हैं। पड़ौस में एक दूसरा पास-पास रहता तो सुरक्षा थी, पर आज? आज सुरक्षा नहीं, सब अपने में मस्त हैं। शहर के बाहर कॉलोनियों में सब अपने हाल में मस्त हैं, दूसरों का कोई खयाल नहीं।

हम साधुओं का भी एक परिवार होता है। भगवान ने हमें परिवार के साथ रहने का सन्देश दिया। इसलिये अकेले साधु का सम्मान मत करो। अकेले साधु में कमजोरी है। वह चाहे कितना ही विद्वान् है, लेकिन वह प्रशंसा के योग्य नहीं। अकेला कौन रहेगा? अकेला जो रहता है वह जीभ का चटोरा होगा। जो जीभ का चटोरा है वह अकेला रहना चाहेगा। साथ में रहने पर स्वाद पूरा नहीं होता। अकेला रहेगा तो कोई कहने वाला

नहीं होता। एक जीभ के स्वाद ने कितनों का प्रेम खत्म कर दिया। अकेला होगा वह मनमर्जी के घरों से मनमर्जी की चीजें लायेगा, खायेगा। जितनी भायेगी उतनी खायेगा, और बच भी गई तो फेंक भी देगा। गृहस्थ के घर से लाकर फेंकने वाला चोर है। वह गृहस्थ का चोर तो है ही, भगवान् का भी चोर है। आपने हमें खाने के लिए वस्तु दी है, फेंकने के लिए नहीं। साधु लाई हुई चीजें दूसरों को बांट भी नहीं सकता। आपके घर पर खाने की कोई वस्तु ज्यादा बन गई तो आप बांट सकते हैं, पर हम आपके घरों से लाई चीज को न बांट सकते हैं, न फेंक सकते हैं।

स्वाद का लोभी अकेला रहेगा। दूसरा जो अहंकारी है वह अपने अहं को पुष्ट करने के लिए अकेला रहेगा, सबके साथ नहीं रहेगा। साथ में जो रहता है उसको सम्मान मिलता है, अकेले रहने में सम्मान घटेगा। एक अंगीठी है, उसमें कोयले जल रहे हैं, तेज आंच है। एक कोयला सोचे, मैं अकेला रहूँ। वह अहं की पुष्टि के लिए अकेला हो जायेगा, पर वह सबके साथ चमकता था। अकेले वह चमक नहीं रहेगी। अकेले की चमक ज्यादा देर नहीं रहती, सबके साथ बहुत देर तक चमक रहेगी।

तीसरा कारण बताया- जो क्रोधी होगा वह अकेला रहेगा। एक क्रोधी है उसे गुरु भी साथ रखना नहीं चाहेगा क्योंकि वह दूसरों को भी बिगाड़ेगा। जो पान सड़ जाता है पनवाड़ी उसे निकाल बाहर फेंकता है। एक बिगड़ा पानी दूसरे पान को बिगाड़ेगा ऐसे ही एक क्रोधी दूसरों को भी क्रोधी बनायेगा।

सबके साथ सहानुभूति हो, सहयोग की भावना हो यह बड़ी निधि है। यह आपका शरीर है। आपके पांव में कांटा चुभ जाय तो क्या चिंता पांव को ही होगी या पूरे शरीर को? दर्द कहाँ? दर्द पांव में है, लेकिन दुःख पूरे शरीर में है। वह दर्द पांव का नहीं, पूरे शरीर का बन जाता है। दिमाग सोचता है कांटा कैसे निकले? दिमाग ही नहीं, आँखें भी, हाथ भी सब सक्रिय हो जाते हैं। कांटे से कांटा निकलता है। पुराने संत विहार करते थे तो उनके पास कांटों की पोटली रहती थी। हमारे ओघे में कांटों की पोटली

रख दी जाती। जो दर्द निकाले उसे कंधे पर रखते। आज नहीं रखते हैं। एक कांटा निकालने में सारे शरीर की बेचैनी दूर हो जाती है। हम जिनके साथ रह रहे हैं, जिनके साथ हैं उनके कष्ट दूर करें, एक-दूसरे का सहयोग करें सहानुभूति की भावना रखें। आप दूसरों के साथ सहानुभूति रखते हैं तो आप धार्मिकजन हैं, धर्मात्मा हैं। भगवान कहते हैं- स्वाध्याय बाद में कर लेना, सेवा का काम पहले करो।

हमारे पूज्य आचार्य श्री अमरसिंह जी हुए। वे पंजाब सम्प्रदाय में अमर हो गये। वे त्यागी थे, नियम में मजबूत थे। राजस्थान में कुछ चीजें खुली थी, पर पंजाब की परम्परा में प्रतिबन्ध था। पूज्य श्री अमरसिंह जी महाराज के एक शिष्य को कोढ़ हो गया। आचार्य श्री बोले- ''घबराने की जरूरत नहीं, तुम चिंता मत करो। जिसे कोढ़ हो जाता है डॉक्टर-वैद्य कहते हैं कोढ़ी से अलग रहो, उसके हाथ मत लगाओ, यह छूत की बीमारी है। और-और संतों ने तो नहीं, पर अमरसिंह जी महाराज ने कहा- मैं इसके साथ आहार करूँगा। आचार्य श्री के कारण शिष्य को कितना बड़ा सहारा मिल गया? कोढ़ जैसा रोग होने पर संत को कितनी सहानुभूति मिली। आज तो बीमार साधु को छोड़ दिया जाता है या फिर जो बीमार है उससे काम कराया जाता है तो वह साधु कैसे खुश रहेगा?

हमारे दादा गुरुदेव व्याख्यान वाचस्पति श्री मदनलाल जी महाराज के सबसे बड़े शिष्य थे जग्गुमल जी महाराज। उन्होंने 51 साल की उम्र में दीक्षा ली। दीक्षा लेने लगे तो दिल्ली के गोकलचन्द जी नाहर बोले- ''वाचस्पति जी महाराज! बूढ़े को दीक्षा दे रहे हो तो इनको संभालेगा कौन? पहले श्रावक भी चिन्तनशील होते वे अपनी बात कहते जरूर। आज तो जी हजूरी करने वाले कई मिल जायेंगे, पर संघहित में बात रखने वाले विरले ही मिलेंगे।'' गुरुदेव ने कहा- ''श्रावक जी! हम संभालेंगे। आप चिंता नहीं करें। हमारे संघ में बीमार की सेवा का खयाल रखा जाता है। शिष्य, शिष्य है तो साथी भी है।'' हमारे हाथ की एक अंगुली किसी दरवाजे के बीच आ जाय तो दर्द सारा हाथ महसूस करता है। इसी तरह

एक घर में रहने वाले जितने सदस्य हैं वे सब एक-दूसरे के सहयोगी बनकर रहेंगे तो वह घर खुशियों से भरा रहेगा।

संवेदना मनुष्य में होती है, पशु में नहीं। आप जानते हैं-144 की धारा कहाँ लगाई जाती है? जहां संवेदनशीलता ज्यादा होती है वहाँ धारा 144 लगाई जाती है। जहाँ लड़ाई-झगड़े का अनुमान है वहाँ धारा 144 लगाई जाती हैं। संवेदनशीलता नहीं तो मानव पशु समान है।

मुल्ला दुःखी है रहमान नहीं मिलता,
पंडित दुःखी है भगवान् नहीं मिलता।
मैं दुःखी इन्सान की बस्ती में,
ढूँढे से भी इन्सान नहीं मिलता।।

इन्सान कौनसा? जिसमें सहानुभूति हो। आप कृष्ण महाराज को देखो। कृष्ण महाराज भगवान् अरिष्टनेमि के दर्शन करने जा रहे थे। रास्ते में एक बूढ़ा आदमी एक-एक ईंट उठाकर अन्दर ले जा रहा था। श्री कृष्ण ने ईंटों को देखा और ईंटों के ढ़ेर में से एक ईंट उठाई और देखते ही देखते साथ चलने वालों ने ईंटों के ढ़ेर को अन्दर पहुँचा दिया। श्री कृष्ण ने सोचा- "मैं राजा हूँ, प्रजा का सहयोग न करूँ तो कैसा राजा?" वे अपने आदमियों को कहकर ईंटे अन्दर भिजवा सकते थे, पर उन्होंने स्वयं सहायता की। श्री कृष्ण की प्रजा के प्रति सहानुभूति थी। आज के राजा कहते हैं लूट सको उतना लूट लो। आज के एम.एल.ए., एम.पी. राजा को मात करते हैं। वे सब प्रजा को लूटते हैं। बस एक दिन जब वोट लेने होते हैं तो तुम्हारे सामने हाथ जोड़ते हैं। आप ज़िसे भी राजा बनाओ, सोच-समझकर वोट दिया करो।

आचार्य श्री अमरसिंह जी महाराज ने उस शिष्य को सहयोग दिया तो शिष्य के पुण्योदय से और गुरु के सहयोग से कोढ़ दूर हो गया। अतः सहानुभूति रखने की कोशिश करो। जोधपुर में आकर हमें तो प्रसन्नता है, आपके चेहरों से भी हमें प्रसन्नता टपकती दिखाई देती है। आपका हमारा यह सहयोग जीवन पर्यन्त बना रहे।

संघ चिन्तन

संघ-संगठन और हमारा उत्तरदायित्व

डॉ. मंजुला बम्ब

संघ का अर्थ है एक से अधिक घटकों का एक साथ समूह रूप में रहना। संघ शब्द ही संगठन का द्योतक है। यदि 'सं' से संग तथा 'घ' से घटक प्ररूपित करें तो घटकों का संग अर्थात् घटकों का साथ में रहना संघ है। साथ-साथ रहना कितना जरूरी है यह हम सब भली भाँति समझते हैं। अतः संघ का स्थान अपने आप में महत्त्वपूर्ण है।

शास्त्र में संघ का स्थान

नन्दीसूत्र के आचार्य देववाचक जी ने संघ को सर्वोपरि रखकर अग्रांकित आठ उपमाओं से श्रीसंघ की स्तुति की है—नगर, रथ, चक्र, पद्म, चन्द्र, सूर्य, समुद्र तथा मेरु। इन सबमें जो विशिष्ट गुण समाहित हैं तदनुरूप श्रीसंघ में भी अलौकिक दिव्य गुण हैं, इसलिए यह संघ अनन्तानन्त गुणों का भंडार है। ऐसे विशिष्ट गुणों से युक्त संघ को प्रतिदिन स्मरण और वन्दन करना चाहिए।

चक्खुदयाणं, मग्गदयाणं, सरणदयाणं संघ है,
जीवदयाणं, बोहिदयाणं, धम्मदयाणं संघ है,
खुद तीर्थंकर महिमा गाते, संघ है तारणहारा,
वो पावन संघ हमारा।।

संघ की गुणवत्ता

किसी भी संघ का संख्या में बड़ा-छोटा होना श्रेष्ठता का मापदण्ड नहीं होता। श्रेष्ठ वह होता है जिसके पास अनुशासन का बल, सिद्धान्त का बल, मनोबल, अध्यात्म का बल, त्याग का बल तथा समाधान का बल होता है। ऐसा संघ शक्तिशाली होता है। हमेशा चिन्तन करते रहना चाहिए कि धर्म-संघ अधिक शक्तिशाली किस प्रकार बने ? हम सभी संघ-सदस्य किस प्रकार संघ-सहयोग करें जिससे संघ श्रेष्ठ बने।

आचार से हो संघ की पहचान

आगम में दो शब्द आते हैं अनुस्रोत और प्रतिस्रोत। अनुस्रोत का आशय है कि जिस दिशा में प्रवाह हो उसी ओर गतिशील होना। जबकि प्रतिस्रोत

का आशय होता है प्रवाह के विपरीत दिशा में गतिशील होना। अनुस्रोत का अनुगमन-अनुसरण करने में कोई खास कठिनाई नहीं होती है, किन्तु प्रतिस्रोत में गति करने में कठिनाई ही नहीं, अपितु प्रबल पुरुषार्थ की आवश्यकता पड़ती है।

आज आध्यात्मिक क्षेत्र में अनुस्रोत का प्रभाव चल रहा है। द्रव्य, क्षेत्र, काल एवं भाव का बहाना लेकर उपास्य वर्ग भगवान द्वारा प्ररूपित मार्ग से विस्मृत होकर अपनी सुविधानुसार मार्ग परिवर्तन कर रहा है। परिणामस्वरूप नित्य नई एवं आगम विपरीत प्रवृत्तियों का प्रवेश श्रमण वर्ग में हो रहा है। उपासक वर्ग भी इन आगम विपरीत प्रवृत्तियों का समर्थन कर जैन संस्कृति के अवमूल्यन में सहयोगी बन रहा है। जैन संस्कृति का अवमूल्यन नहीं रुका तो अनुस्रोत में बहने के दूरगामी परिणाम बीभत्स होंगे। वर्तमान में इस बात की आवश्यकता है कि आगम विपरीत प्रवृत्तियों में न बहकर उनका प्रतिकार करें, जिनशासन की रक्षा में सहयोगी बनें। हमारे प्रयास से यदि जिनशासन का थोड़ा बहुत भी अवमूल्यन रुकता है तो यह हमारे लिए बहुत बड़ी शासनसेवा होगी।

समाज को संस्कारित एवं सुव्यवस्थित रखने के लिए प्रत्येक मनुष्य को चाहिए कि वह उन आचार-विचारों का, नियमों एवं विधि-विधानों का सम्मान करे, उन्हें आदर की दृष्टि से देखे और उनके अनुसार अपना जीवन व्यवहार बनाए।

जहाँ ज्ञान क्रिया और दृढ़ श्रद्धा की, बहती निर्मल धारा,
वो पावन संघ हमारा
जहाँ त्यागी गुरुओं की प्रज्ञा से, मिलता है उजियारा,
वो पावन संघ हमारा।

जिस व्यक्ति में संघ के प्रति प्रेम होता है, समर्पण होता है, वह कहीं भी रहेगा अपने आचार विचार नियमों का निर्भयता से पालन करेगा और सुसंस्कृत जीवन से संघ-समाज का समुत्थान करेगा। स्वामी विवेकानन्द जी जैसे आचारवान् व्यक्ति की बात करें, वे अमरीका में धर्मप्रचार हेतु गये। वहाँ के लोगों ने उनकी वेशभूषा की मजाक की। हँसी के उपरान्त स्वामी जी ने कहा-"भाई! तुम्हारी और मेरी संस्कृति में अन्तर है। तुम्हारी संस्कृति का निर्माण तुम्हारे दर्जी करते हैं और मेरे देश में संस्कृति का निर्माण अन्तरंग चरित्र से होता है। उसी संस्कृति के अनुरूप मेरा वेष है, इसमें मजाक कैसा?" इस तरह आचारवान्

व्यक्तित्व के धनी लोगों से ही संघ-समाज अपनी विशिष्ट पहचान बना सकता है और संघ-समाज में शांति, संगठन एवं सुरक्षा बढ़ती है।

संगठन में ही शांति एवं सुरक्षा

भगवान ने चतुर्विध संघ की स्थापना क्यों की? संघ के चारों घटक (श्राविका-श्रावक-साधु-साध्वी) एक-दूसरे के पारस्परिक सहयोग से साधना-आराधना कर स्वयं का तथा अपने सहयोगी का आत्म विकास करें। आत्म-विकास में सहयोग तभी सम्भव है जब चारों घटक संघशासन के प्रति पूर्ण निष्ठावान एवं समर्पित बनें। जिन आज्ञा, गुरु आज्ञा के प्रति सच्ची निष्ठा और समर्पणता से ही शुद्ध संगठन का आधार बनता है। संगठन की शक्ति तो सर्वविदित है। अलग-थलग सूत कोई सामर्थ्य नहीं रखता, पर जब वे संगठित होकर रस्सी बनते हैं तो दुर्दान्त हाथी को भी बाँध लेते हैं। हाथी की शक्ति भी उनके सामने घुटने टेक देती है।

हम सभी चतुर्विध संघ के घटक हैं, संघ के प्रति हमारे अनेक दायित्व हैं। संगठन की कमी हमें दायित्वों के प्रति लापरवाह बना देती है। पारस्परिक ईर्ष्या एवं जलन-भावना से हम टूट जाते हैं और संघ-समाज में विकृतियाँ पनप जाती हैं। शक्ति, सुरक्षा का नितान्त अभाव हो जाता है।

धर्माचरण से संगठन-शक्ति विकसाएं

सर्वप्रथम हमें जिनशासन (मत) के वास्तविक स्वरूप को समझना है, समझकर जीवन में उतारना है। जैसे गाड़ी में ब्रेक आवश्यक होता है उसी प्रकार जीवन में धर्म आवश्यक है। बिना किनारे बाँधी हुई नदी बाढ़ के रूप में तबाही कर देती है उसी नदी को बाँध लिया जाय तो वह जमीन को शस्य-श्यामला बना देती है। आज हमारे पास भी श्रम एवं शक्ति की कमी नहीं है, पर धर्म की जानकारी एवं आचरण के अभाव के कारण वह शक्ति संगठित नहीं हो पाती है, अतः धर्माचरण को अपनाकर संगठन-शक्ति विकसाएं। संघ-संगठन में ही शक्ति एवं सुरक्षा निहित है।

हमें संगठित होकर मात्र आत्म-जागरण के लक्ष्य को लेकर जिन आज्ञा, गुरु आज्ञा से कार्य करना चाहिए। जिन आज्ञा, गुरु आज्ञा सुरक्षित रही तो हम सुरक्षित हैं। भौतिक प्रभाव से विकृतियाँ विस्तृत प्रवाह का रूप ले चुकी हैं। इस प्रवाह को रोकने की क्षमता मात्र संगठन में ही है। अपने अहं का त्याग करके

ईंट से ईंट जुड़ने के सदृश संगठित होकर हम सब अधिक जिम्मेदारी से कार्य करें।

संघ विकास ही लक्ष्य हमारा, इसे न्यौछावर तन-मन सारा।
सेवा, सहयोग और समर्पण से, पल्लवित होगा संघ हमारा।।

आओ सब मिलकर दृढ़ संकल्प करें–

मैं जैन हूँ।
मुझे जैन होने पर गर्व है।
देवाधिदेव अरिहंत भगवान मेरे देव हैं।
सुसाधु मेरे गुरु हैं।
जहाँ दया है, वहाँ धर्म है।
मैं अपने आपको देव-गुरु-धर्म
एवं संघ के प्रति समर्पित करता/करती हूँ।

संघ के उत्थान में संघ-सदस्यों का समन्वय तथा उत्तरदायित्व

संघ के कार्यक्रमों में सामायिक, स्वाध्याय, दया-संवर, उपवास, पौषध, पर्युषण पर्व की आराधना, महापुरुषों के विशिष्ट पर्वों पर ज्ञान, ध्यान, त्याग, तप आराधनाएँ, होनहार युवक-युवतियों को शैक्षणिक क्षेत्र में आगे बढ़ाने का प्रयास, आध्यात्मिक एवं नैतिक शिक्षण शिविर, संघ संपत्तियों का रक्षण व विस्तार, प्रवास कार्यक्रम के माध्यम से जनसंपर्क एवं समस्या समाधान, वर्ष में एक बार गुरुदर्शन-वंदन के अंतर्गत व्रत-नियम अंगीकार करने की भावना, श्रमणोचित औषधोपचार में सेवा देना, पर्व तिथियों पर दयाव्रत और संवर साधना करना आदि अनेक प्रवृत्तियाँ समाहित हैं। संघ सदस्यों के समन्वयपूर्वक उपर्युक्त प्रवृत्तियों-गतिविधियों से संघ अपनी एक विशिष्ट पहचान बना लेता है। प्राचीन ग्रंथों का संरक्षण भी संघ का विशेष उत्तरदायित्व है।

जैनाचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा. द्वारा रचित जैन धर्म का मौलिक इतिहास भाग-2 के सम्पादकीय लेख में उल्लेख है कि आज से लगभग 700 वर्ष पूर्व (विक्रम संवत् 1334 में) आचार्य प्रभाचन्द्र हुए। प्रभावक चरित्र में 23 आचार्यों एवं महाकवि धनपाल के जीवन की प्रमुख घटनाओं का विवरण दिया है। आचार्य प्रभाचन्द्र के समय में प्राचीन ग्रंथ निश्चित रूप से कुछ अधिक मात्रा में उपलब्ध रहे होंगे। इतिहास साक्षी है कि आचार्य प्रभाचन्द के पश्चात्वर्ती

काल में आततायी विदेशी आक्रान्ताओं ने भारतीय संस्कृति की अमूल्य निधि के रूप में सुरक्षित ग्रंथागारों, पुस्तक भंडारों एवं स्वर्णपत्र, ताम्रपत्र, प्रस्तर भित्ति आदि पर शताब्दियों पूर्व उत्कीर्ण किये गये अभिलेखों को नष्ट-निश्शेष करने में किसी भी प्रकार की कोर-कसर नहीं रखी। एक आक्रान्ता ने तो अपनी सैनिक-पाकशाला में शताब्दियों के अथक श्रम से लिखे गये भारतीय संस्कृति के प्राचीन ग्रंथों को ईंधन की जगह जलाने के काम में लेकर छह महीनों तक विशाल सेना के लिए भोजन बनवाया और स्नानार्थ पानी गरम करवाया। इन ग्रंथागारों, पुस्तक भंडारों, प्राचीन पत्रों की सार-संभाल एवं सुरक्षा का कार्य भी संघ-सदस्य की नैतिक जिम्मेदारी तथा उत्तरदायित्व है।

अपना उत्तरदायित्व समझें

बहुत से व्यक्तियों में कार्य टालने की आदत होती है। वे सोचते हैं एक मैं नहीं करता हूँ तो क्या है और तो सब कर ही रहे हैं। लेकिन ऐसा सभी सोचने लग जायें तो कार्य कभी पूर्ण नहीं होगा। जैसे एक पिता के चार बेटे हैं। एक बेटा सोच ले कि मैं यदि पिताजी की सेवा नहीं करता हूँ तो क्या है और बाकी तीन कर लेंगे। शेष तीनों बेटे भी इस प्रकार सोचकर अपने उत्तरदायित्व को एक-दूसरे पर डाल दें तो हो गई बेचारे पिताजी की सेवा। यदि हम संघ-सेवा में अपना दायित्व समझते हैं तो संघ-सेवा का कार्य नियमित करना चाहिए। कोई भी व्यक्ति किसी दूसरे का स्थान पूरा नहीं कर सकता। छोटे के स्थान पर छोटा और बड़े के स्थान पर बड़ा, अपनी-अपनी जगह सबकी उपयोगिता है। आवश्यकता भी है। जहाँ पर सुई का काम हो वहाँ पर चाकू से काम नहीं चल सकता और जहाँ चाकू का काम है वहाँ सुई से भी काम नहीं चल सकता। संघ-समाज का प्रत्येक घटक यह सोचे कि यह मेरा कर्तव्य है कि संघ-सेवा करके संरक्षण करता हुआ अपने उत्तरदायित्व को निभाऊँ।

संघ-संगठन प्रबन्धन कैसे करें

इस प्रतिस्पर्द्धी युग में आगे बढ़ने के लिए प्रबंधन कला में पारंगत होना नितांत आवश्यक है, पर अन्य चीजों के प्रबंधन के साथ हमें अपने संघ-संगठन का प्रबंधन भी करना चाहिए। आइये! हम विचार करते हैं कि किन-किन मुख्य बिंदुओं से हम हमारे संघ के संगठन का प्रबंधन कर सकते हैं और ये मुख्य बिन्दु हमें शान्ति, सुख, शक्ति, प्रेम, एकता, परस्पर सहयोग और आनन्द किस प्रकार

प्रदान करते हैं। इसके लिए निम्नांकित उपायों का पालन किया जा सकता है–

1. अव्यवस्था के कारण ढूँढे– सर्वप्रथम परिस्थिति का निरीक्षण कर अव्यवस्था का कारण ढूँढना चाहिए। कारण जानकर ही निर्णय लिया जा सकता है कि किस तरह के सुधार की आवश्यकता है? और उसे कैसे कार्य रूप में परिणत किया जाय? मात्र तात्कालिक स्थिति को न देखते हुए उससे जुड़े हुए भूतकालीन तथ्यों पर और उससे भविष्य में आने वाले परिणामों पर भी ध्यान देकर उपाय ढूँढना चाहिए।

2. सकारात्मकता अपनायें– यह सबसे महत्त्वपूर्ण बिन्दु है। प्रत्येक संघ-सदस्य की सोच किसी भी प्रसंग पर-कैसे भी वातावरण में सकारात्मक होनी चाहिए, चाहे प्रसंग सुखद हो, दुःखद हो या कलहपूर्ण हो। मन को खिन्न करने वाले और संघ-संगठन के वातावरण में अशांति पैदा करने वाले प्रसंगों, घटनाओं से सदैव दूर रहने की कोशिश करनी चाहिए।

3. नम्र बनें– संघ को चलाने के लिए तथा उसके ऊबड़-खाबड़ रास्तों पर चलने के लिए प्रत्येक संघ-घटक की मनोवृत्ति लचकदार बनना जरूरी है। व्यक्ति में इतनी लचक (नम्रता) होनी चाहिए कि आवश्यकतानुसार परस्पर विचारों को सुने व समझे, उनकी भावनाओं की कद्र करे और उनकी प्रतिष्ठा, प्रतिभा और क्षमता का सम्मान दे। परिस्थिति के अनुसार खुद को छोटे-बड़े, अपने-पराये से परे करना और उचित तरीके से अहंकार का त्याग ही व्यक्ति को नम्र बनाता है और यही नम्रता व्यक्तित्व का विकास करती है।

4. अतिवादी न बनें– अति हमेशा बुरी होती है। अतिवादी कभी संतुलित विचारों का नहीं होता और जब विचार ही संतुलित न हों तो व्यवहार में असंतुलन आना स्वाभाविक है। अतिवादी जिस चीज के लिए अतिवाद करता है, वह तो मिल जाती है, पर इसके लिए जिन महत्त्वपूर्ण पक्षों को अनदेखा किया जाता है, वे साथ छोड़ जाते हैं। अतः बाद में पछताना पड़ता है। इसलिए आरम्भ से ही अतिवाद को पास में न फटकने दिया जाय।

5. गुणग्राही बनें– लोग प्रायः दूसरों के गुण देखकर ईर्ष्या करते हैं जिसके कारण वैमनस्य, दुश्मनी, तनाव आदि कुपरिणाम सामने आने लगते हैं। यदि उस गुण को ग्रहण कर लिया जाय तो हमारे व्यक्तित्व की शोभा बढेगी। गुणग्राहकता को अपनाने से आत्मविश्वास स्वतः ही बढ़ जाता है।

6. आशावादी बनें– निराशा, उदासी और आलस्य को छोड़ उत्साह से, नई उमंग के साथ प्रसन्नतापूर्वक प्रबल पुरुषार्थ करते रहना चाहिए। साधना के अति विकट पथ पर विचरण करने वाला वही साधक अपने चरम लक्ष्य को प्राप्त करने में सफल होता है, जो पूर्ण रूपेण स्वार्थ भावना को विस्मृत कर देता है। साधक को एक क्षण के लिए भी यह नहीं भूलना चाहिए कि आत्मानन्द की अवाप्ति ही उसका एकमात्र ध्येय है। आत्मानंद की अनुभूति के समक्ष अष्टसिद्धि, नवनिधि तुल्य उच्च से उच्च कोटि के वैभव का न कभी मूल्य रहा है और न होना ही चाहिए। समस्त भौतिक संपदाएँ आत्मानंद की तुलना में नगण्य, तुच्छ और नश्वर हैं।

उपसंहार

वर्तमान में भौतिक परिग्रह तो बढ़ रहा है, किन्तु आत्मिक सम्पदा का निरन्तर क्षय हो रहा है। आज मीलों का सफर हम मिनटों में पार कर सकते हैं, चाँद पर पहुँचने के लिए प्रयास कर सकते हैं, परन्तु अपने निकट बैठे साथी के हृदय तक नहीं पहुँच पाते। इस विषम स्थिति से उबरने के लिए, मानवीय जीवन को पवित्र एवं मंगलमय बनाने के लिए शुभ संस्कारों का बीज डालना होगा। उसे पल्लवित करना होगा। प्रस्फुटित होने का अवसर देना होगा। उसका स्वागत करना होगा। तब संघ का नव-निर्माण और सर्वांगीण उत्थान सहज ही होने लग जाएगा।

जैसे गुलाब का महत्त्व डाली पर नुकीले काँटों से नहीं है, गुलाब का महत्त्व मोहक एवं महकते फूलों से है, उसी प्रकार मानवीय जीवन का महत्त्व मन रूपी डाली पर खिलते हुए दया, करुणा, समता, क्षमा, सत्य, विनय, विचार और विवेक के सुरभित फूलों से है। इन्हीं संस्कार रूपी फूलों की सौरभ से परिवार, समाज और देश का वातावरण महक उठता है। अतः इस डाली पर काम, क्रोध, मद, वासना, अहंकार आदि के काँटे नहीं निकल आएँ, इसके लिए सतत सावधानी एवं जागरूकता की आवश्यकता है। अपनी कथनी, करनी के अंतर को मिटाते हुए धर्म के समग्र एवं व्यापक रूप को जीवन में उतारना होगा, संघ के प्रति उत्तरदायित्व को समझना होगा। तभी हम सच्चे श्रावक-श्राविका कहलाने के अधिकारी होंगे और तब संघ सुसंस्कारों की महक से महक उठेगा।

–अध्यक्ष, अ.भा. श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल,
3-हेम-मंजुल, रामसिंह रोड, होटल मेरू पैलेस के पास, जयपुर (राज.)

Research Paper

World's Problems and Jaina View-Point*

Prof. Sagarmal Jain

We all are human beings and as human beings the problems, humanity is facing today, are our own. As a matter of fact, we ourselves are responsible for their creation and it is we who have to bear their consequences also. Therefore we, the men of religion, cannot escape from our responsibility. It is our earnest duty to ponder over their roots and causes, to suggest their solutions and to make honest efforts for their eradication.

Problem of Mental Tension and its Solution:

The growth of scientific knowledge and outlook has destroyed our superstitions and false dogmas. But unfortunately it has shaken our faith in spiritual and human values also. Today, we have more knowledge and faith in the atom and atomic power than the values needed for meaningful and peaceful life. We rely more on atomic weapons as our true rescuer than on our fellow beings. It is also true that the advancement in science and technology has supplied us amenities for a pleasant living. Now a days the life on earth is so luxurious and pleasant as it was never before, yet because of the selfish and materialistic outlook, nobody is happy and satisfied. This advancement in all walks of life and knowledge could not sublimate our animal and selfish nature. The animal instinct lying within us is still forceful and is dominating our individual and social behavior. What unfortunately happened is that the intoxication of ambition and success made us more greedy and egoistic. Our ambition and desires have no limits. They

***This Paper was presented in National Seminar on 'Relevance of 'Jaina way of life' at India International,Delhi on 6th-7th Feb. 2009.**

always remain unfulfilled and these unfulfilled desires create frustration. Frustration and resentments give birth to mental tensions. These days, our life is full of excitements, emotional disorders and mental tensions. The people and nations, materially more affluent having all the amenities of life, are more in the grip of tensions. Medical as well as psychological reports of advanced nations confirm this fact. This shows that the cause of our tensions is not scarcity of the objects of necessities, but the endless desires and the lust for worldly enjoyment. Among the most burning problems the world is facing these days, the problem of mental tension is prime. We are living in tension all the time and are deprived of, even a pleasant sound sleep. The single and most specific feature by which our age may be characterized is that of tensions.

As a matter of fact all the problems which we are facing today are generated by us and therefore, their consequences are also to be borne by us.

The main object of Jainism is to emancipate man from his sufferings i.e. mental tensions and thus to attain equanimity or tranquility. First of all, we must know the cause of these mental tensions. For Jainism the basic human sufferings are not physical, but mental. These mental sufferings or tensions are due to our attachment towards worldly objects. It is the attachment, which is fully responsible for them. The famous Jaina text Uttaradhyayana-sutra mentions: "The root of all sufferings physical as well as mental of every body including gods, is attachment, which is the root cause of mental tension.[1] Only a detached attitude towards the objects of worldly enjoyment can free mankind from mental tension. According to Lord Mahavira, to remain attached to sensuous objects is to remain in the whirl, says he:" Misery is gone in the case of a man who has no delusion, while delusion is gone, in the case of a man who has no desire; desire is gone in the case of a man

who has no greed while greed is gone in the case of a man who has no attachment."[2] The efforts made to satisfy the human desires through material objects can be likened to the chopping off of the branches while watering the roots. He further remarks that uncountable mountains of gold and silver like Kailasa can not satisfy the desires of human beings because desires are endless like sky[3]. Thus the lust for and the attachment towards the objects of worldly pleasure is the sole cause of human tensions.

If mankind is to be freed from mental tensions, it is necessary to grow a detached outlook in life. Jainism believes that the lesser the attachment, the greater will be the mental peace. It is only when attachment vanishes, the human mind becomes free from mental tensions and emotional disorders and attains equanimity which is the ultimate goal of all our religious practices and pursuits[4].

The problem of Survival of Human Race and Disarmament:

The second important problem, the world is facing today is the problem of the survival of human race itself. Due to the tremendous advancement in war technology and nuclear weapons, the whole human race is standing on the verge of annihilation. Now it is not the question of survival of any one religion, culture or nation, but of the whole humanity. Today, we have guided missiles but unfortunately unguided men. The madness of one nation or even an individual may lead to the destrucion of whole humanity. Because of the advancement in scientific knowledge and out look of our faculty of faith has been destroyed. When mutual faith in higher values of co-operation and co-existence is destroyed, doubts take place. Doubts cause fear, fear produces the sense of insecurity, which results in accumulation of weapons. This mad race for accumulation of weapons is to lead to the total annihilation of human race from this planet.

Thus, the problem of survival of mankind is related

to the question of disarmament. To meet this aim first of all we will have to develop mutual faith or trust and thus remove the sense of fear and insecurity, which is the sole cause of armament-face, and then to check the mad race for weapons. Let us think what means have been suggested by the Jain as to solve the problem of human survival and to check the mad race for weapons. For Jainas, it is the sense of insecurity which causes fear and vice a versa. Insecurity results in the accumulation of weapons. So it is our prime duty to develop the sense of security among fellow beings. In Sutrakrtanga, it is clearly mentioned that there is nothing higher than the sense of security, which a human being can give to others[5]. The virtue of fearlessness is supreme. It is two-fold (1) one should not fear from others and (2) one should not cause fear to others. A real Jaina saint is one who is free from fear and enmity[6]. When the fear vanishes and enmity dissolves, there is no need for armaments. Thus the sense of security and accumulation of armaments and weapons are related to each other. Though arms and weapons are considered as means of security, yet these, instead of giving security, generate fear and a sense of insecurity in the opposite party and hence a mad race for accumulation of superior weapons starts. Lord Mahavira had seen this truth centuries before that there is no end to this mad race for weapons. In Acaranga (4th cent B.C.) he proclaimed"atthi satthampareṇa param natthi asatthaṁ-pareṇa-paraṁ" i.e. there are weapons superior to each other, but nothing is superior to asastra i.e. disarmament or non-violence.[7] It is the selfish and aggressive outlook of an individual or a society that gives birth to war and violence. They are the expression and outcome of our sick mentality. It is through firm faith in mutual credibility and non-violence that humanity can get rid of this mad race for nuclear weapons and thus can solve the problem of its survival.

The Problem of War and Violence:

At the root of all types of wars and violence there lies,

the feeling of discontentment as well as the will for power and possession. According to Sutraktaṅga, the root of violence is attachment or will for possession.[8] A book namely " Tension that causes war" tells us that economic inequalities, insecurities and frustrations create group conflicts. It is true that in the old days the cause of war was only will for power and possession, whether it was the possession of women or land or money. But now-a-days economic inequality, over-population, sense of insecurity and unequal treatment on the basis of caste, creed and colour may be added to the causes of war. Jaina thinkers have all the time, condemned war and violence. In Uttarādhyayana, it is said " If you want to fight, fight against your passions. It is much better to fight with one's own passionate self than to fight with others. If some one is to be conquered, it is no other than your own self. One who has got victory over one's own self is greater then the one who conquers thousand and thousand of warriors[9].

Though Jainas aim at complete eradication of war and violence from the earth, it is not possible as long as we are attached to and have possession for any thing-living or non-living, small or great. There are persons and nations who believe in the dictum 'might is right'. Though aggressive and unjust, war and violence is not acceptable to Jainas, they agree to the point that all those who are attached to physical world and have a social obligation to protect others life and property are unable to dispense with defensive war and violence. Jainas accept that perfect nonviolence is possible only on spiritual plane by a spiritual being who is completely free from attachment and aversion and has full faith in the immortality of soul and thus remains undisturbed by the fear of death and sense of insecurity. The problem of war and violence is mainly concerned with worldly beings. They cannot dispense with defensive and occupational violence. But what is expected of them is to minimize the violence at

its lowest. Ignorant and innocent persons should not be killed in wars at any cost. Jaina thinkers have suggested various methods and means for non-violent wars and for reducing violence even in just and defensive wars. They suggested two measures. First the war should be fought without weapons and in the refereeship of some one. The war fought between Bharat and Bahubali is an example of such a non-violent war. In our times Gandhiji also planned a non-violent method of opposition and applied it successfully. But it is not possible for all to oppose non-violently. Only a man, who is detached even to his body and has heart free from malice can protect his right non-violently. In addition to this, such efforts can bear fruits only when raised against one who has human heart. Its success becomes dubitable when it has to deal with some one, who has no faith in human values and wants to serve his selfish motives. Jainism permits only a householder and not a monk to protect his rights through violent means in exceptional cases. But the fact remains that violence for jainas is an evil and it cannot be justified as a virtue in any case.[10]

Problem of Disintegration of Human Society:

The disintegration of human race is also one of the basic problems, humanity is facing today. Really, the human race is one and it is we who have erected the barriers of caste, creed, colour, nationalities etc. and thus disintegrated the human race. We must be aware of the fact that our unity is natural while these divisions are artificial and man-made. Due to these artificial man made divisions, we all are standing in opposition to one another. Instead of establishing harmony and mutual love, we are spreading hatred and hostility in the name of these man-made artificial divisions of caste, creed and colour. The pity is that we have become thirsty of the blood of our own fellow beings. It is a well known fact that countless wars have been fought on account of these man-made artificial divisions. Not only this, we are

claiming the superiority of our own caste, creed and culture over others and thus throwing one class against the other. Now, not only in India but all over the world class-conflicts are becoming furious day by day and thus disturbing the peace and harmony of human society. Jainism, from its inception, accepts the oneness of human race and oppose these man made divisions of caste and creed. Lord Mahavira declared that human race is one.[11] He further says that there is nothing like inferiority and superiority among them. All men are equal in their potentiality. None is superior and inferior as such. It is not the class but the purification of self or a good conduct that makes one superior[12]. It is only through the concept of equality and unity of mankind, which Jainism preached from the very beginning, that we can eradicate the problem of disintergration and class-conflict. It is mutual faith and cooperation which can help us in this regard. Jaina acaryas hold that it is not the mutual conflict but mutual co-operation, which is the law of living. In his work Tattvartha surta, Umasvati Maintains that mutual cooperation is the essential nature of human being[13]. It is only through mutual faith, co-operation and unity that we can pave the way to prosperity and peace of mankind. Jainas believe in the unity of mankind, but unity, for them doesn't mean absolute unity. By unity they mean an organic-whole, in which every organ has its individual existence but works for a common goal. i.e. human good. For them unity means, 'Unity in diversity'. They maintain that every race, every religion and every culture has full right to exist, with all its peculiarities, but at the same time, it is its pious duty to work for the welfare of the whole humanity and be prepared to sacrifice its own interest in the larger interest of humanity. In the Jaina text Sthānāṅgasūtra we have the mention of Grāmadharma Nagaradharma, Rastradharma etc.[14] referring to one's duty towards one's village, city and nation that has to be fulfilled. **(Continue)**

References:

1. Uttarādhyayana, Edited by Sadhvi Chandanaji, Virayatan Prakashan, Agara, 1972,32/29.
2. Ibid., 32/8
3. Ibid., 9 m.
4. Acārāṅga, (Aṅgasuttani) Editor-Muni Nathmal, Jaina Visva Bharati, Ladnun, V.S. 2031, 1/8/4.
5. Sutrakṛtāṅga, (Part I-II) Editor - Madhukar Muni, Agam Prakashan Samiti, Beawar 1982, 1/6/23.
6. Uttarādhyayana, 6/6
7. Acārāṅga, 1/3/4.
8. Sutrakṛtāṅga, 1 /1/1/1.
9. Uttarādhyayana, 9/34.
10. Jain Journal, Vol. 22, July 1987, No. 1, pp. 16-17
11. ekkā Manussa Jai - Acarahga Niryukti, Editor Shri Vijayajine-surishwar, Shri Harsa Puspamrita Jaina Granthamala, Lakhabavala, (Saurashtra), Gatha, 19. Compiled by Yuvacharya Maha Prajna, Published by Jaina Visva Bharati, Ladnun.
12. Acārāṅg, 1/2/3/75.
13. Tattvārthasūtra, Editor - Pt. Sukhlal Sanghavi, P.V. Research Institute, Varanasi - 1976. 5/21
14. Sthānāṅgasūtra, Editor Madhukar Muni, APS, Beawar 1981, 10/35

संस्कार

मनुष्य के जीवन में किशोरावस्था ही वह उम्र होती है जब वह पूरे जीवन के लिए संस्कारों को ग्रहण करने की सर्वश्रेष्ठ स्थिति में होता है। उस समय वह जो कुछ भी ग्रहण करता है उम्र के हर पड़ाव पर वही तो उसके चरित्र का निर्धारण करता है। जो प्रवृत्तियाँ जीवन में उस समय आती हैं, वे पूरे जीवन को संवारती या बिगाड़ती हैं। अतः यह अति आवश्यक है कि बाल्यावस्था में पूरी सजगता से जो संस्कार रोपने हैं, इसके लिये जो भी प्रयत्न किये जा सकते हैं, अवश्य हों। पालकों का यह दायित्व है कि वे अपने बालकों को सामान्य शिक्षा के साथ नैतिकता तथा धार्मिकता की ओर जाने के लिए वातावरण प्रदान करें।

- मर्मस्पर्श खण्ड (1) से साभार

पत्र-वार्ता

समझौते की पहल

आचार्य श्री विजयरत्नसुन्दर सूरि

दर्शन और श्रद्धा पति-पत्नी हैं। आपसी झगड़ों से उन दोनों के व्यवहार में कटुता आ गई है। कोई झुकना नहीं चाहता, समझौते की पहल नहीं करना चाहता। श्रद्धा को समझाते हुए आचार्य श्री कहते हैं- **सम्पादक**

श्रद्धा,

दूध में फिटकरी डालकर उसे फाड़ने में बहादुरी नहीं है
बहादुरी है दूध में जामन डालकर उसे जमाने में।
जानबूझकर किसी मूल्यवान ग्रंथ पर स्याही छिड़ककर
उसे मूल्यहीन बनाने में कोई संस्कार नहीं है,
संस्कार चाहिये नव-सृजन करने के लिए,
वह भले ही सिर्फ एक पन्ने का ही क्यों न हो।
दीपक को फूँक मारकर बुझा देने में किसी समझदारी की आवश्यकता नहीं है,
समझदारी तो चाहिये दीपक में घी डालकर उसे प्रज्वलित रखने के लिये।
मकान को गिराने के लिये बहुत बुद्धि की जरूरत नहीं,
बुद्धि तो चाहिये मकान को बनाने के लिये।
तुमसे तो इतना ही कहूँगा कि
अहंकार के वशीभूत होकर संपूर्ण परिवार की सुख-शांति को
तबाह करने के लिये न तो बहादुरी चाहिये, न संस्कार,
न समझदारी, न ही बुद्धि। बुद्धि, बहादुरी, संस्कारिता, समझदारी
और सद्बुद्धि इन सबकी जरूरत पड़ती है सुलह-वृत्ति को बढ़ाकर,
समस्त परिवार में सुख-शांति कायम रखने के लिये।
और इसके लिये एक कला आत्मसात् करना जरूरी है,
वह कला है, 'सामने वाले की गलतियों को भूल जाने की कला।'
मेरी तुमसे यही अपेक्षा है।

तुम इस बात की प्रतीक्षा मत करना कि समझौते की पहल दर्शन करे।
तुम स्वयं समझौते की पहल करना।
दर्शन से कह दो कि, 'किसी पराये घर में जन्म लेने के बाद भी
तुमने यदि तुम्हारे घर में भी मुझे स्थायी स्थान देने का उपकार किया है
तो मुझे अपने हृदय में भी स्थायी स्थान दे दो।
मैं घर में किसी भी बात की प्रतिकूलता को सहर्ष स्वीकार लूँगी
परन्तु यदि तुम्हारे हृदय में मेरे लिये नापसंदगी का भाव रहेगा
तो मैं निश्चित ही टूट जाऊँगी।''
श्रद्धा! मैं तुमसे ऐसी समझदारी और बहादुरी की अपेक्षा रखता हूँ कि
तुम स्वयं अपना सर्व अहंकार जल्द से जल्द विसर्जित कर दो।
तुम्हारी संस्कारिता और सद्बुद्धि का परिचय इससे ही मिलेगा।

-'टकराव नहीं समझौता' पुस्तक से साभार

कर्म-सिद्धान्त वारिधि पाठ्यक्रम का शुभारम्भ

अ.भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर द्वारा द्विवर्षीय पाठ्यक्रम 'कर्म सिद्धान्त वारिधि' का शुभारम्भ किया जा रहा है। पाठ्यक्रम चार सेमेस्टर (छःमाही) में विभक्त किया गया है। इसके प्रथम सेमेस्टर की परीक्षा जनवरी, 2010 में आयोजित होगी। प्रथम सेमेस्टर का पाठ्यक्रम इस प्रकार है-

प्रथम प्रश्नपत्र : द्रव्यानुयोग- कर्म अध्ययन (अंक 35), कर्मग्रन्थ भाग-1 (अंक 30), कर्मग्रन्थ भाग- 2 (अंक 35)।

द्वितीय प्रश्नपत्र : कर्मग्रन्थ भाग-3 (अंक 25), गोम्मटसार (कर्मकाण्ड) करण सिद्धान्त चयनित गाथाएँ (अंक 25), कर्म संहिता (अंक 50)।

इस पाठ्यक्रम में शिक्षण बोर्ड की 14वीं कक्षा उत्तीर्ण अथवा एम.ए. संस्कृत/जैन दर्शन में उत्तीर्ण महानुभाव भाग ले सकते हैं। विशेष जानकारी हेतु सम्पर्क करें- *सुशीला बोहरा, संयोजक : अ.भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, घोड़ों का चौक, जोधपुर (राज.), फोन नं. 0291-2630490, मो. 9414133879*

चर्चा

बैंगलोर में आयोजित शिविर में संवाद

बैंगलोर में 25-26 जनवरी, 2009 को आयोजित प्रेरणादायी प्रभावी शिविर कार्यशाला (FIL) में 'मोक्षद्वार ज्ञान पत्रिका' के सम्पादक श्री गौतमचन्द जी ओस्तवाल ने अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के अध्यक्ष श्री सुमेरसिंह जी बोथरा सहित अनेक महानुभावों से संवाद किया, जिसे उपयोगी समझकर प्रकाशित किया जा रहा है।-**सम्पादक**

अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के अध्यक्ष श्रीमान सुमेरसिंहजी बोथरा, जयपुर से प्रश्न-

प्रश्न 1.- जहाँ प्रतिष्ठा है और पैसा है, वहाँ पद अपने आस-पास चक्कर लगाते ही रहते हैं। पर समाज का पद, जिसमें सब कुछ अर्पित करना मात्र होता है, वहाँ समय- शक्ति-धन-अभिमान का त्याग करने पर भी हमें संघ समाज द्वारा धन्यवाद मिले, यह जरूरी नहीं। फिर आपको जब अध्यक्ष पद के लिए आपकी योग्यतानुसार चुना गया, तो आपने गुरुतर कार्य को सहर्ष स्वीकार कैसे कर लिया?

उत्तर- गुरु भक्ति, गुरु कृपा, संघ निष्ठा, संघ समर्पण एवं स्वधर्मी गुरु भाइयों के आग्रहवश, मात्र जिनशासन व संघ सेवा के लिए यह गुरुतर दायित्व स्वीकार किया। सबके सहयोग व आत्मीय प्रेम से मैं संघ की यथायोग्य सेवा करूँगा।

प्रश्न 2.- आपके अध्यक्ष बनने के बाद, आपको सबसे अच्छा अनुभव क्या रहा?

उत्तर- संघ सेवा में सभी गुरु भाइयों का पूरे भारतवर्ष से सहर्ष सहज सहयोग का मिलना मेरे लिए सुखद अनुभव रहा। अपना रत्न संघ गुणग्राही धर्म संघ है।

सम्यग् ज्ञान प्रचारक मण्डल के अध्यक्ष श्रीमान् पी. शिखरचन्द जी सुराणा, चेन्नई से प्रश्न–

प्रश्न 1.– हर व्यक्ति यह बात अच्छी तरह समझता है कि दिया हुआ मिलता है और देंगे तो मिलेगा इसलिए लगभग सभी सज्जन अपनी शक्ति अनुसार दान करते हैं, कोई हॉस्पिटल में, कोई स्कूल–कॉलेज में, कोई गौशाला में, तो कोई कहीं– कोई कहीं! हमारे दान का सबसे प्रथम अंश जिनशासन के लिए क्यों दिया जाना चाहिए?

उत्तर – धर्म संघ एवं जिनशासन सेवा मात्र कर्म निर्जरा के लिए है। अतः दान की शुरुआत जिनशासन को समर्पित संघ–संस्थाओं से करनी चाहिए। अन्य प्रकार से सेवा प्रकल्पों में भी दान देना श्रेयस्कर है। पहले स्व प्रकाश व बाद में पर प्रकाश।

प्रश्न 2.– हमने सुना है जब कोई व्यक्ति अपनी पर्सनल्टी को डवलप (विकसित) कर लेता है तो उसका हर एक घण्टा नहीं, मिनिट भी कीमती बन जाता है, ऐसा ही कुछ हमने आपके बारे में सुना है कि....आज इस कलियुग में जब पैसा ही प्राण समझा जाने लगा है तो आप चार–चार महीने तक, उस आते हुए पैसे को छोड़कर, गुरु सेवा में कैसे रह लेते हैं? इसके पीछे आपका क्या चिन्तन या रहस्य है, जरा इस धर्मसभा को बताएँ?

उत्तर– अपने व्यक्तित्व विकास का महत्त्व आत्म विकास के सामने नगण्य है। पैसा बुद्धि से नहीं पुण्यवानी से मिलता है और मानव भव में पैसे से अधिक–मानवता, गुरु–सेवा, संघ–सेवा का महत्त्व है। अतः मैं अर्थ लाभ से अधिक गुरु चरणों के लाभ को हितकर व श्रेयस्कर मानता हूँ, इसलिए अधिक आत्मलाभ के लोभ से गुरुचरणों में रह लेता हूँ। विशेषतः हमारे संघ के आचार्य श्री, अरिहंत रूप भगवान् तुल्य है। इनका आत्मबल बड़ा मजबूत है। आप स्थानकवासी समाज में पहले क्रियानिष्ठ व प्रतिभा सम्पन्न बड़े सरलमना आचार्य हैं। गुरु चरणों में श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनि जी सदैव सेवा के लिए खड़े

रहते हैं, तत्पर रहते हैं। संघ-सेवा व समर्पण पर हमारा धर्म टिका हुआ है। सेवाभावी श्री नन्दीषेण जी म.सा. की अविरल सेवा अवर्णनीय है। तत्व चिन्तक श्री प्रमोदमुनि जी म.सा. दिन भर जिज्ञासु युवक-युवतियों एवं ज्ञानप्रेमी श्रावकों को ज्ञानध्यान सिखाने में एवं स्वयं सीखने में लगे रहते हैं। रात्रि में प्रतिक्रमण उपरांत 25 भजनों/स्तवनों का लगातार उच्चारण बड़ा वैराग्यप्रद व ज्ञानवर्धक रहता है। ऐसे गुरुओं का सान्निध्य निश्चय ही सुखद व आनन्ददायक होता है।

प्रबुद्ध चार्टेड एकाउण्टेण्ट युवा स्वाध्यायी श्री अशोक जी कवाड़, पुनमली, चेन्नई से प्रश्न-

प्रश्न 1.- क्या बिजनेस में वन मेन शो होने पर भी संघ को समय दिया जा सकता है?

उत्तर- हाँ! जहाँ श्रद्धा हो, भक्ति हो, धर्म प्रेम हो एवं कर्त्तव्य के प्रति जागरूकता हो तो संघ सेवा में अवश्य समय दिया जा सकता है। व्यक्ति कोई भी कार्य एवं व्यवसाय को करते हुए भी अपना समय व पुरुषार्थ सद्कार्य में स्वभावना से लगा सकता है।

प्रश्न 2.- क्या आप जैसी युवा उम्र में या फिर कहा जाए कि बिजनेस के फील्ड में होर्स बनकर दौड़ते हुए भी - रात्रि भोजन-त्याग, जमीकंद-त्याग एवं नियमित सामायिक साधना जैसे व्रत-नियम भी लिये एवं निभाए जा सकते हैं? कृपया हमें इसका फारमूला बताएँ।

उत्तर- जीवन में कोई भी कार्य या व्यवसाय करते हुए भी यदि समयचक्र को व्यवस्थित रूप से बांटकर, श्रद्धापूर्वक कार्य करें तो सभी त्याग-प्रत्याख्यान व नियम निभाए जा सकते हैं। बशर्ते कि हमारी आत्मा के प्रति जागरूकता बराबर हो।

प्रबुद्ध युवति सुश्री आरती जैन, हुबली से प्रश्न-

प्रश्न 1.- आज कॉलेज लाइफ का मतलब खाओ पीओ और मौज करो हो

गया है तथा हॉस्टल का मतलब तो जो चाहो वो करो वाला हो गया है तो फिर आप अपने हॉस्टल के Days कैसे बिताती हैं? आप इस रुटिन में धर्म को कितना स्थान दे पाती हैं?

उत्तर– व्यक्ति के मन में यदि धर्म व धर्म गुरु के प्रति एवं स्वयं की आत्मा के प्रति जरा भी श्रद्धा हो, तो वह हिताहित का चिन्तन कर धर्म संघ व जिनशासन के प्रत्येक आयोजन के लिए समय भी निकाल सकता है व जीवन में धर्म, जो आवश्यक कर्तव्य भी है, का पालन भी किया जा सकता है। धार्मिक को पुराणपंथी कहना सिर्फ मूर्खता ही कहलाएगी।

प्रश्न 2.– आप जैसी लड़कियाँ लड़कों के साथ सम्पर्क नहीं रखती। यदि कोई इस पहलू को बेक वर्ड कहे, तो आप क्या जवाब देंगे?

उत्तर– समाज में नारी समाज हर मुकाबले का सामना करने में सक्षम है, सबल है। लड़की अपने विवेक, विनय, सहनशक्ति व आत्मबल से यदि आगे बढ़ती है तो फिर दुनियाँ के कहने से क्या डरना। जीवन में संघर्ष ही विकास में सहायक होते हैं। अतः धैर्य से बढ़ते रहें।

प्रबुद्ध युवा व्यवसायी, श्रीमान राजूजी भुरट, होसपेट से प्रश्न–

प्रश्न 1.– आपका इतना बड़ा बिजनेस है तो आप मोबाइल रखते हैं? आपके कितने घण्टे मोबाइल पर बीतते हैं?

उत्तर– व्यापार चाहे कितना बड़ा या छोटा हो, उसका सरोकार मात्र मोबाइल फोन से नहीं है। व्यापार करने की पद्धति स्वयं पर निर्भर है। ज्यादा फोन होने पर भी स्व विवेक से आवश्यकता अनुसार मोबाइल का प्रयोग किया जा सकता है। ज्यादा मोबाइल रखना बड़े व्यापार की प्रतिष्ठा है, ऐसा नहीं है। व्यापार तो पुरुषार्थ, बुद्धि, पुण्यवानी से बढ़ता है। साधन है तो उसका उपयुक्त उपयोग यथासमय किया जा सकता है।

प्रश्न 2.– आप नवकार मंत्र का प्रचार–प्रसार किस प्रकार करते हैं?

उत्तर– नवकार मंत्र जैन धर्म का गुणबोधक– गुणग्राही महाप्रभावक मंत्र है। इसका प्रयोग हर क्षेत्र में व्यवसाय के तौर तरीकों में भी सहजता से किया जा सकता है। मैंने तो इसी मंत्र की प्रभावकता अपने जीवन में साक्षात् देखी है।

प्रश्न 3.– आपके इस मानव जीवन का अंतिम लक्ष्य क्या है?

उत्तर– मैं 50 वर्ष बाद व्यापार–परिवार से निवृत्त होकर दीक्षा लेने की पवित्र भावना रखता हूँ।

शासनसेवी, अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष–श्रीमान गणेशमलजी भण्डारी (निमाज), बैंगलोर से प्रश्न–

प्रश्न 1.– आप संघ के प्रति समर्पित हैं, तो आप हमें यह बताएँ कि संघ–सेवा के लिए कौन–कौन से गुण होना जरूरी है?

उत्तर– संघ–समर्पण में प्रश्न एवं तर्क नहीं होता। मात्र गुरु आज्ञा ही हमारे लिए करणीय कर्तव्य होता है। भक्ति, आस्था, श्रद्धा, गुरु आज्ञा का पालन–जैसे सहज गुण होना आवश्यक हैं।

प्रश्न 2.– आपने बचपन में अनेक मूर्धन्य मनीषी, महान् आचार्यों की सेवा की है। फिर भी अंत में आपने गुरु हस्ती को अपना आराध्य गुरु बनाया, इसका क्या कारण था?

उत्तर– मैंने जीवन में पूज्य आचार्य श्री गणेशीलाल जी म.सा., बहुश्रुत पंडितरत्न श्री समर्थमल जी म.सा., पूज्य आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा. एवं मरुधरकेसरी श्री मिश्रीमल जी म.सा., आचार्य सम्राट् श्री आनन्दऋषिजी म.सा. जैसे अनेक महापुरुषों की सेवा–भक्ति एवं दर्शन–वन्दन का शुभ सान्निध्य प्राप्त किया है। गुरु हस्ती में मैंने एक विशेषता पायी – वह थी गुणग्राही दृष्टि एवं निन्दा विकथा से दूर। अतः मैंने गुरु हस्ती व गुरु हीरा को अपना परमाराध्य गुरुदेव माना है।

–गौतमचन्द ओस्तवाल, मोक्षद्वार, बैंगलोर

तत्त्वज्ञान प्रश्नोत्तरी (क्रमशः 48)

आओ मिलकर ज्ञान बढ़ाएँ

(औदारिक काय योग)

श्री धर्मचन्द जैन

जिज्ञासा– औदारिक शरीर किसे कहते हैं?

समाधान– औदारिक शरीर को अनेक प्रकार से परिभाषित किया जा सकता है–

1. जो रस, रक्त, मांस, मेद, हड्डी, मज्जा और वीर्य इन सप्त धातुओं से बने हुए शरीर को औदारिक शरीर कहते हैं।

2. जो शरीर उदार अर्थात् स्थूल पुद्गलों से बना शरीर है, उसे भी औदारिक शरीर कहते हैं। औदारिक शरीर के पुद्गल अन्य चार शरीर के पुद्गलों से स्थूल होते हैं।

3. जिस शरीर में से जीव निकल जाने के बाद भी उसका कलेवर (शव) पड़ा रहे, उसे भी औदारिक शरीर कहते हैं।

4. जिस शरीर में रहकर (मनुष्य शरीर की अपेक्षा) जीव अपने सभी कर्मों का क्षय कर सके, उसे भी औदारिक शरीर कहते हैं।

5. तीर्थंकर, गणधर, चक्रवर्ती, बलेदव आदि महापुरुषों का श्रेष्ठ अर्थात् प्रधान शरीर भी औदारिक शरीर कहलाता है।

जिज्ञासा– औदारिक शरीर किन–किन जीवों में पाया जाता है?

समाधान– औदारिक शरीर सभी मनुष्य व तिर्यञ्चों में पाया जाता है। अर्थात् संसारी जीवों के 24 दण्डकों में से 5 स्थावर, 3 विकलेन्द्रिय, तिर्यञ्च पंचेन्द्रिय तथा मनुष्य इन 10 दण्डकों में औदारिक शरीर पाया जाता है।

जिज्ञासा– जीवों का औदारिक शरीर लगातार कितने भवों तक प्राप्त हो सकता है?

समाधान- कोई भी जीव जब मरण को प्राप्त होता है तब अन्तराल गति में उसके तैजस व कार्मण ये दो शरीर ही साथ रहते हैं। औदारिक, वैक्रिय, आहारक ये तीनों शरीर अन्तराल गति (बाटा बहती अवस्था) में नहीं होते। इस अपेक्षा से तो औदारिक शरीर एक भव में रहता है। तथापि अगले मनुष्य-तिर्यञ्च के भवों में वह पुनः-पुनः औदारिक शरीर प्राप्त कर सकता है। तिर्यञ्च पंचेन्द्रिय व मनुष्य में तो लगातार अधिकतम 8 भवों में औदारिक शरीर प्राप्त कर सकता है। विकलेन्द्रिय में संख्यात भवों में पृथ्वी, पानी, अग्नि व वायुकाय में असंख्यात भवों में तथा वनस्पति काय में लगातार अनन्त भवों में भी जीव औदारिक शरीर को प्राप्त कर सकता है।

जिज्ञासा- औदारिक शरीर काययोग किसे कहते हैं?

समाधान- औदारिक शरीर के द्वारा हलन-चलन, स्पन्दन, उठना, बैठना, दौड़ना, चलना, खाना, पीना, देखना, बोलना आदि जो भी क्रियाएँ होती हैं, वे सब औदारिक काय योग हैं।

जिज्ञासा- औदारिक शरीर की क्रियाएँ किस कारण से होती हैं?

समाधान- वीर्यान्तराय कर्म के क्षय अथवा क्षयोपशम से तथा औदारिक शरीरदि नाम कर्म के उदय से औदारिक शरीर की क्रियाएँ होती हैं। पहले से बारहवें गुणस्थान तक वीर्यान्तराय कर्म के क्षयोपशम से तथा तेरहवें गुणस्थान में वीर्यान्तराय कर्म के क्षय से क्रियाएँ होती हैं।

जिज्ञासा- औदारिक शरीर काय योग कब-कब होता है?

समाधान- मनुष्य एवं तिर्यञ्च गति में जब जीवों के औदारिक शरीर की शरीर पर्याप्ति पूर्ण हो जाती है, तभी से उनमें औदारिक शरीर काय योग होता है।

आगम के मतानुसार तो मनुष्य तिर्यञ्चों में अपर्याप्त अवस्था में शरीर पर्याप्ति पूर्ण होते ही औदारिक शरीर काय योग प्रांरभ हो जाता है। किन्तु कर्मग्रन्थकारों के मतानुसार तो मनुष्य-

तिर्यञ्चों में पर्याप्त होने के बाद ही औदारिक शरीर काय योग होता है। सारांश यह है कि मनुष्य-तिर्यञ्चों में पर्याप्त अवस्था में तो सभी औदारिक काय योग मानते हैं, किन्तु अपर्याप्त अवस्था में तो आगमकार ही मानते हैं, कार्मग्रन्थिक नहीं मानते।

यह विशेष रूप से जानने योग्य है कि जीव जब उसके अत्यन्त निकट रही हुई औदारिक वर्गणा को ग्रहण कर उन्हें काय योग के रूप में परिणत करता है तब औदारिक काय योग होता है।

जिज्ञासा- औदारिक मिश्र काय योग किसे कहते हैं?

समाधान- औदारिक शरीर की अपूर्णता में होने वाला योग औदारिक मिश्र काय योग कहलाता है। अथवा औदारिक शरीर के साथ वैक्रिय, आहारक अथवा कार्मण शरीर की जो संयुक्त प्रवृत्ति होती है, उसे भी औदारिक मिश्र काय योग कहते हैं।

जिज्ञासा- औदारिक मिश्र काय योग कब-कब होता हैं?

समाधान- (अ) जब कोई जीव मनुष्य अथवा तिर्यञ्च गति में जाकर जन्म लेता है तब प्रथम समय में आहार पर्याप्ति पूर्ण करता है। उसके बाद अन्तर्मुहूर्त में शरीर पर्याप्ति पूर्ण करता है। आहार पर्याप्ति से शरीर पर्याप्ति के बीच में जो अन्तर्मुहूर्त का काल है, उसमें जीव की कायिक प्रवृत्ति औदारिक मिश्र काय योग की होती है। अर्थात् मनुष्य तिर्यञ्चों में शरीर पर्याप्ति पूर्ण होने से पूर्व तक औदारिक मिश्र काय योग होता है।

(ब) जब कोई मनुष्य अथवा तिर्यञ्च लब्धि का प्रयोग करते हैं तब भी औदारिक मिश्र काय योग होता है।

(स) केवली समुद्घात करने पर उसमें लगने वाले आठ समयों में से दूसरे, छठे व सातवें समय में भी औदारिक मिश्र काय योग होता है।

जिज्ञासा- मनुष्य तिर्यञ्चों में लब्धि का प्रयोग करने पर औदारिक मिश्र काय योग कब माना जाता है?

समाधान- मिश्र काय योग मानने सम्बन्धी तीन प्रमुख धारणाएँ प्रचलित हैं-

(1) जिस लब्धि का शरीर बनाया जा रहा है उसी का मिश्र काय योग मानना।

(2) जिस शरीर में रहते हुए लब्धि का प्रयोग किया जा रहा है, उसकी प्रधानता देते हुए पहले उसी शरीर का मिश्र काययोग मानना, वापस समापन पर लब्धि वाले शरीर का मिश्र काय योग मानना।

(3) जिस लब्धि का प्रयोग कर रहे हैं, पहले उसका मिश्र मानना तथा लब्धि समापन कर जिस शरीर में आ रहे हैं, उसका मिश्र काय योग मानना।

अर्थात् सामान्य शब्दों में समझ सकते हैं कि प्रथम धारणा कार्मग्रन्थिकों एवं अन्य व्याख्याग्रन्थों की है, जिसमें लब्धिजन्य शरीर को ही प्रधान मानते हैं। अतः इस धारणा के अनुसार लब्धि प्रयोग करते तथा समापन करते इन दोनों ही अवस्थाओं में लब्धिजन्य शरीर का ही मिश्र काय योग मानते हैं।

जिज्ञासा- प्रथम धारणा को उदाहरण से कैसा समझा जा सकता है?

समाधान- जैसे किसी मनुष्य अथवा तिर्यञ्च ने वैक्रिय लब्धि का प्रयोग कर वैक्रिय शरीर बनाना। वैक्रिय शरीर बनाते समय भी तथा वापस वैक्रिय से औदारिक में आते समय भी अर्थात् प्रारंभ व समापन दोनों में ही वैक्रिय मिश्र काय योग रहेगा। इन दोनों के मध्य में वैक्रिय योग रहेगा।

व्याख्याग्रन्थों के इस मत के अनुसार मनुष्य तिर्यञ्चों में पर्याप्त अवस्था में (केवलियों में केवली समुद्घात को छोड़कर) औदारिक मिश्र काय योग नहीं होता है।

जिज्ञासा- औदारिक मिश्र काय योग सम्बन्धी द्वितीय धारणा को कैसे समझा जा सकता है?

समाधान- द्वितीय धारणा प्रज्ञापना पद 16 की टीका के आधार पर

प्रचलित है। इसके अनुसार जिस शरीर से लब्धि का प्रयोग करते हैं, प्रारंभ काल में उस शरीर का मिश्र काय योग तथा समापन काल में लब्धि वाले शरीर का मिश्र काय योग माना जाता है। जैसे किसी प्रमादी साधु ने आहारक लब्धि का प्रयोग किया तो प्रारंभ में औदारिक मिश्र काय योग तथा आहारक लब्धि समापन में आहारक मिश्र काय योग रहेगा।

जिज्ञासा- औदारिक मिश्र काय योग सम्बन्धी तृतीय धारणा किस पर आधारित है?

समाधान- तृतीय धारणा भगवती सूत्र की टीका पर आधारित है। इसके अनुसार लब्धि के प्रयोग में लब्धि जन्य शरीर का मिश्र काय योग तथा समापन में मूल शरीर का मिश्र काय योग होता है। जैसे किसी सन्नी तिर्यञ्च ने अथवा बादर वायुकायिक जीव ने पर्याप्त अवस्था में वैक्रिय लब्धि का प्रयोग किया तब प्रारंभ काल में वैक्रिय मिश्र काय योग तथा समापन काल में औदारिक मिश्र काय योग रहेगा।

तृतीय धारणा भगवती सूत्र की टीकागत होने से इसे प्रधानता देना उपयुक्त प्रतीत होता है।

जिज्ञासा- जीवों की उत्पत्ति के प्रथम समय में कौनसा काय योग मानना चाहिए?

समाधान- कर्मग्रन्थादि व्याख्याग्रन्थों के मतानुसार जीवों की उत्पत्ति के प्रथम समय में कार्मण काय योग माना जाता है। किन्तु आगमकारों के मतानुसार जीव उत्पत्ति के प्रथम समय में स्वयोग्य पर्याप्तियों का प्रारंभ कर भी देता है तथा आहार पर्याप्ति पूर्ण भी कर लेता है अतः आहारक हो जाता है। जबकि आगमानुसार कार्मण का योग अनाहारक अवस्था में ही होता है। अतः उत्पत्ति के प्रथम समय में कार्मण काय योग न मानकर औदारिक मिश्र काय योग मानना चाहिए। **(क्रमशः)**

रजिस्ट्रार-अ.भा.श्री.जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर (राज.)

शोधालेख

जैन परमाणुवाद

श्री चिरंजीव 'अनेकान्त'

परमाणुवाद का सर्वप्रथम प्रतिपादन जैन आगमों में उपलब्ध होता है। यह प्राचीनता और मौलिकता दोनों दृष्टियों से महत्त्वपूर्ण है। जैन परमाणुवाद का सम्बन्ध भगवान् पार्श्वनाथ (ई.पू. 850) से माना जाय तो इससे अधिक प्राचीन परमाणुवाद का कोई उल्लेख उपलब्ध नहीं होता। यदि भगवान् महावीर (ई.पू. 599-527) से माना जाय तब भी वैशेषिक दर्शन के प्रणेता कणाद और ग्रीक दार्शनिक डेमोक्रिट्स (ई.पू. 420) से जैन परमाणुवाद प्राचीनतर सिद्ध होता है। इतना ही नहीं जिस विस्तार के साथ परमाणु के स्वरूप, गुणधर्म आदि पर जैनदर्शन में प्रकाश डाला गया है, उतना कणादीय या डेमोक्रिट्स के परमाणुवाद में उपलब्ध नहीं होता। कुछ विषय तो ऐसे हैं जहाँ तक आधुनिक विज्ञान भी अभी तक नहीं पहुँच पाया है।

कई पश्चिमी विद्वानों की मान्यता है कि भारत में परमाणुवाद यूनान से आया, किन्तु यह सत्य नहीं है। यूनान में परमाणुवाद का जन्मदाता डेमोक्रिट्स है जिसके परमाणुवाद से जैनों का परमाणुवाद अधिकांश में भिन्न है। मौलिकता की दृष्टि से तो सर्वथा भिन्न ही है। जैन दर्शन के अनुसार परमाणु चेतन का प्रतिपक्षी है, जबकि डेमोक्रिट्स के मतानुसार आत्मा सूक्ष्म परमाणुओं का ही विकास है।

कई भारतीय विद्वान् परमाणुवाद को कणाद ऋषि की उपज मानते हैं, किन्तु वैशेषिकों का परमाणुवाद न तो जैन परमाणुवाद से पहले का है और न ही जैनों की तरह वैशेषिकों ने उसके विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डाला है। विद्वानों ने माना है कि भारतवर्ष में परमाणुवाद के सिद्धान्त को जन्म देने का श्रेय जैन दर्शन को मिलना चाहिये (दर्शनशास्त्र का इतिहास, पृ. 129), उपनिषदादि में भी अणु शब्द का प्रयोग मिलता है जैसे 'अणोरणीयान् महतो महीयान्।' किन्तु परमाणुवाद नाम का कोई उल्लेख उनमें नहीं पाया जाता। इसी प्रकार से वैशेषिकों का परमाणुवाद भी इतना पुराना नहीं है।

भगवती सूत्र (1/10/442-443) में अन्य यूथिकों की परमाणु संबंधी मान्यता का उल्लेख कर उसका खण्डन किया गया है। अन्य यूथिक का मानना है कि दो परमाणुओं में स्नेहकाय न होने से उनकी संहति नहीं होती अपितु तीन परमाणु पुद्‌गलों में स्नेहकाय होने से उनमें संहति संभव होती है।

प्रत्युत्तर में भगवती सूत्र 443 में कहा गया है कि दो परमाणु पुद्‌गलों की एक संहति होती है। दो परमाणु पुद्‌गलों में स्नेहकाय होता है इसलिए वे टूटने पर दो भागों में विभक्त होते हैं। एक तरफ एक परमाणु पुद्‌गल व दूसरी तरफ भी एक परमाणु पुद्‌गल होता है। भंते! तीन परमाणु-पुद्‌गलों की एक संहति किस कारण से होती है?- ''तीन परमाणु पुद्‌गलों में स्नेहकाय होता है इसलिए। वे टूटने पर दो या तीन भागों में विभक्त होते हैं। दो भागों में विभक्त होने पर एक और एक परमाणु-पुद्‌गल व दूसरी तरफ द्विप्रदेशी स्कन्ध होता है। तीन भागों में विभक्त होने पर तीन परमाणु-पुद्‌गल व चार भागों में विभक्त होने पर चार परमाणु-पुद्‌गल वक्तव्य है। पाँच परमाणुओं की एक संहति होती है। वे स्कन्ध रूप में परिणत हो जाते हैं जो सदा संगठित रूप में उपचित तथा अपचित होता है।

उपर्युक्त सूत्रों का विश्लेषण करने से पता चलता है कि त्र्यणुकवाद वैशेषिक दर्शन के द्रव्योत्पाद की प्रक्रिया का सिद्धान्त है। वैशेषिक दर्शन के अनुसार द्रव्य का उत्पाद संयोग या संघात से होता है। दो परमाणुओं के संयोग से आरब्ध द्रव्य द्व्यणुक तथा तीन, चार या पाँच द्व्यणुक द्रव्यों के संयोग से आरब्ध द्रव्य त्र्यणुक कहलाता है। द्व्यणुकों से द्रव्य की उत्पत्ति नहीं होती। त्र्यणुक को त्रसरेणु या त्रुटि भी कहा जाता है। इनमें स्थूल परिणति हो जाती है इसलिए उससे द्रव्य उत्पन्न हो जाता है जबकि दो परमाणु पुद्‌गलों में अणुत्व-परिमाण की निवृत्ति नहीं होती, सूक्ष्म परिणति बनी रहती है। वैशेषिक दर्शन के सृष्टि-विचार का नाम आरम्भवाद है। उसके अनुसार दो परमाणुओं के संयोग से एक नया द्व्यणुक द्रव्य उत्पन्न होता है जो कारणभूत दो परमाणुओं से भिन्न होने पर भी उनमें व्याप्त रहता है। इसी प्रकार तीन द्व्यणुकों में से एक त्र्यणुक और चार त्र्यणुकों में से एक चतुरणुक उत्पन्न होता है। इसी क्रम से वैशेषिक दर्शन में पर्वत, नदी, सूर्य आदि स्थूल सृष्टि रचना की व्यवस्था की गई है।

बौद्ध ग्रन्थ ललित-विस्तर में वैशेषिक दर्शन से कुछ अंश में सदृशता रखने वाली गणना 'परमाणु रज' के सम्बन्ध में मिलती है। तदनुसार-

७ परमाणु रज	=	१ रेणु
७ रेणु	=	१ त्रुटि
७ त्रुटि	=	१ वातायन
७ वातायन	=	१ शश रज
७ शशरज	=	१ एडक रज
७ एडक रज	=	१ लिक्षा रज
७ लिक्षा रज	=	१ सर्षप
७ सर्षप	=	१ यव
७ यव	=	१ अंगुली पर्व
१२ अंगुली पर्व	=	वितस्ति
२ वितस्ति	=	१ हस्त
४ हस्त	=	१ धनु
१००० धनु	=	१ कोश
४ कोश	=	१ योजन

बौद्ध मानों का आधुनिक मानों के साथ जो सम्बन्ध उपलब्ध होता है उसके आधार पर एक परमाणु रज = 1.3×7^{10} इंच (देखें, हिन्दू गणित शास्त्र का इतिहास, लेखक- डॉ. विभूतिभूषण दत्त और डॉ. अवधेशनारायण सिंह, हिन्दी संस्करण, पृ. 177)

अतः जैन दर्शन सम्मत परमाणु की सूक्ष्मता की तुलना में बौद्ध परम्परा में मान्य परमाणु रज बहुत स्थूल है बल्कि जैन परम्परा में मान्य व्यावहारिक परमाणु से भी वह स्थूल सिद्ध होता है। 'परमाणु रज' की तुलना जैन गणना में प्रयुक्त 'उत्श्लक्षणश्लक्ष्णिका' नामक स्कन्ध के साथ की जा सकती है।

जैन दर्शन के क्षेत्र मान जहाँ अति सूक्ष्म जगत् में परमाणु से प्रारम्भ होते हैं वहीं स्थूल जगत् में वे 'रज्जु' तक चले जाते हैं। पुद्गल द्रव्य के अंतिम अविभाज्य अंश को परमाणु कहते हैं। एक परमाणु आकाश के जितने क्षेत्र का अवगाहन करता है उतने क्षेत्र को 'प्रदेश' कहते हैं। इस प्रकार 'प्रदेश' त्रिविम-आकाश (थ्री - डाइमेन्शन स्पेस) की इकाई है। या यों कहें कि 'प्रदेश' वास्तविक भौमितिक बिन्दु है। अति सूक्ष्मता के कारण परमाणु असंव्यवहार्य हो

जाता है, इसलिए 'व्यावहारिक परमाणु' नाम का दूसरा मान स्थापित किया गया है। यह अनन्त परमाणुओं का स्कन्ध है। अनन्त व्यावहारिक परमाणुओं का एक प्रसिद्ध स्कन्ध 'उत्श्लक्ष्णश्लक्ष्णिका' बनता है। यह मान दूरत्व की व्यवहार्य इकाई के रूप में है। व्यावहारिक मान जम्बूद्वीप प्रज्ञप्तिसूत्र, काल अधिकार, अनुयोग द्वार सूत्र आदि के आधार पर निम्न प्रकार से है।

८ उत्श्लक्ष्णश्लक्ष्णिका	=	१ श्लक्ष्णश्लक्ष्णिका
८ श्लक्ष्णश्लक्ष्णिका	=	१ ऊर्ध्वरेणु
८ ऊर्ध्वरेणु	=	१त्रस रेणु
८ त्रस रेणु	=	१ रथ रेणु
८ रथ रेणु	=	१ देवकुरु-उत्तर कुरु क्षेत्र के मनुष्य का बालाग्र
८ देवकुरु-उत्तर कुरु क्षेत्र के मनुष्य का बालाग्र	=	१ हरिवर्ष रम्यक् वर्ष क्षेत्र के मनुष्य का बालाग्र
८ हरिवर्ष रम्यक् वर्ष क्षेत्र के मनुष्य का बालाग्र	=	१ हैमवत-ऐरण्यवत क्षेत्र के मनुष्य का बालाग्र
८ हैमवत-ऐरण्यवत क्षेत्र के मनुष्य का बालाग्र	=	१ पूर्वविदेह-अपरविदेह क्षेत्र के मनुष्य के बालाग्र
८ पूर्व विदेह-अपरविदेह क्षेत्र के मनुष्य के बालाग्र	=	१ भरत-ऐरावत क्षेत्र के मनुष्य के बालाग्र
८ भरत-ऐरावत क्षेत्र के मनुष्य के बालाग्र	=	१ लीक्षा
८ लीक्षा	=	१ यूका
८ यूका	=	१ यवमध्य
८ यवमध्य	=	१ उत्सेध अंगुल
१000उत्सेध अंगुल	=	१ प्रमाण अंगुल
६ अंगुल	=	१ पाद
२ पाद	=	१ वितस्ति
२ वितस्ति	=	१ हाथ
२ हाथ	=	१ कुक्षि (रिक्कु)
२ कुक्षि	=	१ धनुष
२000 धनुष	=	१ कोश
४ कोश	=	१ योजन

असंख्य योजन = १ रज्जु

७ रज्जु = १ जगश्रेणी

निष्कर्ष यह है कि 'परमाणु रज' की तुलना में जैन दर्शन का परमाणु एवं 'व्यावहारिक परमाणु' दोनों अति सूक्ष्म हैं। विज्ञान के आधुनिकतम आकलन के अनुसार परमाणु का व्यास 1 इंच के 10 करोड़वें हिस्से जितना (10^{-8} इंच) होता है। जैन तीर्थंकर अतीन्द्रियज्ञानी थे, जहाँ विज्ञान आज पहुँचने की चेष्टा कर रहा है, उससे भी बहुत आगे वे हजारों वर्ष पूर्व पहुँच चुके हैं।

-भोजक कॉलोनी, रेलवे स्टेशन के पास, लाडनूँ-341306 (राज.)

प्रेरक-प्रसंग

संवेदनशीलता

सम्भ्रान्त ओसवाल जैन सेठिया परिवार की कन्या भूमिका तब द्रवित हो उठी जब उसने देखा कि एक विकलांग बच्चे को मुहल्ले के बालक परेशान कर रहे थे। उसे विकलांगता सूचक व्यंग्य भरे शब्द बाणों से बींध रहे थे। लेकिन कोई उस असहाय की मदद करने आगे नहीं आया। संयोग से एक नन (ईसाई संन्यासिनी) उधर से गुजर रही थी, उसने देखा और वह उस विकलांग बच्चे को गोद में उठाकर ले गई।

बाल्यावस्था की यह घटना भूमिका की मनोभूमि में घर कर गई। 23 वर्ष की उम्र में कम्प्यूटर इंजीनियरिंग की शिक्षा पूर्ण कर अपनी उस भावना को साकार रूप देते हुए भूमिका सेठिया ने 22 नवम्बर 2005 को करणीनगर बीकानेर में विकलांग एवं मंदबुद्धि बच्चों के लिए 'गुरुकुशल ज्ञान संस्थान' की स्थापना की। पहले किराये के मकान में और अब दानदाताओं की सहायता से निर्मित छोटे मकान में 70 बच्चों की वह सेवा शूश्रुषा एवं देख-रेख कर रही है। 25 बच्चे तो वही रहते हैं जिनकी चिकित्सा सहयोगियों के सहयोग से वहीं पर की जाती है तथा भोजन भी दिया जाता है।

चाहे सहयोग राशि अति अल्प ही क्यों न हो, वह अकेली ही दृढ़ता के साथ अपने सत्कर्म के पथ पर आगे बढ़ती जा रही है।

उस त्यागी, सेवाभावी और दृढ़निश्चयी युवती के कार्य को देखने और अपना सहयोग प्रदान करने हेतु सम्पर्क सूत्र :- **'गुरुकुशल ज्ञान संस्था'**, सी-296, करणीनगर, लालगढ़, बीकानेर (राज.), 09828933847

धारावाहिक (क्रमशः59)

जम्बूकुमार

जैनदिवाकर श्री चौथमल जी म.सा.

पूर्ववृत्तः- आर्य जाति की स्त्रियाँ पति के सुख को अपना सुख और दुःख को अपना दुःख मानती हैं। दाम्पत्य जीवन के प्रेम का यही सच्चा स्वरूप है - ऐसा निर्णय कर आठों स्त्रियाँ जम्बूकुमार के निकट गयीं। उनके भावों को जानकर जम्बूकुमार ने उन्हें पुनः समझाते हुए कहा- "भोग भुजंग के समान है। भोगों को भोगने से भोग-अभिलाषा अधिक उग्र होती जाती है। कल्याण का मात्र एक ही उपाय है - संयम। इसका आनन्द अनिर्वचनीय है। इसी सुख की खोज में मैं जा रहा हूँ। तुम्हारा कोई भी प्रयत्न अब सफल नहीं होगा।" प्रत्युत्तर में स्त्रियाँ कहने लगीं- "अविचार अनेक आपत्तियों का स्थान है। अतः आप दीक्षा लेनी हो तो भले ही लें, पर थोड़े दिन इन सब बांतों पर भली भाँति विचार कर लें।" क्योंकि...........

जिस नदी में जल्दी पूर आ जाता है वह जल्दी सूख भी जाती है। आप श्री सुधर्मा स्वामी का एक व्याख्यान सुनकर ही इतने अधिक प्रभावित हो गए हैं कि सहसा संसार त्यागने पर उतारू हो गए हैं। कहीं किसी दूसरे का व्याख्यान सुनकर फिर आपकी मनोवृत्ति बदल गई तो क्या होगा? क्षणिक विचारों के सहारे जीवन का निर्माण नहीं हो सकता। जो व्यक्ति हृदय की तरंगों में बह जाता है वह स्थिरता के अभाव में अपना अहित करता है।

जम्बूकुमार ने उत्तर दिया- "तुम मेरे प्रति जो सद्भावना प्रकट कर रही हो उसके लिए मैं आभारी हूँ। परन्तु तुम्हारा भय-प्रदर्शन व्यर्थ है। सांसारिक सुख और दुःख अपनी मनःस्थिति पर आश्रित है। भोजन न मिलने पर एक मनुष्य अत्यन्त असाता का वेदन करता है, हाय-हाय करता है, क्रन्दन करता है और भोजन की अप्राप्ति को परम दुःख रूप मानकर वर्तमान में दुःख अनुभव करने के साथ-साथ आगे के लिए भी अशुभ कर्म का बन्ध

करके दुःख के बीज बो लेता है। दूसरा व्यक्ति भोजन का अलाभ होने पर भी सन्तुष्ट रहता है। वह इस प्रकार सोचता है- मैंने पहले अन्तराय कर्म का बंध किया था। वह कर्म अब तक सत्ता रूप में विद्यमान था। अब उसका अबाधा काल समाप्त हो गया है। अतएव उसका उदय आया है। अब तक मुझ पर इस कर्म का जो भार था, आज उसका फल भोगने से वह भार उतर गया है। किसी का ऋण चुका देने पर ऋणी को प्रसन्नता होती है उसी प्रकार कर्मों का ऋण चुकाने पर मुझे भी प्रसन्न होना चाहिए। इसमें शोक करने का कोई प्रयोजन नहीं। भोजन न मिलने से अनायास ही तपस्या करने का अवसर प्राप्त हुआ है और इससे कर्मों की निर्जरा होगी। ऐसी अवस्था में आर्त्तध्यान करना विवेकशील पुरुष के लिए उचित नहीं है। मुझे तो इस अवस्था में जरा भी दुःखी नहीं होना चाहिए।''

एक ही घटना में, एक ही परिस्थिति में विवेकी और अविवेकी पुरुष की भावना में कितना अन्तर होता है। यह समझने के लिए भोजन का उदाहरण दिया गया है। इसी प्रकार अन्य वस्तुओं के संयोग और वियोग के समय भी अज्ञानीजन हर्ष-विषाद करके पाप कर्मों का उपार्जन करते हैं। पाप कर्म का उपार्जन करने के साथ ही वे उस घटना से सुखी होते हैं और दुःखी होते हैं, अतएव अधिकांशतः सुख और दुःख मनोभूमि में उत्पन्न होते हैं। मुनि ऐसी घटनाओं में समता भाव धारण करते हैं अतएव भोजन के अलाभ में तुम जिस दुःख की कल्पना कर रही हो, वह दुःख उनके पास भी नहीं फटकता। वह तो अपने समताभाव में ही मग्न रहते हैं। अतएव भूख-प्यास के कष्टों को बताकर मुझे पदच्युत करने का प्रयास निरर्थक है।

रही सर्दी-गर्मी को सहन करने की बात सो उसमें भी यही तत्त्व है जिसका मैंने अभी उल्लेख किया है। सर्दी-गर्मी के कष्ट भी कर्म-निर्जरा के कारण हैं अतएव उनके उपस्थित होने पर मित्र की भाँति उनका स्वागत करना चाहिए, उन्हें शत्रु की तरह दुरदुराना नहीं चाहिए। कष्ट और प्रतिकूलता मानव जीवन के विकास में अत्यन्त सहायक होते हैं। कष्ट सहन करने से आत्मा की शक्ति प्रकट होती है। आत्मा अपने लक्ष्य की प्राप्ति करने में अधिक सुदृढ़ हो जाती है। यदि कष्ट हमारे मार्ग में आड़े न आवे तो हमारी सारी शक्तियाँ दबी रहती हैं। राख में छिपी हुई अग्नि हवा से एकदम

चमक उठती है, इसी प्रकार आत्मा की छिपी हुई शक्ति विघ्नों के घात से आविर्भूत हो जाती है। इसलिए विघ्नों को, कष्टों को, प्रतिकूलताओं को मैं अपने ध्येय की पूर्ति करने का प्रबल सहायक समझता हूँ। उनके आने पर मैं प्रसन्न होऊँगा। तब फिर कौन सा कष्ट मुझे पीड़ा पहुँचा सकेगा?

साधु-अवस्था में मलीन वस्त्रों का उपयोग करना होगा और शरीर भी मलिन रहेगा, ऐसा तुम कहती हो। पर वस्त्र तो केवल शरीर की रक्षा के लिए ही होते हैं। मलिन वस्त्रों से भी यदि शरीर की रक्षा हो सकती है तो उनकी मलिनता से हमारी क्या हानि है? और शरीर तो मलिन है ही। उसे समुद्र के सारे जल से धोया जाए, तो भी वह कभी पवित्र न होगा। अत्यन्त अशुचि पदार्थों से जिस शरीर का निर्माण हुआ है वह पवित्र कैसे हो सकता है। बाह्य पदार्थ शरीर के संयोग से अशुचि हो जाते हैं, पर उनके संयोग से शरीर शुचि नहीं होता। हम लोग अत्यन्त स्वादु, सुगन्ध युक्त, मनोज्ञ आहार बड़े चाव से, अत्यन्त लालसा से खाते हैं, किन्तु शरीर का संयोग होने पर उन सुगन्धित पदार्थों का स्वरूप कैसा हो जाता है? फिर उनकी ओर कोई दृष्टि भी नहीं करना चाहता। कदाचित् दृष्टि पड़ जाए तो अत्यन्त ग्लानि होती है। उत्तमोत्तम भोजन इस शरीर के संयोग से मल-मूत्र बन जाता है, हाड़-मांस-रुधिर के रूप में परिणत हो जाता है।

शरीर जब स्वभाव से ही इतना अपवित्र है तब ऊपर से साफ करने पर भी क्या वह साफ हो सकेगा? कोयला धोने पर जैसे कभी भी सफेद नहीं निकल सकता उसी प्रकार बाह्य शुचि से शरीर कदापि साफ नहीं हो सकता। कहा भी है-

यच्छुक्र शोणितसमुत्थमनिष्टगन्धम्,
नानाविधकृमिकुलाकुलितं समन्तात्।
व्याध्यादिदोष-मलसद्मं विनिन्दनीयम्,
तद्वारितः कथमिहच्छति शुद्धिमन्नम्॥

अर्थात् जो शरीर रज और वीर्य से उत्पन्न है, जिसमें दुर्गन्ध भरी हुई है, जो अनेक प्रकार के कीड़ों के समूह से व्याप्त है, रोगों का तथा मल का घर है, सब प्रकार से निन्दनीय है, वह शरीर क्या कभी पानी से शुद्ध हो सकता है? कदापि नहीं हो सकता।

अतएव शरीर की शुद्धि की चिन्ता करना वृथा है। वह किसी भी प्रकार शुद्ध नहीं होगा। जो लोग शारीरिक शुद्धि को आत्मिक शुद्धि का प्रबल करण समझते हैं, वे अज्ञानी हैं। उन्होंने शरीर के वास्तविक रूप को समझने का प्रयत्न नहीं किया है।

इसके अतिरिक्त एक बात और है, जिसका उन्हें विचार करना चाहिए। आत्मा एक नित्य द्रव्य है वह सदा से है और सदैव रहेगा। न उसकी कभी उत्पत्ति हुई है और न कभी उसका विनाश हो सकता है। केवल विभिन्न पर्यायें उसमें निरन्तर होती रहती हैं। आत्मा कभी नरक में जाकर नारकी कहलाता है, तिर्यञ्च गति में जाकर पशु-पक्षी आदि नाम धारण करता है, कभी मनुष्य नाम पाता है और कभी देव गति पाता है। इस प्रकार यह जीव अनन्त-अनन्त बार प्रत्येक गति में जा चुका है। इसने अनन्त बार जहाँ स्वर्ग के अनुपम सुख भोगे हैं वहाँ अनन्तों बार नरक की 'घोर से घोर यातनाएँ' भी सहन की हैं। नरक की यातनाएँ इतनी भयंकर हैं कि उनका वर्णन सुनने से ही रोंगटे खड़े हो जाते हैं। वहाँ यह जीव भूखा-प्यासा रहा है। नरक में नारकी जीवों को इतनी भूख लगती है कि वे सोचने लगते हैं कि यदि तीनों लोकों का सारा धान्य मिल जाय जो सारा सफा कर डालें, पर बेचारों को अन्न का एक भी कण नसीब नहीं होता। वहाँ की सर्दी गर्मी का स्वरूप क्या पूछना है? एक कवि ने कहा है।

मेरु समान लोह गल जाय, ऐसी शीत उष्णता थाय।

अर्थात् नरक में इतनी सर्दी-गर्मी होती है कि सुमेरु के बराबर लोहे का पिंड भी गल सकता है।

इसके अतिरिक्त नारकी जीव आपस में घोर वेदनाएँ एक दूसरे को उपजाते रहते हैं। वे शरीर के तिल के बराबर टुकड़े-टुकड़े कर डालते हैं, मगर उनका शरीर पारे की तरह फिर जुड़ जाता है। परमाधामी असुरकुमार नारकी जीवों पर असीम दुःखों की वर्षा करते हैं। नारकी जीव जब पानी मांगता है तब शीशा उकाल कर उसे पिलाते हैं। जब नारकी जीव उससे जलकर कहता है- ''बस करो, बस करो, मेरी प्यास बुझ गई है'', तब भी असुर नहीं मानते और जबरदस्ती उसका मुँह फाड़ कर उसमें उकलता हुआ शीशा उंड़ेल देते हैं। ऐसी वेदनाएँ नारकी जीवों को कभी-कभी नहीं निरन्तर

भुगतनी पड़ती हैं।

प्रियाओं ! यह मत समझो कि नारकी जीव हमसे सर्वथा भिन्न कोई और ही हैं। हम सभी लोग अनन्त बार नारकी बन चुके हैं, अनन्त बार ऐसी वेदनाएँ अनुभव कर चुके हैं। इन वेदनाओं के सामने संयम-जीवन के उपसर्ग और परीषह किस गणना में हैं? जब इस आत्मा ने अनन्त बार नरक की यातनाएँ सहन कर लीं तो क्या एक बार भी संयम-जीवन के साधारण कष्टों को न सह सकेगी? और वे कष्ट भी हितकारी हैं, सुखकारी हैं, परिणाम में अक्षय कल्याण करने वाले हैं।

इसी प्रकार निगोद अवस्था के कष्टों को भी आत्मा ने सहन किया है। निगोद अवस्था भी अत्यन्त दुःखदायक अवस्था है। उस अवस्था में जीव एक समय में साढ़े सत्तर बार जन्म-मरण करता है। जन्म-मरण के कष्ट कितने प्रबल हैं यह तो भुक्त भोगी ही जानते हैं। तथापि उनकी साधारण कल्पना आ जाए, इस हेतु से एक उदाहरण द्वारा उस महान् वेदना का वर्णन किया जाता है:-

सात दिन के जन्मे हुए बालक के रोम-रोम में साल की सुइयाँ चुभा दी जाएँ और उस बालक को इसी अवस्था में एक ऐसे मार्ग में पटक दिया जाय जहाँ से निरन्तर घोड़े गाड़ी-तांगे आदि वाहन निकलते रहते हों। उन वाहनों की टक्करें खा-खा कर वह बालक इधर से उधर और उधर से इधर लुढ़कता फिरे। जरा सोचो कि उस अवस्था में उस बालक को कितना कष्ट होता होगा? बालक के इस भयंकर कष्ट से भी आठ गुना अधिक कष्ट इस जीव को गर्भ-अवस्था में सहन करना पड़ता है। पर गर्भ-अवस्था के दुःख से जन्मते समय का दुःख अत्यधिक है। मृत्यु के समय होने वाले कष्ट की बात ही न पूछिए। वह तो जन्म-कालीन दुःख से भी कई गुणा अधिक होता है। इतने भयंकर दुःख वाले जन्म-मरण निगोदिया जीव को साढ़े सत्तर बार एक नाड़ी का ठपका होने जितने ही समय में करने पड़ते हैं। ऐसी व्यथा इस जीव ने न जाने कितनी बार भुगती है। अब तुम्हीं बताओ, इन दुःखों के आगे संयम के कष्ट किस गिनती में हैं। जो आत्मा नरकनिगोद की इन पीड़ाओं को सहन कर सकता है उससे संयम जीवन के उपसर्ग क्यों नहीं सहे जा सकते?

संयम-जीवन में एकान्त दुःख नहीं है। उस उच्च जीवन में ऐसे सुख भी हैं जो संसार-अवस्था में प्राप्त नहीं हो सकते। विषय-भोगों की कामना का त्याग कर देने से एक प्रकार का अनिर्वचनीय आत्मिक आनन्द उद्भूत होता है। उस आनन्द रस का आस्वादन करने पर फिर उसका परित्याग करना दुष्कर है। उस जीवन में अपूर्व निराकुलता है, अपूर्व शान्ति है, अपूर्व रस है, अपूर्व आत्मानन्द है, अनिर्वचनीय संतोष है। भला ऐसी सुखमय अवस्था से कौन मुमुक्षु भयभीत होगा? सच्चे आत्मकल्याण की अभिलाषा करने वाले के लिए तुम्हारी खड़ी हुई विभीषिका क्रीड़ा मात्र है। कायरों को वह दुःखदायक भले ही मालूम हो, पर नरवीर पुरुष उसे सुख रूप मानते हैं।

(क्रमशः)

अपूर्व पूँजी

श्री जिनेन्द्र कुमार जैन

हमारे पास है अपूर्व पूँजी।
अज्ञानवश जो मिल नहीं पा रही
खोजने की जरूरत नहीं, दीप्त करने की जरूरत है
दीप्ति के लिए चाहिये जो, उसकी कमी सर्व विदित है।
इस कमी को हटाया था ज्ञात पुत्र ने
परिपूर्ण किया था अपूर्णता को, अपने प्रबल पुरुषार्थ से
प्रवर्धाया था जिनशासन को, अपने अलौकिक ज्ञान से
यदि हमको भी,मिटाना है अज्ञान को
प्रकटाना है परिपूर्ण ज्ञान को,
भगाना है कर्मरूपी शत्रु को
जगाना है भाग्य को और पाना है सौभाग्य को
तो ज्ञात पुत्र सा पुरुषार्थ करते जायें
कायरता दूर हटाते जायें, सम्यक् बोधि पाते जायें
और इस अपूर्व पूँजी से, मुक्ति को मिलाते जायें।

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मंडल, बापू बाजार, जयपुर-302003 (राजस्थान)

उपन्यास (2)

सुबह की धूप

श्री गणेशमुनि जी शास्त्री

पूर्ववृत्तः- गाँव के ठाकुर द्वारा खेत पर कब्जा कर लेने से किशनलाल गाँव छोड़कर शहर आ गया। भाग्योदय से अब तक वह प्रतिष्ठित सेठ बन गया। एक दिन उसके घर गाँव के बंशीकाका मिलने आये। किशनलाल की पत्नी शान्ति ने काका की खूब आवभगत की। बातों ही बातों में किशनलाल ने काका को बताया कि उसके तीन पुत्र विश्वास, चन्दन और दीपक तथा एक पुत्री आरती है। विश्वास इंग्लैण्ड में डॉक्टरी पढ रहा है और चन्दन इंजीनियरिंग कर रहा है। विश्वास के लिए कई धनाढ्य परिवारों से रिश्ते आ रहे हैं, अब जल्दी ही उसकी शादी करनी है। इतने में.....

एक सेवक, चाय-नाश्ता लाकर रख गया।

'काका! चाय पीते हो या नहीं? अगर नहीं पीते हो, तो दूध मँगवा दूँ।'

'अरे रहने दो बेटे! मैं नाश्ता करके तो निकला ही था।'

'वाह! यह कैसे हो सकता है?....... कहाँ ठहरे हो काका!'

'रात, धर्मशाला में बिताई थी। तुम्हारा पता तो मेरे पास था। पर, रात को कहाँ जगाता फिरता। सोचा, सवेरे ही मिल लूँगा। अब, यहाँ से मथुरा-वृन्दावन जाने का विचार है।'

शान्ति, बन्शी के सामने चाय का प्याला रखने लगी, तो उसे दूर खिसकाते हुए वह बोला-'अरे अरे! मेरे को चाय नहीं चलती बहू! सच कहता हूँ, सत्तर वर्ष का होने को आया हूँ। मगर, भूलकर भी चाय नहीं पी है कभी। मुझे तो इसके स्वाद तक का पता नहीं है।'

'मोती! एक गिलास दूध ले आओ।'

'अभी लाया सरकार।' कहता हुआ मोती बाहर गया। और कुछ ही देर में गिलास भर दूध ले आया।

'गाय रख रखी है काका! बाजार का दूध क्या है, एक पाव दूध तो तीन पाव पानी। लोगों का ईमान ही चला गया लगता है।''

'शहर में रहकर भी गौ सेवा कर लेते हो, यह कम बात नहीं है। शुद्ध दूध-घी मिल जाये, फिर और क्या चाहिए।'

'इसी चाय ने तो दूध-दही को महंगा कर दिया है काका! इस कालिका से तो भगवान् जितना बचाये रखे, उतना ही अच्छा है। पर क्या करें! आदत ही ऐसी पड़ गई कि छोड़ने से भी नहीं छूटती। बहुत बार प्रयत्न किया।'

इसके लिए प्रयत्न नहीं, दृढ़ संकल्प कर लो तो छूट जायेगी। कोई भी काम मुश्किल नहीं होता है बेटे।'

'यही बात, मैं इन्हें कई बार कह चुकी हूँ काका। डॉक्टर भी इन्हें मना करते हैं चाय पीने से। मगर ये मानते ही नहीं। मुझे देखो, आठ वर्ष हो गये हैं चाय छोड़े हुए। गुरुदेव के समक्ष एक बार व्रत लिया था कि चाय नहीं पीऊँगी। तभी से नहीं पी है।'

'चाय के बिना तुम्हारा निर्वाह हो सकता है, मेरा नहीं। हमें बाहर आना-जाना पड़ता है। किस-किस को मना करूँगा।'

'अच्छा, अच्छा, मत करो मना। एक कप और ले आऊँ' - शान्ति ने चिढाते हुए कहा।

'तुम तकलीफ मत करो। मोती ले आएगा।......मोती। एक कप चाय और ले आओ भाई! ताजगी नहीं आई। पत्ती थोड़ी तेज कर देना।'

मोती, एक कप चाय और ले आया। तब तक, बंशीलाल दूध पी चुका था। खाली गिलास को नीचे रखता हुआ वह बोला- 'बच्चे कहाँ गये हैं?'

'सब इधर-उधर गए हुए हैं। एक तो विदेश में है ही। दूसरा बम्बई गया हुआ है। दीपक और आरती, छुट्टियाँ बिताने शिमला गये हुए हैं। क्या करें? अपने राम परेशानी उठा लेंगे, मगर, बच्चों की इच्छा तो पूरी करनी ही पड़ती है।'

'अजी, नहीं करें तो जिद पकड़ लेते हैं। मैं जानता हूँ आजकल के बच्चों को।'

'अब कुछ दिन यहीं आराम करो काका! तुम्हें यहाँ किसी प्रकार की परेशानी नहीं होगी।' - अपनी कुर्सी पर से उठता हुआ किशनलाल बोला।

'अभी नहीं किशन! फिर कभी आऊँगा। अभी तो मैं घूमने निकला

हूँ। मेरे साथ कुछ यात्री और भी हैं। सभी धर्मशाला में ठहरे हुए हैं। जब कभी अकेला आऊँगा, तब अवश्य दो-तीन दिन ठहरूँगा। ....अच्छा, अब मैं चलता हूँ।'

'यह क्या? भोजन तो किया ही नहीं, और चलने लगे?'-शान्ति ने कहा।

'आज मेरा व्रत है बहू! वरना भोजन अवश्य कर लेता।'

'आज तो यहीं हो?'

'नहीं, दिन भर घूमने-फिरने के बाद शाम को मथुरा चले जायेंगे।'

'विश्वास के विवाह में अवश्य आना काका! इसी वर्ष, सर्दियों में ही विवाह करने का विचार है।'

'निमन्त्रण मिला तो अवश्य आऊँगा।'

'घर का मोह छोड़कर आना काका! एक महीने से पहिले नहीं जाने दूँगी।'-शान्ति ने अपनापन प्रकट किया।

बंशीलाल का मन, किशन और शान्ति की आवभगत से गद्गद हो गया। बाहर निकलते हुए वह बोला- 'बेटे! तुम लोग भी तो गाँव आओ।'

'अब वहाँ क्या रहा है काका! मन ही नहीं करता है वहाँ आने को। जिसे त्याग दिया फिर उससे मोह क्या रखना।'

'ठीक है बेटे! मैं तुम्हारे मन की पीड़ा जानता हूँ। अब तो वह गाँव भी काफी बदल गया है। तीस वर्ष पहले वाला गाँव नहीं रहा है वह। चार पाँच होटल खुल गए हैं। बड़ा विद्यालय बन चुका है। लड़के-लड़कियाँ फैशन में रहना सीख गये हैं। सिनेमा के गाने गाने लगे हैं। अनाज पीसने की चक्कियाँ लग गई हैं। तार-टेलीफोन लग गये हैं। सड़क पक्की बन गई है।.......सब कुछ अच्छा-अच्छा हो गया है। पर, आदमी, स्वार्थी ज्यादा हो गये हैं। आकर देखो, तो मालूम पड़े।'

'अच्छा, कभी विचार करूँगा।'

'बच्चों को भी लेकर आओ। मैं वहाँ हूँ ही। कोई तकलीफ नहीं होगी।'

'उन्हें कहाँ फुर्सत है। मैं और शान्ति ही आयेंगे। क्यों चलोगी न ?'

किशन ने शान्ति की ओर देखकर कहा।

'आप ले चलेंगे, तो क्यों नहीं चलूँगी।........अब आप किधर जायेंगे?'

'पहिले सीधा स्टेशन की धर्मशाला जाऊँगा। फिर घूमने जाऊँगा।'

'मोती! ड्राइवर है नीचे?'

'हाँ, अभी तो नीचे ही था।'

'तब ठीक है। काका को कार से भिजवाए देती हूँ।'

'अरे रहने दो बहू! अभी तो मेरे पाँवों में बहुत ताकत है।'

'तो क्या हुआ। अभी छोड़कर आ जायेगा।'- कहती हुई शान्ति नीचे आ गई।

ड्राइवर, सामने ही खड़ा मिल गया। उसे बुलाकर उसने कहा-'इन्हें स्टेशन के पास वाली धर्मशाला तक छोड़ आओ।'

'अरे! इन्हें क्यों नाहक तकलीफ दे रही हो बहू!'

'इसमें तकलीफ की क्या बात है।'

'आइये, मैं अभी छोड़कर आता हूँ आपको।' ड्राइवर बोला, और गैरेज से गाड़ी निकाल कर, बंशीलाल के एकदम नजदीक खड़ी कर दी।

बंशी गाड़ी में बैठ गया। फिर शान्ति की ओर हाथ जोड़कर बोला- 'अब चल रहा हूँ बहू! अच्छी तरह से रहना।'

शान्ति ने आगे बढ़कर बंशीलाल के चरण छुए, तो वह आशीर्वाद देते-देते भाव विह्वल हो गया। अब, कार आगे बढ़ गई।

शान्ति, बंशीलाल को विदाई देकर, कमरे में पुनः प्रवेश करती हुई बोली- 'कितना अच्छा आदमी है। चेहरे पर तनिक भी अहं नहीं है। उस जमाने में, गाँव का सबसे धनी व्यक्ति यही था न!'

'अब टूट गया है बेचारा। लड़के अच्छे नहीं निकले।'- किशन ने कहा।

'जमाने की हवा ही ऐसी चल रही है। अपने बच्चों का भी क्या भरोसा है?'

'अपने बच्चों में तो संस्कार ही ऐसे डाले हैं कि कोई स्वप्न में भी अंगुली नहीं उठा सकता।'

'बच्चों पर वातावरण का असर ज्यादा पड़ता है। संस्कार घर में ही धरे रह जाते हैं।'

'मुझे अपने बच्चों पर विश्वास है शान्ति! अपने दूध के साथ जन्मघूँटी तुमने उन्हें दी है, उसका असर इतनी जल्दी नहीं जा सकता।'

'कल की बात कौन जाने? आज और कल में बहुत अन्तर आ जाता है। संसार के सारे मानदण्ड बदल चुके हैं। सारा समीकरण गड़बड़ाया हुआ है।

'टन्न्-टन्न्' - टेलीफोन की घण्टी टनटनाई, तो किशनलाल फोन उठाकर सुनने लगा- 'हेलो ऽऽ कौन? विश्वास!' 'अरे बेटे! कब आये तुम?' 'रात को ही दिल्ली आ गये थे। खबर कर देनी चाहिए थी। मैं आ जाता।' 'कहाँ से बोल रहे हो?' क्या? तुमने शादी कर ली। वह भी इंग्लैण्ड में? मुझसे बिना पूछे ही?' हूँऽऽ।' -कहकर उसने फोन रख दिया, और धम्म से सोफे पर बैठते हुए बोला- 'मर गये'।

'क्यों, क्या बात हुई?' - शान्ति ने बेचैनी में पूछा।

'तुम्हारा लाडला इंग्लैण्ड से शादी कर के आया है। एक घण्टे बाद यहाँ आ रहा है। कम्बख्त! किसलिए आ रहा है अब यहाँ! बेवकूफ!'

'जो हो गया, हो गया। अब आप शान्त रहिएगा। कहीं ऐसा न हो, वह नाराज हो जाये।

किशनलाल, बिना कुछ बोले, पास में पड़े अखबार पर निगाहें गड़ाकर रह गया। (क्रमशः)

Nice Thoughts

1. So simple is to live, so simple is to love. so simple is to smile, so simple is to win, But so difficult is to be simple.
2. words are under your control until you speak them, but you come under their control, once you have spoken them.
3. Death is not the greatest loss in life, but the loss is what dies inside us while we live.

-Minakshi Jain, (Advocate), Surana Ki Badi Pol, Nagaur (Raj.)

कविता

मोक्ष-मंजिल : शाश्वत निवास

श्री जितेन्द्र चोरडिया 'प्रेक्षक'

वर्ममान में कोई चाह नहीं, भविष्य की कोई परवाह नहीं।
पहुँचना है उस मंजिल तक, जिसके आगे कोई राह नहीं।।

पथिक हैं हम उस मंजिल के, जो हमसे बहुत ही दूर है,
वहाँ पहुँच पाते वे नर, जो साहसी और शूर हैं।
कायर और डरपोक जनों को, मिलती वहाँ पनाह नहीं,
पहुँचना है उस मंजिल तक, जिसके आगे कोई राह नहीं।।1।।

डगर पे उस मंजिल की, नहीं मिलते फूल-बहार हैं,
प्रतीक्षा करते कष्ट-विपत्ति, स्वागत में शूल तैयार हैं।
सर्वत्र व्याप्त है भीषण गर्मी, कहीं दिखती शीतल छाँह नहीं,
पहुँचना है उस मंजिल तक, जिसके आगे कोई राह नहीं।।2।।

वास्तविक सुख है नहीं यहाँ के, केवल सुख-आभास है,
सुख के छद्मवेश में रहता, घोर दुःखों का वास है।
जहाँ के अव्याबाध सुखों की, ले सकता कोई थाह नहीं,
पहुँचना है उस मंजिल तक, जिसके आगे कोई राह नहीं।।3।।

कर्म-मल से लिप्त आत्मा, वहाँ पहुँच नहीं पाती है,
तप-संयम से शुद्ध बनी, आत्मा ही वहाँ पर जाती है।
पहुँचते सत्पुरुषार्थी क्षण में, लगते कोई माह नहीं,
पहुँचना है उस मंजिल तक, जिसके आगे कोई राह नहीं।।4।।

वहाँ रहने वालों को कभी, होता नहीं कोई खेद,
हैं परम सुखों में लीन सभी, आपस में नहीं कोई भेद।
एक-सा स्तर है सबका, कोई रंक और बादशाह नहीं,
पहुँचना है उस मंजिल तक, जिसके आगे कोई राह नहीं।।5।।

अनन्तकाल में अनन्त अस्थायी, हमने किये निवास हैं,
.नींव डालना है उसकी अब, जो शाश्वत आवास है।
सादि-अनन्त स्थिति है, 'प्रेक्षक', घड़ी-प्रहर-सप्ताह नहीं।
पहुँचना है उस मंजिल तक, जिसके आगे कोई राह नहीं।।6।।

-'समर्थ भवन' खींचन-342008, जिला-जोधपुर(राज.)

चिन्तन-कण

- औरों के ऐब देखना आसान है जितना,
  अपनी अकड़ को देखना दुश्वार है उतना।
- जो नहीं चाहते हुए भी आ जाता है, वह है- दुःख,
  जो चाहते हुए भी रह नहीं पाता वह है- सुख।
- जो भिन्न होकर अपना लगता है उससे आसक्ति होती है।
  जो अपना है (आत्मा), उससे प्रीति होती है।
- यह जीवन रोने के लिए नहीं मिला, यह जीवन खोने के लिए नहीं मिला, यह जीवन पाप धोने के लिए मिला है।
- न सुख बुरा है, न दुःख बुरा है, किन्तु सुख की आसक्ति बुरी है, दुःख का भय बुरा है।
- भूल करने के लिए कोई समय अच्छा नहीं है,
  भूल सुधारने के लिए कोई समय बुरा नहीं है।
- अधिकार लालसा से अकर्मण्यता पोषित होती है, उससे हिंसाजनित कार्यों की शुरुआत होती है।
- दृश्य के बिना द्रष्टा की दृष्टि स्थिर हो जाए वह है-ध्यान।
- पुद्गल तब तक प्रभावी है, जब तक जीव पर हावी है।
- जो बाहर की भीड़ में मशगूल हो जाएगा, वह भीतर के आनन्द से महरूम रह जाएगा।

(तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनि जी म.सा. के प्रवचनों से संकलित)

संस्मरण

अण्डा खाना पाप है

डॉ. दिलीप धींग

उस समय मैं राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, बम्बोरा में सातवीं कक्षा का छात्र था। कहीं से स्थानान्तरित होकर एक अध्यापक की नियुक्ति हमारे विद्यालय में हुई। उनका नाम था – धर्मपाल। किसी भी नये शिक्षक के आने पर सुबह प्रार्थना सभा में उनका परिचय दिया जाता था। हम विद्यार्थियों में भी यह चर्चा हो जाती थी कि 'नवा माड़साब आया' (नये मास्टर साहब आए हैं)। कुछ दिनों बाद नये शिक्षक के स्वभाव और पढ़ाने की शैली को लेकर भी विद्यार्थियों में चर्चा होती थी। धर्मपाल जी के बारे में एक चर्चा और चल पड़ी, वह थी– "नवा माड़साब अण्डा खावे।" इस चर्चा का स्रोत विद्यालय का ही एक छात्र था, जिसके माध्यम से उन्होंने अण्डे मंगवाए। यह बात मुझे अटपटी व अप्रिय लगी। छात्रों की समूह–चर्चा में भी मास्टरजी की इस आदत को अच्छा नहीं माना गया। स्कूली छात्रों की यह राय भारतीय संस्कृति तथा शैक्षणिक वातावरण के अनुरूप ही थी।

धर्मपाल जी एक कालांश हमारी कक्षा में भी पढ़ाते थे। एक दिन उन्होंने कहा– "किसी को कुछ पूछना हो तो पूछो।" विनय के साथ खरा कहने की प्रवृत्ति मुझमें बचपन से ही विद्यमान है। मैं हमेशा से कक्षा की अग्रिम पंक्ति में बैठा करता था। मैं बोला– "मुझे कुछ पूछना नहीं, अपितु कुछ कहना है।" वे बोले 'कहो।'

मैंने खड़े होकर जोर से कहा– "आप गुरुजी होकर अण्डे खाते हैं, यह अच्छी बात नहीं है। आप छात्र से अण्डे मंगवाते हैं, यह भी अच्छी बात नहीं है।" मेरे इस कथन पर पूरी कक्षा में सन्नाटा छा गया। शिक्षक होने के नाते वे मुझे डाँट सकते थे, लेकिन उन्होंने कुछ भी नहीं कहा। कालांश समाप्ति पर था। वे शर्मिन्दा होकर बिना कुछ कहे कक्षा कक्ष से चले गये। कक्षा में छात्रों के बीच मेरे कथन की चर्चा होने लग गई।

हमेशा की तरह उन दिनों भी रविवार और अवकाश के दिनों में विद्यालय बन्द रहता था। रोजाना स्कूल बन्द होने के बाद तथा छुट्टी के दिन

मुख्य प्रवेश द्वार पर तो ताला लग जाता था, लेकिन छोटी फाटक से कोई भी विद्यालय प्रांगण में जा सकता था। छोटी फाटक से विद्यालय प्रांगण में जाकर कुछ लोग खेल-कूद, व्यायाम आदि किया करते थे।

हमारे घर पर गाय-भैंस रहा करती थी। हमारे स्कूल से कुछ आगे ही एक तालाब और फिर जंगल है। प्रतिदिन सुबह वहाँ तक मवेशियों को छोड़ने जाना होता था। बम्बोरा में यह स्थिति आज भी विद्यमान है। छुट्टी के दिन गाय-भैंस छोड़ने का कार्य मैं कर लेता था। लौटते समय स्कूल प्रांगण में टहलने के बाद घर आता था।

इस क्रम में मैं एक रविवार को स्कूल प्रांगण में गया। शिक्षक के पढ़ाने के बाद बचे-खुचे चॉक के टुकड़े स्कूल प्रांगण में मिल जाते थे। मास्टरजी के अण्डे खाने की बात मेरे दिमाग में बैठी हुई थी। वहीं से चॉक के टुकड़े लेकर कमरों के बाहर लगे सीमेंट के स्थायी श्याम पट्ट पर मैंने लिखा- "अण्डा खाना पाप है, मांस खाना पाप है।" कमरों के बाहर चार-पाँच श्याम पट्ट लगे हुए थे। सभी पर ये वाक्य मैंने लिख दिये; साथ ही कुछ अनमोल वचन मुझे याद थे, वे भी मैंने लिख दिये।

दूसरे दिन सोमवार सुबह स्कूल प्रांगण में प्रार्थना सभा के लिए कतारें लग गई। छोटा कद होने से मैं हमेशा लाइन में सबसे आगे खड़ा रहता था। सामने मेरे लिखे वाक्यों पर सबकी नज़र थी। प्रार्थना होने पर श्याम पट्ट की ओर इशारा करके प्रधानाध्यापक ने पूछा "ये वाक्य किसने लिखे?"

मेरी कक्षा के छात्रों को कुछ दिन पूर्व मेरे द्वारा की गई टिप्पणी याद आई। मेरी लिखावट और स्वभाव के अनुसार उन्होंने यह अनुमान लगाया कि ये वाक्य दिलीप ने लिखे होंगे। लेकिन किसी ने कुछ नहीं कहा। कुछ पलों बाद मैंने ही हाथ खड़ा कर दिया। प्रधानाध्यापक ने कहा- 'शाबाश।' मेरी 'शरारत' की 'सजा' के तौर पर उन्होंने आगे कहा- "अब तुम्हारी कक्षा के बाहर वाले श्याम पट्ट पर सप्ताह में एक दिन अनमोल वचन तुम्हें ही लिखने होंगे।" मैंने धीरे से कहा- 'जी सर।' सभा में धर्मपाल जी भी थे। लेकिन वे कुछ नहीं बोले। प्रार्थना सभा विसर्जित हो गई।

काफी समय तक मेरे द्वारा अनमोल वचन लिखने का क्रम बना रहा।

निश्चित ही जो प्रेरक सूक्तियाँ मैं लिखता, उनमें आहार शुद्धि की बात भी समाविष्ट रहती थी। मुझे याद है, इन दो सूक्तियों को भी मैंने लिखा था- "जैसा खावे अन्न, वैसा होवे मन" तथा "जैसा पीवे पाणी, वैसी होवे वाणी।" अच्छी सूक्तियाँ संगृहित करने और लिखने के लिए मुझे एक पेन भी इनाम में मिला था।

मुझे बाद में पता चला कि मेरी टिप्पणी के बाद धर्मपाल जी ने बम्बोरा में कभी अण्डे नहीं खाए। सालभर बाद उनका अन्यत्र स्थानान्तरण हो गया। विदाई समारोह में उनके भाषण में अन्य बातों के अलावा वे बोले- "बम्बोरा मुझे हमेशा याद रहेगा। क्योंकि दिलीप धींग ने मुझे यहाँ अण्डे खाना छुड़ा दिया।" फिर मेरी तरफ देखकर बोले- "धींग! तुम बहुत बुद्धिमान और चतुर हो। तुमने तो गुरु को ही बदल दिया।" यह सुनकर मैं उठ खड़ा हुआ और धर्मपाल जी के पैर छूकर वापस मेरे स्थान पर बैठ गया। इस घटना से विद्यार्थियों में शाकाहार के प्रति एक सकारात्मक भाव बना। शिक्षा और शैक्षणिक जगत में शाकाहारिता (**Vegetarianism**) को आगे बढ़ाना वर्तमान समय की सबसे बड़ी जरूरत है।

-53, डोरे नगर, उदयपुर-313002 (राज.)

सामायिक : युग की मांग

डॉ. लक्ष्मीचंद जैन

सामायिक एक योग विद्या है। मन, वचन और काया का मौन विज्ञान है। सामायिक कैवल्य की अनुभूति प्रदान कराती है। ध्यान शिविर, योग प्रशिक्षण ये सब हमें एक घंटा समभाव में बैठना सिखाते हैं।

आप एक घंटा शांति से नियमपूर्वक सामायिक की वेषभूषा में सदगुरु आज्ञा से विधिपूर्वक बैठ जाइये, फिर देखिए अपनी अन्तश्चेतना में कितनी गजब की आत्मिक हलचल उत्पन्न होती है। हमें सामान्य से असामान्य दर्जा तो मिल ही जाता है, संसार की समस्त अच्छाइयाँ हमारे अन्दर केन्द्रीभूत होने लगती हैं।

- छोटी कसरावद (म.प्र.)

एकांकी

क्या मैं सही हूँ?

श्री दिलीप जैन

(आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना से लाभान्वित छात्र-छात्राओं हेतु)

विकास- मित्र! मैं बहुत परेशान हूँ। मुझे अपने भविष्य की बहुत चिन्ता सताने लगी है, क्योंकि मेरी परीक्षाएँ निकट आ रही हैं और तैयारी न होने से मैं चिन्ताग्रस्त एवं तनावग्रस्त हूँ, दिल कहता है कि इस बार तो मैं परीक्षा में उत्तीर्ण नहीं होऊँगा।

विश्वास- अरे मित्र! क्या बात करते हो?अभी तो परीक्षाओं के बहुत दिन बाकी हैं। यदि अभी भी नियोजित कार्यक्रम बनाकर तैयारी करो तो असम्भव कुछ भी नहीं है। सर्वप्रथम अपनी नकारात्मक सोच को बदलो।

विकास- पर, मित्र! मेरे अन्दर अन्य भी विभिन्न दुर्गुण हैं जिनके कारण भी मैं अपने आपको हतोत्साहित पा रहा हूँ, माता-पिता से दूर रहकर मैं गलत व्यसनों में पड़ गया, अपनी जेब खर्ची और अध्ययन खर्ची को मित्रों के साथ पार्टी, मौज मस्ती में खर्च करता रहा और अपने माता-पिता को बेवकूफ बनाकर हर माह बेहिसाब राशि मंगवाता रहा।

विश्वास- आश्चर्य है मित्र! तुम अपने माँ-बाप को ही धोखा देते रहे जो कि हमारे प्रथम गुरु एवं परम उपकारी हैं, परन्तु अब तुमने इसे स्वीकार किया, यह भी कोई कम बात नहीं। हम जैसे युवक बाहर जाकर अन्य युवाओं के साथ प्रतिस्पर्द्धा करने का प्रयास करते हैं, वह भी कुकृत्यों में स्पर्धा करना स्वयं के हाथों में हथकड़ियाँ डालने एवं आँखों पर काली पट्टी बाँधने के समान है। कोई बात नहीं मित्र! बीत गया सो बीत गया, जो गुजर चुका उसे भूल जाओ और सुसंस्कारित जीवनपद्धति अपनाकर अध्ययन के क्षेत्र में प्रतिस्पर्द्धा करो।

विकास– हे मित्र! मेरे सभी सहपाठी ''वेलेन्टाइन डे'' मनाने की योजना बना रहे हैं और उसके लिये राशि एकत्रित कर रहे हैं। क्या मुझे उसमें शामिल होना चाहिए।

विश्वास– गाय का बछड़ा हजारों-लाखों गायों में भी अपनी माता का स्तनपान करता है, तो मित्र! हम क्यों मातृत्व भाव से पूर्ण भारतीय संस्कृति को छोड़कर इस पाश्चात्त्य संस्कृति को अपनाएँ? यह चरित्र निर्माण की अपेक्षा मौज-शौक पर बल देती है, त्याग के स्थान पर भोग को महत्त्व देती है। इस उम्र में पढ़ना एवं चरित्र-निर्माण करना हमारा कर्तव्य है।

विकास– पर मित्र! मैं उन्हें कैसे समझाऊँ कि यह सब गलत है। यदि मैं उनसे ऐसा कहूँगा तो वे मेरी मजाक उडायेंगे, मुझे गंवार एवं ग्रामीण परिवेश वाला समझेंगे।

विश्वास– बस मित्र! यही सोच तो आज हमारे जैसे हजारों लाखों संस्कार युक्त युवाओं का पतन कर रही है कि ''वे क्या सोचेंगे''। मित्र! हमें अपना - अच्छा बुरा स्वयं सोचना है। व्यर्थ के कार्यों में समय बर्बाद नहीं करना है। हमें यह भी सोचना है कि हमारे क्रियापक्ष को देखकर हमारे माता-पिता एवं परिजन क्या कहेंगे?

विकास– मित्र! मुझे परीक्षा में सफलता के लिए अन्य क्या कार्य करने चाहिए, जिससे मेरी एकाग्रता और अध्ययनरुचि में वृद्धि हो?

विश्वास– मित्र! अध्ययन के प्रति रुचि एवं एकाग्रता तभी रहेगी जब चित्त शान्त होगा। चित्त की शान्ति हेतु नियमित सामायिक करनी चाहिए। परीक्षावधि के निकट आने पर भी हमें नियमित रूप से सामायिक तथा प्रातः उठते-सोते नवकार मंत्र का ध्यान अवश्य करना चाहिए।

विकास– हे मित्र! तुम मेरे कितने हितैषी हो, जो हर बार मेरी चिन्ता एवं तनाव का समाधान कर देते हो। अतः तुम्हें बहुत-बहुत धन्यवाद।

विश्वास– मित्र! मेरा लक्ष्य ''तुम्हारे जैसे युवाओं को सद्राह पर ले जाना एवं

संस्कार युक्त युवा समाज का निर्माण करना है।''

विशेष– हमें भी सोचना है कि कहीं हम भी विकास की तरह हमारे माता-पिता एवं परिजनों को धोखा तो नहीं दे रहे? यदि हम ऐसा कर रहे हैं तो यह अपने आपको भी धोखा देना है। यह प्रमाद एवं कर्मबन्ध का सबसे बड़ा कारण है, अतः इससे बचने का प्रयास करना चाहिए। हम भी अपने आपसे यही प्रश्न करें, क्या मैं सही हूँ?

– अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, घोड़ों का चौक, जोधपुर-342001 (राज.)

क्षणिकाएँ

सौ. प्रीति जैन

(1)

फलवार पेड़ को देखकर सूखे पेड़ ने कहा- ''तुम्हें देखकर मुझे मेरा अतीत याद आ जाता है।''

फलदार पेड़ बोला- ''तुम्हें देखकर मेरी आँखों में मेरा भविष्य घूमने लगता है।''

(2)

दर्पण! तुझे किस विशेषता के आधार पर आदर्श कहा गया है?

दर्पण बोला- ''मैं किसी भी प्रतिबिम्ब के प्रति आसक्त नहीं होता हूँ।''

(3)

मच्छरों से पीड़ित आदमी ने कहा- ''क्या इनसे भी बढ़कर कोई रक्त शोषक हैं।''

उड़ते हुए मच्छर ने कहा- ''यह तो मैंने आपसे ही सीखा है।''

(4)

वाणी वह प्रक्रिया है जो दूसरों से जोड़ती है।

मौन वह प्रक्रिया है जो अपने आप से जोड़ती है।

(5)

घूंघरू ज्यादा बोलते हैं, पैरों में पहने जाते हैं।

गहने ज्यादा नहीं बोलते, गले व सिर पर पहने जाते हैं।

–बजरिया, सवाईमाधोपुर (राज.)

स्वास्थ्य विज्ञान

उपवास से रोग निवारण कैसे?

श्री धनरूपमल सुराणा

यह सर्व विदित है कि रोग का मुख्य कारण शरीर में विषाक्त पदार्थों का जमाव एवं उनके निष्कासन की कमी है। शरीर अपनी सीमित जीवनी-शक्ति से निम्नङ्कित तीन कार्य प्रतिपल प्रतिक्षण अनवरत करता रहता है। चाहे हम जागते हैं, गहरी नींद में सोते हैं या कार्य में लगे रहते हैं-

1. पाचन- जो हम खाते हैं उसे पचाने का कार्य।

2. अवशोषण- पचे भोजन के पोषक तत्त्वों को शरीर द्वारा सोखना।

3. निष्कासन- नहीं पचे हुए भोजन एवं विषाक्त द्रव्यों को बाहर निकालना।

उपवास काल में आमाशय में भोजन नहीं जाने से शरीर को पाचन का काम नहीं करना पड़ेगा और परिणाम स्वरूप अवशोषण का कार्य भी नहीं करना पड़ेगा। अतः पाचन व अवशोषण के काम आने वाली शक्ति का बचाव हो जाता है और यह बची शक्ति भी निष्कासन के काम में लग जाती है। अतः तीन कार्यों में लगी शक्ति को अब केवल एक ही निष्कासन का कार्य करना है। इससे निष्कासन तेज गति से होगा, विषाक्त पदार्थ जल्दी बाहर निकलेंगे तभी बीमारी जल्दी दूर होगी। उपवास काल में कभी कभी विषाक्त पदार्थ का निष्कासन, उग्रता से होता है जिसे उभाड़ कहते हैं। ऐसा मालूम होता है रोग बढ़ गया है। इस अवधि में मुंह का स्वाद बिगड़ना, जीभ गंदी होना, खट्टी डकारे या कै होना, ज्वर आना इत्यादि लक्षण उभर आते हैं। ऐसी स्थिति में घबराना नहीं चाहिये तथा धैर्य रखना चाहिये। इससे कोई अप्रत्याशित हानिं नहीं होती है।

अगर बीमारी की अवस्था में भोजन करते रहते हैं तो जो निष्कासन के कार्य के अतिरिक्त शक्ति उपलब्ध होती है उसे प्राथमिकता के आधार पर पचाने के कार्य की ओर अग्रसर होना पड़ता है एवं निष्कासन बाधित हो जाता है। अतः रोग शरीर में दब जाता है। वास्तव में बीमारी की अवस्था में लिया भोजन रोगी की जगह रोग का पोषण करता है।

अल्पाहार तथा रसाहार में भी पाचन व अवशोषण के काम आने वाली

शक्ति का बचाव होता है और निष्कासन अधिक होता है। इससे भी स्वास्थ्य सुधार होता है और रोग भगाने में मदद मिलती है। जो लोग उपवास करने का मानस नहीं बना सकते, उन्हें अल्पाहार व रसाहार के प्रयोग करने चाहिये। इस प्रकार उनके आत्मविश्वास में वृद्धि होगी व उपवास के लिए मानस बना सकेंगे। उपवास से सम्बन्धित साहित्य के अध्ययन व लोगों के अनुभव जानने से भी उपवास के लिए प्रोत्साहन मिलता है।

इसी प्रकार स्वस्थ मनुष्य भी अगर कुछ अन्तराल से उपवास करता है तो उसके स्वास्थ्य स्तर में सुधार होता है। नये विषाक्त पदार्थों का निर्माण नहीं होगा तथा जमे विषाक्त पदार्थों का निष्कासन सरलता से होता है। रोग प्रतिरोध शक्ति में वृद्धि होती है। आत्म विश्वास बढ़ता है एवं मानसिक शांति का संचार होता है।

तीव्र रोग-सर्दी, जुकाम, खांसी-बुखार, बदहजमी, पेट-दर्द, सिरदर्द आदि में लघु उपवास से अप्रत्याशित लाभ देखने को मिलते हैं। कुछ मारक व जीर्ण रोग अपवाद के रूप में छोड़ दें तो अन्य ऐसे रोगों में उपवास से आश्चर्यजनक लाभ देखने को मिलते हैं। इसके लिए दीर्घ उपवास या कई लघु उपवास का सहारा लेना पड़ता है जो किसी अनुभवी एवं धैर्यवान चिकित्सक के परामर्श व मार्ग दर्शन में ही करने चाहिये, नहीं तो लाभ की जगह हानि होने की संभावना रहती है।

उपवास अगर सही उद्देश्य व तरीके से किये जाते हैं तो सभी प्रकार के तीव्र, जीर्ण व असाध्य रोगों में राहत के साथ मानसिक रोगों और क्रोध, ईर्ष्या, घृणा, शोक इत्यादि पर भी नियंत्रण संभव है। जीवन में उपवास का उचित समायोजन रोग रहित दीर्घ जीवन जीने में अवश्य सहायक होगा।

-बी-3, इण्डस्ट्रियल एस्टेट, न्यू पावर हाउस रोड, जोधपुर-342003 (राज.)

नया प्रश्न

मैं जिनवाणी में प्रकाशनार्थ रचना भेजती हूँ, किन्तु वह प्रकाशित नहीं हो पाती है। आप मुझे सुझाव दें कि मैं किस प्रकार अपनी रचना में सुधार करूँ, जिससे वह प्रकाशित हो सके।

-चेतना जैन (काल्पनिक नाम)

युवा स्तम्भ

युवा अपनी दिशा बदलें, दशा बदल जायेगी

श्री पदमचन्द गांधी

युवा वर्ग में जोश पूरे उफान पर होता है लेकिन उफान के आवेग में वे विवेकपूर्ण समझदारी को नज़र अन्दाज कर देते हैं। युवा शक्ति एक ऐसी प्रचंड वायु है, जब चलती है तूफान खड़ा कर देती है। आज की युवा पीढ़ी का सच है- सब कुछ, कुछ ही पल में हासिल करना। सूचना क्रान्ति के इस युग में वे जिन्दगी को कम्प्यूटर के माउस के समान मानने लगे हैं कि क्लिक किया और मनचाही चीज स्क्रीन पर आ गयी, परन्तु जिंदगी कम्प्यूटर के समान नहीं है। इसमें संवेदनाएँ हैं, भावनाएँ हैं, इसमें चेतना है। आज के युवा बगैर कुछ किए सब कुछ पाना चाहते हैं। कम समय में अधिकतम उपलब्धि इनका सपना है। आज का युवा किसी भी प्रकार, कुछ भी करके अर्थोपार्जन करना चाहता है। इसके लिए वह अपना सर्वस्व मूल्य चुकाने के लिए भी हिचकता नहीं है। अर्थोपार्जन के लिए वह जीवन के सारे मूल्य, मापदण्ड एवं नैतिकता को ताक में रख देता है। सबसे बड़ा सम्पदावान एवं धनवान बनना उसकी प्रथम प्राथमिकता बन गयी है।

अर्थोपार्जन का मूल्य सदियों से रहा है, लेकिन पागलपन की हद तक इसके पीछे पड़ जाना एक मनोरोग का सूचक है। भारतीय संस्कृति में अर्थ को उच्चस्थान दिया गया है, लेकिन सर्वोच्च स्थान कभी नहीं दिया गया। यह बहुत कुछ है, लेकिन सब कुछ नहीं है। अर्थोपार्जन में नीति, मर्यादा और नैतिक मूल्यों का महत्त्व होता है, किन्तु युवा शक्ति ने इन्हें पीछे धकेल दिया है। शास्त्र स्पष्ट करते हैं कि अर्थ का अर्जन धर्मपूर्वक होना चाहिए। जहाँ धर्म है, सत्यता है, नीति है, संवेदना है, वहाँ नैतिक मूल्यों की स्थापना होती है। इसलिए जो व्यक्ति इसके मूल्यों का अधिकारी है वही अर्थ की महत्ता समझता है, जानता है तथा उसका सदुपयोग करता है। इसी कारण अपनी संस्कृति में अर्थ को समाजवादी सम्पदा मानकर सुरक्षित एवं संरक्षित कर दिया गया है। नैतिक कवचों से सुरक्षित रहने की वज़ह से अर्थ का अनर्थ नहीं होता, लेकिन आज इसके विपरीत कार्य हो रहे हैं।

आज की युवा पीढ़ी को अपने सांस्कृतिक मूल्यों से कोई लेना-देना नहीं है। इनकी नज़र में वे सभी बातें, उनकी अर्थ-उपलब्धि में 'रोड़ा' बन जाती हैं, फिर वे चाहे कितनी भी श्रेष्ठ एवं श्रेयस्कर क्यों न हों, उनकी दृष्टि में वे व्यर्थ हैं। वह अपनी राह में आने वाले जीवन-मूल्यों एवं नैतिकता को रोड़ा मानने के कारण इतना संकीर्ण हो चुका है कि और कुछ उसे नज़र ही नहीं आता। ऐसी स्थिति में अन्य सभी मूल्यों का तो अवमूल्यन निश्चित रूप से होगा ही।

युवा को परिवार, कुल, समाज एवं राष्ट्र के विकास की रीढ़ की हड्डी माना जाता है। यदि ये जुट जाएं तो पत्थर में से सोना पैदा कर सकते हैं। यदि ये लुट जाएं तो समृद्ध राष्ट्र भी चंद चीजों के लिए मोहताज हो सकता है। यह सत्य है कि अर्थ से राष्ट्र में समृद्धि आती है, व्यक्ति और समाज की क्रयशक्ति बढ़ती है, जीवन स्तर उच्च बनता है। मनोवैज्ञानिक भी इस बात को मानते हैं कि युवा उम्र में अर्थ का आकर्षण प्रबल होता है, पद और प्रतिष्ठा तो इसके बाद पनपती है। इसी के कारण अब डॉक्टर, इंजीनियर, वैज्ञानिक जैसे सभी प्रोफेशनल पाठ्यक्रमों के साथ एम.बी.ए. एवं कम्प्यूटर पाठ्यक्रम एक चरम स्तर पर पहुँच गये हैं। क्योंकि इनमें अधिक अच्छे 'प्लेसमेन्ट' एवं अच्छी 'सेलेरी' की प्रबल सम्भावनाएँ हैं। अधिकतम कम्पनियाँ नौकरी के रूप में युवाओं को अधिक प्राथमिकता प्रदान करती है। इसी वजह से बरिस्ता, कॉफी हाउस, मैकडोनाल्ड, फाइवस्टार होटल, विदेशी रेस्तरां, सॉफ्टवेयर कम्पनियाँ, मल्टी नेशनल बैंक आदि में आकर्षक युवकों एवं युवतियों का जमघट लगा रहता है। इसके अलावा छोटे स्तर पर काल सेन्टर, मोबाइल गैलरियाँ, पेट्रोल पम्प, शॉपिंग मॉल आदि में काम करने वाले अधिकतर युवा हैं।

युवाओं की बदलती मानसिकता का सच स्पष्ट करता है कि इनके लिए पढ़ाई का महत्त्व "पैसा कमाने से कभी अधिक नहीं हैं।" ऐसी मानसिकता से अभिभावक परेशान एवं चिन्तित हैं, क्योंकि इनकी कच्ची उम्र एवं ऐसी मानसिकता के कारण ये कभी भी भटकाव के भंवर में फंस सकते हैं। आज के युवा शौक-मौज हेतु पढ़ाई में कम एवं नौकरी में अधिक ध्यान देते हैं जो अनेक समस्याओं को खड़ा कर रही है। मनोवैज्ञानिक मानते हैं कि आजकल के ऐसे युवाओं में कुंठा, तनाव, अपराध बोध, आक्रामकता, ईर्ष्या, द्वेष आदि मनोविकार अधिक पनपते हैं जो इनके भीतर गहरे अपराध बोध को

जन्म देता है, इससे उनका व्यक्तित्व विकारग्रस्त हो जाता है।

युवा पीढ़ी की रुग्ण एवं जर्जर मानसिकता के गहरे कारणों को गिनाने वाले मनोवैज्ञानिक प्रोफेसर जैनेन्द्र त्रिपाठी का कहना है कि युवाओं में पैसे की ललक बढ़ी है। आज के युवाओं की सामान्य आवश्यकताओं में मोबाइल, बाइक, लेपटॉप, इन्टरनेट आदि जुड़ गये हैं। एक सामान्य एवं मध्यम परिवार इन आवश्यकताओं को पूरा करने में असमर्थ होता है, ऐसे में युवा इनकी पूर्ति की चाहत में ऐसी राह पकड़ लेते हैं जो कभी-कभी उनके लिए आत्मघाती सिद्ध हो सकती है। उनमें जोश होता है लेकिन 'होश' नहीं होता, जिससे आज की युवा पीढ़ी पूरी गिरफ्त में आई प्रतीत होती है।

इस प्रकार युवा मनोदशा को भटकाने के लिए अनेक प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष कारण हैं, जिन्हें सन्मार्ग पर लाने हेतु इनकी दिशा को बदलने के लिए भगीरथ प्रयास आवश्यक है। इनकी दिशा एवं दशा को परिवर्तित करने के लिए अथक प्रयास आवश्यक है जो सबके समवेत एवं संगठित योगदान से सम्भव है। ज्ञानीजन कहते हैं कि इसके लिए गहरी संवेदनशीलता एवं समस्या को समझाने व निदान खोजने की पैनी दृष्टि की जरूरत है। संवेदनशीलता को समझना आवश्यक है, इसको न समझने के कारण ही भटकाव होता है। अपनापन एवं आत्मीयता के अभाव में तमाम विकृतियां उत्पन्न होती हैं। इन विकृतियों का पोस्टमार्टम किया जाए तो इसी का अभाव परिलक्षित होगा।

व्यक्ति-विकास एवं जीवन-प्रबन्धन के लिए एकांगी विचारधारा के स्थान पर बहुआयामी दृष्टिकोण एवं कर्मकुशलता की जरूरत है। इसके लिए ध्येय उच्च एवं विचार उत्कृष्ट होना चाहिए। युवाओं के लिए पैसों से अधिक फौलादी चरित्र एवं चट्टानी मनोबल की जरूरत है। इसके आधार पर आसमान की बुलंदियों को छुआ जा सकता है। आज राष्ट्र को ऐसे ही ऊर्जावान, चरित्रवान, श्रमशील एवं विवेकवान युवाओं की आवश्यकता है। युवामन अपनी मनोदशा को समझे। नीति में दिशा परिवर्तन करे तथा एकांगी दृष्टिकोण को छोड़कर संवेदना एवं नैतिकता के बहुआयामी दृष्टिकोण को समझे। यदि गेहूँ पैदा करेंगे तो 'खांखला' तो स्वतः ही मिल जायेगा।

-25, महेश नगर विस्तार (बी), बैंक कॉलोनी, गोपालपुरा, जयपुर (राज.)

नारी स्तम्भ

आओ! घर को स्वर्ग बनायें (2)

श्रीमती रतन चोरड़िया

मुदुभाषी, अल्पभाषी एवं सत्यभाषी व्यक्ति सबका मन मोह लेता है, सबको अपना बना लेता है। जिसकी वाणी पर संयम होता है वह किसी भी स्थिति, परिस्थिति में हित-मित व मधुर शब्दों का प्रयोग करके सबका मन जीत लेता है। पर आज घर-घर के कलह का कारण हमारी यह छोटी सी जिह्वा है। कटु, कर्कश, मर्मभेदी, व्यंग्यात्मक, असत्य एवं अविचारित वाणी से कलह व झगड़े की जड़े सिंचित होती हैं। जरा सोचें कि इस जीभ ने कितनों को जलाया, कितने जीवन बर्बाद किये, कितने हृदयों को बींधा, छलनी बनाया। वचन के घाव बहुत दुःख व दर्द पहुँचाते हैं। वे बहुत मुश्किल से मिटते हैं। अतः घर को स्वर्ग बनाना है तो हम सदैव मधुर बोलें, दूसरों के गुणों की प्रशंसा करें, गुणगान करें। प्रशंसा एक ऐसा टॉनिक है, जो घर के वातावरण में नई स्फूर्ति, प्रेरणा एवं प्रेम का संचार करता है।

परिवार में धार्मिक वातावरण, वृत्तियाँ, प्रवृत्तियाँ एवं सुसंस्कार होते हैं, तो वे समूचे परिवार को एक सूत्र में बांधकर रखते हैं, जैसे सामूहिक प्रार्थना, स्वाध्याय आदि। इनमें सभी सदस्य अनुकूलता व प्रतिकूलता को अपने कर्म का उदय मानकर चित्त का संतुलन बनाए रखते हैं। वे विचार करते हैं कि सुख व दुःख देने वाले दूसरे कोई नहीं हैं, मेरे ही बंधे हुए कर्म मुझे सुख-दुःख देते हैं। मैंने ही कर्मों को बांधा और मैं ही इन कर्मों को समभाव से सहनकर तोड़ सकता हूँ। मेरी ही बात सही है और दूसरे गलत हैं, ऐसी आग्रहवृत्ति जहाँ होती है वहाँ टकराव के अंकुर फूटते हैं। अतः कर्म सिद्धान्त को समझेंगे तो कभी टकराव नहीं होंगे। घर को स्वर्ग बनाना है तो सोचें जीवन कैसे जीयें, पारिवारिक रिश्तों में मधुरता कैसे बढे ? हम अपनी बात को कैसे कहें, बड़ों के सामने किस तरह बोलें? बड़ों के प्रति कर्तव्यों का निर्वाह कैसे करें? छोटों का साथ लेकर चलने का तरीका क्या है? मित्रों एवं परिचितों के साथ कैसा व्यवहार करना चाहिये आदि का चिन्तन आवश्यक है तथा तदनुरूप आचरण अभीष्ट है।

प्रायः आजकल देखा जाता है कि हर घर में साधन बढ़े, सुविधायें बढ़ीं, फिर भी घर-घर में कलह तथा मनमुटाव बढ रहे हैं। ये सारी बातें मात्र आज

आदर्श व उपदेश की बनकर रह गई हैं। व्यवहारिक जीवन में हम बहरूपिये का आचरण करने लग गये हैं। आज मात्र एक या दो बच्चे होने से माता-पिता बच्चों की सभी इच्छाओं को पूरी कर, उनके हित-अहित का ध्यान न रखकर उनका पूरा जीवन बर्बाद कर रहे हैं। आज माता-पिता बच्ची को विदा करते समय उसके कान में सीख देते हुए कहते हैं कि बेटी-ससुराल जा रही हो, पति को अपने वश में रखना,अन्याय करे तो उनका जबरदस्त मुकाबला करना, हम तेरे साथ हैं। ऐसी शिक्षा बेटी के जीवन को संवारने में सहायक होती है या विच्छेद में? लेकिन संस्कारी माता-पिता आज भी बेटी को शिक्षा देते हैं- ''बेटी आज से तेरा अपना घर ससुराल है। सास-श्वसुर तुम्हारे माता-पिता हैं। तुम्हारे जेठ-ननद ही तुम्हारे भाई-बहिन हैं। माता-पिता का घर तो बेटी के लिये एक पाठशाला है। पति का घर ही तेरा अपना घर है। अब तुम पर हमारा कोई अधिकार नहीं है। ससुराल से मायके न आ सको तो जिद्द मत करना। तुम्हारे पति एवं अपने परिवार वालों का ध्यान रखना अब तुम्हारी जिम्मेदारी है। पति या सास-ससुर से झगड़ा कर मेरी चौखट पर मत आना। झूठे प्रेम के आवेग में या क्रोध व अहंकार में भरकर मेरे दरवाजे पर मत आना,वरना मेरे दिल के दरवाजे में तुम्हें प्रवेश नहीं मिलेगा। मेरा स्वप्न टूट जायेगा, मेरी खुशियाँ बिखर जायेंगी। अपने घर को क्लेश रहित ऐसा स्वर्ग बनाना, जहाँ भगवान् को भी तुम्हारे घर आकर रहने का मन करे। जिन्दगी में कभी भी गलत निर्णय न लेना, जिसके छींटे पूरे परिवार पर उड़ें। जिसका विपरीत परिणाम सबको भुगतना पड़े। मेरी आँखे तेरे दुःख के आंसू नहीं देखना चाहती, बल्कि पूरे कुटुम्ब के लिए प्रेम व करुणा का सागर उमड़ते देखना चाहती है। अपने सास-श्वसुर व पति की सेवा करके उनके दिल को ठंडक पहुँचाओगी तो दुनियाँ की तमाम खुशियाँ व सुख घर बैठे तुम्हें मिल जायेंगे। निःस्वार्थ प्रेम अमूल्य होता है। ऐसा करने पर तुम्हें अपने ही घर में स्वर्ग का आनन्द मिलेगा।

इसी तरह की भावना तथा सुसंस्कार यदि माँ अपनी बेटी को देती है तो वह बेटी घर की स्वामिनी ही नहीं वरन् सबके दिल की मालकिन बनकर घर को स्वर्ग बनाती है। बेटी से बहू का दर्जा बहुत ऊँचा है। बेटे व बेटी का मुँह तो माँ बाप जन्म होते ही देख लेते हैं, पर बहू का सलौना सा मुँह बीस इक्कीस वर्षों के बाद देखने को मिलता है। बहू के लिये कितनी खुशी माँ के दिल में होती है, सास कितने अरमान,कितनी कल्पनाएँ, आशाएँ एवं सपने संजोकर अपने दिल में

रखती है। पर जब बहू बेटी बनकर नहीं, बल्कि बेटे को माँ से जुदा करती है तो उस माँ पर क्या बीतती है,शायद मरने से भी भंयकर दुःख होता है। बहू भी अपने घर, परिवार, भाई-बहिन सबको छोड़कर ससुराल आती है और वहाँ पर आकर यदि उसे मान-सम्मान,अपनत्व नहीं मिलता तो उस पर क्या बीतती है। अतः बहू को बेटी से बढ़कर मानें। बेटी पराया धन है, पर बहू घर की लक्ष्मी है। घर की लक्ष्मी का अपमान, अनादर, कभी न करें। बहू को भी चाहिये कि सास को माँ से भी बढकर समझे। ताली बजाने के लिये दोनों हाथ चाहिये वैसे ही घर को स्वर्ग बनाने के लिये सास देवी स्वरूपा तथा बहु लक्ष्मी स्वरूपा हो। जब घर के प्रत्येक सदस्य का आदर जीवित मूर्ति तुल्य हो तब घर मंदिर बनता है।

हम अपने घर को बहुत प्यार दें,प्रेम दें, लेकिन समय पड़े तो बच्चों को कहने की व डांटने की, समझाने की भी हिम्मत रखें। यदि उस समय आप ऐसा सोचकर हिचकिचा रहे हैं कि मेरे ऐसा करने पर हो सकता है एक दिन हमारा स्वर्ग जैसा घर नरक तुल्य बन सकता है। अपने बच्चों को सी.ए.,इंजीनियर या डॉक्टर की डिग्री ही न दें उसे लौकिक व्यवहार की सीख भी दें,अपने घर की मर्यादाओं को भी समझायें। उसे समझायें कि पैसा परिश्रम से कमाया जाता है, इसलिए पैसों को व्यर्थ में खर्चकर उसका दुरुपयोग न करें। पिता के पैसे पर भी ऐश न करें,खुद कमाकर भी दुरुपयोग न करें। उसे एहसास करायें कि पैसा पेड़ पर नहीं उगता, न आकाश से बरसता है, उसे परिश्रम कर कमाया जाता है। इसलिये पैसे का मूल्यांकन करना सीखो। पैसे को जब बेटा व्यर्थ उड़ाता है तो बाप को बड़ी तकलीफ होती है, कारण कि उसने मेहनत से कमाया है। वही पैसा बेटा घंटों मोबाइल पर बातें करके खर्च कर देता है। जो गाड़ी इधर-उधर व्यर्थ दौड़ा रहे हो उसका पेट्रोल नल में पानी की तरह नहीं आया है, बल्कि गाढे परिश्रम की कमाई से मिला है। जैसे आप बच्चों की हर मर्जी पूरी करते हो क्या यह जरूरी नहीं कि वे भी आपकी मर्जी का खयाल रखें।

नारी की महत्ता को पशु-पक्षी भी अच्छी तरह से समझे हुए हैं, लेकिन नर कहलाने वाले प्राणी इस पहले व छोटे से पाठ को भी नहीं समझते। यह हमारा दुर्भाग्य है। शेर कभी शेरनी को मारता नहीं है, नाग कभी नागिन को नहीं डसता। गधा कभी गधी को लात नहीं मारता। बैल कभी गाय को सींग नहीं मारता। कुत्ता कभी कुतिया को दांत नहीं गढाता। यहाँ तक कि पक्षी भी अपनी मादा से लड़ाई-झगड़ा नहीं करतें। लेकिन नर समझदार होकर अपनी ही पत्नी से लड़ाई-झगड़ा

एवं मारपीटकर तलाक देता है। उसे जिन्दा जला देता है।

जो एक औरत को अपने अनुकूल नहीं बना सकते, जो औरत के साथ अभद्र व्यवहार करते हैं, औरतों पर हाथ उठाते हैं ऐसे मूर्खों को न तो प्यार करना आता है और न गुणों की कद्र करना आता है। वे तो अपने सिर पर स्वयं कुल्हाड़ी मारते हैं। अतः उचित यही है कि पति-पत्नी दोनों एक दूसरे को सम्मान-प्रेम करें, आदर दें। पतिव्रता नारी एक तीर्थ है जो स्वयं भी पवित्र है व दूसरों को भी पवित्र कर देता है। नारी दोनों ही परिवारों को देहली दीपक की तरह उज्ज्वल व प्रकाशित करती है।

-चोरड़िया भवन, जालोरी गेट के बाहर, जोधपुर (राज.)

प्रतिकार

डॉ. दिलीप धींग

ईर्ष्यावश उन्होंने
हमारे दुग्ध-पात्र में
नीम्बू डाल दिया
हमने रसगुल्ले बना लिये।
छलवश उन्होंने
हमारे स्वर्ण पात्र में
विष उँडेल दिया
हमने औषध बना ली।
खीजकर उन्होंने
हम पर काँटे उछाले
हमने उपवन के बाड़ लगा दी।
क्रोधवश उन्होंने
हमको गालियाँ दीं
मगर हमने नहीं ली।
अब वे
हाथ मल
मन मसोस कर
बैठे हैं।

-उमराव सदन, 53, डोरे नगर, उदयपुर-313002

बाल स्तम्भ

मॉँस सस्ता या महँगा?

श्री मधुकर मुनि जी

बाल-स्तम्भ के अन्तर्गत प्रकाशित कहानी को पढ़कर अन्त में दिए गए प्रश्नों के उत्तर 5 मई 2009 तक श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, घोड़ों का चौक, जोधपुर-342001(राज.) के पते पर प्रेषित करें। श्रेष्ठ उत्तरदाताओं को श्री महावीरचन्द जी बाफना, जोधपुर द्वारा अपनी धर्मपत्नी एवं श्रीमती अरूणा जी, श्री मनोजकुमार जी, श्री कमलेश कुमार जी बाफना की माताश्री स्व. श्रीमती मोहिनीदेवी जी बाफना की पुण्य-स्मृति में पुरस्कृत किया जा रहा है। पुरस्कारों की राशि इस प्रकार है- प्रथम पुरस्कार-250 रुपये, द्वितीय पुरस्कार-200 रुपये, तृतीय पुरस्कार- 150 रुपये तथा 100 रुपये के पाँच सान्त्वना पुरस्कार।

मगधेश श्रेणिक की सभा में अनेक प्रकार की चर्चाएँ चलती थीं। राजनीति से लेकर सामान्य जीवन-व्यवहार तक की बातों पर विचार होता था। एक दिन महाराजा ने पूछा- "उदर-पूर्ति करने के लिए सबसे सस्ती और सुलभ वस्तु क्या है?"

कुछ सामंतों ने कहा- "अन्न। अन्न जैसा सस्ता साधन और क्या होगा!" कुछ ने जंगल के कंदमूल-फल बताये। अन्न के लिए खेती करनी पड़ती है, परिश्रम लगता है, खरीदने के लिए पैसा भी चाहिए, किंतु कंदमूल के लिए कुछ भी नहीं चाहिए, सिर्फ जंगल में जाओ और ले आओ। कुछ सामंत पीछे बैठे थे जो मृगया रसिक और माँस-लोलुप थे। उन्होंने कहा- "महाराज! सबसे सस्ता, सुलभ और सबसे स्वादिष्ट भोजन तो माँस है। धनुषबाण लेकर जंगल में गये, शिकार किया कि एक दो पशु के माँस से पूरे परिवार का पेट भर जाता है, खाने में भी स्वादिष्ट और पैसा भी नहीं लगे। 'हलद लगे न फिटकरी रंग चोखा आये', ऐसी वस्तु मांस के सिवाय और कुछ भी नहीं।"

मगधेश श्रेणिक एवं महामंत्री अभय ने सामंतों को समझाया "मूक जीवों की क्रूर हिंसा करके प्राप्त किया गया माँस क्या सस्ता है? क्या उनके प्राणों का कोई मूल्य नहीं?"

सामंतों ने कहा- "महाराज! इन मूक पशुओं से जंगल भरे हैं, यदि इनका वध नहीं किया जायेगा तो बढ़ते-बढ़ते मनुष्य जाति के लिए सिरदर्द बन जायेंगे। फिर इन तुच्छ पशुओं के जीवन का क्या मूल्य है? क्या उपयोग है?"

अनेक तर्क-वितर्क चले, पर हिंसा रसिक सामंतों की समझ में यह बात नहीं आई कि प्राणी चाहे छोटा हो या बड़ा, सभी को अपने प्राण प्यारे और मूल्यवान होते हैं।

सभा विसर्जित हो गई। सभी अपने-अपने स्थान को चले गये। रात का द्वितीय प्रहर चल रहा था कि महामंत्री अभयकुमार एक लाख स्वर्णमुद्रा साथ में लेकर एक सामंत के भवन पर पहुँचे। सामंत गहरी नींद में सोया था, उसे जगाया। अचानक महामंत्री को सामने खड़ा देखकर सामंत हड़बड़ा गया। विनम्रतापूर्वक उसने पूछा-"अभी मध्य रात्रि में आपने यहाँ आने का कष्ट किया?"

अभयकुमार-"बात ऐसी ही है। संध्याकाल में वनविहार से लौटने के बाद महाराज अचानक अस्वस्थ हो गये हैं। वैद्य आये, उपचार किया, पर कोई लाभ नहीं हुआ। बीमारी बढ़ती जा रही है। राजवैद्य ने अनेक प्रयोग करने के बाद एक उपाय बताया है- "किसी हृष्टपुष्ट स्वस्थ मनुष्य के कलेजे के एक तोला माँस में औषधि बनाकर देने से महाराज की बीमारी ठीक हो सकती है', अन्यथा रोग असाध्य है। मैंने खूब सोच-विचार किया। आप जैसा स्वामिभक्त कोई दूसरा नहीं है, इसलिए महाराज के प्राणों की भिक्षा माँगने आपके पास आया हूँ, आप मुझे निराश मत लौटाइए....।" अभयकुमार की आँखे डबडबा आईं।

सामन्त की घिग्घी बँध गई। वह गिड़गिड़ाकर महामंत्री के चरणों में गिर गया- "मंत्रीश्वर! मुझे माफ कीजिए! मेरे पीछे बहुत बड़ा परिवार है, इसका क्या होगा?

अभय ने खनखनाती स्वर्णमुद्राएँ सामंत के सामने डाल दीं-"यह लो! एक लाख स्वर्णमुद्राएँ, तुम्हारा परिवार इससे अपना पालन-पोषण

करेगा, और जरूरत होगी तो और भी दी जायेंगी...मुझे तो सिर्फ एक तोला कलेजा चाहिए।''

सामंत रोने लग गया। ''महामंत्री! मुझे माफ करो! एक के बदले मैं दो-चार लाख दे देता हूँ, आप किसी अन्य व्यक्ति को यह धनराशि देकर उसी से मांग लीजिए न'' और सामंत ने तुरन्त चमचमाते हीरे-मोती का ढेर अभयकुमार के सामने लगा दिया।

अभय दूसरे सामंत के पास पहुँचा। उसके सामने भी यही प्रस्ताव आया। प्रस्ताव सुनते ही उसकी हृदयगति तेज हो गई। ''महाराज! मेरे पीछे यह युवा पत्नी है, दो छोटी-छोटी कन्याएँ हैं और वृद्ध माता-पिता हैं। मैं सबकी आशाओं का एक तारा हूँ। मैं मर गया तो ये सब जीवित नहीं रहेंगे, कृपया मुझे छोड़ दीजिए।''

अभय ने एक लाख स्वर्णमुद्रा और प्रथम सामंत के द्वारा दिये गये हीरे-मोती उसके सामने रखे और कहा-''चिन्ता मत करो! तुम्हारे पीछे सबकी व्यवस्था राज्य करेगा। तुम तो सम्राट् के लिए अपना बलिदान कर रहे हो, तुम्हारा यश अमर हो जायेगा.......!''

''नहीं ! नहीं ! मुझे अमर यश नहीं चाहिए। मैं अपना बलिदान नहीं कर सकता। मैं दो लाख स्वर्णमुद्रा और देता हूँ, किसी अन्य व्यक्ति को यह धन देकर उसके माँस से महाराज के प्राणों की रक्षा कीजिए। मुझे छोड़ दें।''- सामंत ने दीन स्वर में कहा।

दो लाख स्वर्णमुद्रा और लेकर अभय वहाँ से भी निराश लौटे। यों रातभर में पाँच-सात सामंतों के द्वार खटखटाये और सभी ने गिड़गिड़ाकर प्राणों की भिक्षा माँगी। बदले में सभी ने दो चार लाख स्वर्णमुद्राएँ भी अपनी ओर से दे दीं।

प्रातः राजसभा में सभी सामंत उपस्थित थे। राजा के स्वास्थ्य के सम्बन्ध में जानने की उत्सुकता बढ़ रही थी और सबसे बड़ी उत्सुकता थी कि किस स्वामिभक्त ने अपने कलेजे का माँस देकर महाराज की जीवन-रक्षा की है?

तभी खनखनाती स्वर्णमुद्राओं का ढेर लगाते हुए महामन्त्री उपस्थित हुए। सभा में सन्नाटा था। अभय ने खड़े होकर राजा का अभिवादन कर कहा- "महाराज! कल हमारी सभा में कुछ सामंतों ने कहा था कि माँस सबसे सस्ता और सुलभ है। मैंने उनके कथन की सत्यता का पता लगाया। मैंने इन सामंतों के घर भटकते-भटकते रात काली कर दी, लाखों स्वर्णमुद्राएँ देने के लिए तैयार था, फिर भी एक तोला माँस नहीं मिला और एक तोला माँस के बदले में इतनी ढेर सारी स्वर्णमुद्राएँ तथा हीरे-मोती आदि मिले हैं।"

राजा श्रेणिक आश्चर्यपूर्वक सामंतों की ओर देखने लगे। सामंतों का बुरा हाल था, काटो तो खून नहीं! अभयकुमार ने कहा-"महाराज, क्या फिर भी हमारे सामंत यही कहते हैं कि "माँस सस्ता है, सुलभ है! जितना चाहे मिल जाये।"- अभय ने एक गहरी दृष्टि सामंतों की तरफ डाली। सर्वत्र सन्नाटा था।

महाराज श्रेणिक ने सामंतों से पूछा-" क्या महामात्य का कथन सही है?"

दबे स्वर में सामंतों ने सत्य को स्वीकार किया।

अभयकुमार ने राजा के समक्ष अपनी परीक्षा-विधि का रहस्य खोलते हुए कहा-"महाराज! मनुष्य दूसरे के प्राणों को तुच्छ समझता है, किन्तु जब खुद पर बीतती है तब उसे पता चलता है कि ये प्राण कितने महँगे हैं। इस जीवन की कितनी जिम्मेदारियाँ हैं और घड़ी भर की जिन्दगी का कितना मूल्य है। एक तोला अपने माँस के बदले में लाख, दस लाख, करोड़ स्वर्णमुद्राएँ भी तुच्छ हैं.... यह सत्य हमारे सामंतों ने अनुभव किया है। अब मैं इतना ही कहना चाहता हूँ, जैसा मूल्य अपने प्राणों का समझते हैं वैसा ही मूल्य दूसरे के प्राणों का समझें....... चाहे वह मूक प्राणी हो, पशु हो या पक्षी हो!"

सामंतों के सिर नीचे झुक गये। अभयकुमार के तर्क एवं अनुभव प्रधान वचनों से उनका हृदय कम्पित हो उठा और अनेक सामंतों ने वहीं पर

अपने शिकार के धनुष-बाण तोड़ डाले।

प्राणिमात्र के साथ आत्मानुभूति करने का महावीर-संदेश चारों ओर गूँज उठा।

प्रश्न :-

1. 'माँस सस्ता है' - इस सम्बन्ध में माँसाहारी सामन्तों ने क्या तर्क दिया?
2. क्या हमें स्वस्थ होने के लिए माँसाहारी औषधियाँ लेनी चाहिए?
3. अभयकुमार क्या अपने कार्य में सफल हुए? कारण सहित उत्तर दीजिये।
4. अर्थ बताइए-
   1. घिग्घी बन्ध जाना, 2. रात काली करना, 3. काटो तो खून नहीं।
5. समास-विग्रह कीजिये-
   1. मगधेश, 2. संध्याकाल, 3. वनविहार, 4. हृष्टपुष्ट, 5. स्वर्णमुद्राएँ, 6. मंत्रीश्वर।
6. आपका एक मित्र माँसभोजी है। उसे शाकाहार की ओर प्रवृत्त करने के लिए आप क्या तर्क देंगे?

बाल-स्तम्भ [फरवरी-2009] का परिणाम

जिनवाणी के फरवरी-2009 के अंक में बाल-स्तम्भ के अंतर्गत 'संस्कार-परिवर्तन' कहानी के प्रश्नों के उत्तर 28 बालक-बालिकाओं से प्राप्त हुए, उनमें से प्रतियोगिता के विजेता इस प्रकार हैं। पूर्णांक 20 में से दिये गये हैं-

पुरस्कार एवं राशि	नाम	अंक
प्रथम पुरस्कार-250/-	सौरभ भंडारी-पीपाड़ सिटी	18.75
द्वितीय पुरस्कार-200/-	सेजल भंसाली-जलगांव	18.5
तृतीय पुरस्कार- 150/-	पीयूष बाफना-भोपालगढ़	18.25
सान्त्वना पुरस्कार- 100/-	सूचिता जैन-कपासन	17.5
	सपना जैन-अमरावती	17.5
	अंकुश जैन-खेरलीगंज	17.5
	यश जैन-अलीगढ़	17.5
	कानन जैन-जोधपुर	17.5

स्वास्थ्य विज्ञान

आरोग्य का मूलाधार : नाभि सन्तुलन

डॉ. चंचलमल चोरडिया

नाभि का महत्त्व

मानव जीवन के विकास, संचालन एवं नियंत्रण में नाभि की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। माता के पेट में गर्भाधान से लेकर जीवन के अंतिम क्षणों तक नाभि केन्द्र सजग, सतर्क एवं क्रियाशील रहता है। मृत्यु के पहले हृदय की धड़कन रुक जाने के पाँच-छः मिनट बाद तक नाभि में स्पन्दन होता है। यदि कोई अनुभवी व्यक्ति किसी विधि द्वारा नाभि की प्राण ऊर्जा का संपर्क हृदय से पुनः स्थापित कर दे, तो मनुष्य की मृत्यु टल सकती है, परन्तु नाभि में स्पन्दन रुक जाने के बाद मृत्यु को नहीं टाला जा सकता। माता के गर्भ में नवजात बालक का सबसे पहले नाभि केन्द्र ही विकसित होता है। नाभि में हमारी पैतृक ऊर्जा का संचय होता है, जो बीज से वृक्ष की भांति हमारे सम्पूर्ण विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। गर्भस्थ बालक में नाभि के माध्यम से ही गर्भावस्था में विकास हेतु आवश्यक पोषक तत्त्वों की पूर्ति होती है।

गर्भ के बाहर आते ही सर्वप्रथम माता के शरीर को नाभि से जोड़ने वाली नली का सम्बन्ध विच्छेद करना अति आवश्यक होता है, जिससे नवजात शिशु स्वतन्त्र रूप से श्वास लेकर अपनी जीवन-यात्रा प्रारम्भ कर सके। जीवन की प्रथम श्वास बहुत ही महत्त्वपूर्ण होती है। उस समय सौरमण्डल में गृहनक्षत्रों की जो स्थिति होती है, उसी के आधार पर सारा ज्योतिष विज्ञान, उस व्यक्ति का भविष्य बतलाता है। यदि अज्ञानवश जन्म लेते ही नाभि को माता से जोड़ने वाली नली को शीघ्र न काटा जाये अथवा नली को काटते ही बच्चा न रोये तो बालक विकलांग हो सकता है।

जीवनचर्या का आधार नाभि

जिस प्रकार कमल सूर्य के प्रकाश में खिलता है और सूर्यास्त के पश्चात् अपने आप में सिमट जाता है। ठीक उसी प्रकार सूर्यास्त के पश्चात् नाभि की सक्रियता मंद पड़ जाती है। जिससे रात्रि में हमारी क्षमताएँ अपेक्षाकृत कम हो जाती हैं। निद्रा द्वारा विश्राम करना पड़ता है। हमारी दिनचर्या एवं रात्रिचर्या में अन्तर होता

है। इसी कारण लम्बे समय तक रात्रि में कार्य करने वालों का स्वास्थ्य बिगड़ जाता है। यदि कभी कारणवश पूर्ण रात्रि जागृत रहना पड़े तो दूसरे दिन हमारा पाचन बिगड़ जाता है।

नाभि और पाचन

नाभि का हमारे पाचन से गहरा सम्बन्ध होता है। अतः हमें जब नाभि सक्रिय हो तब अर्थात् दिन में ही भोजन करना चाहिये।

नाभि केन्द्र खिसकने के प्रभाव

यदि नाभि अपने स्थान से अन्दर की तरफ हो जाए तो उस व्यक्ति का वजन दिन-प्रतिदिन घटता चला जाता है और यदि किसी कारण नाभि अपने स्थान से बाहर की तरफ हो जाती है तो शरीर का वजन न चाहते हुए भी अनावश्यक बढ़ने लगता है। किसी कारण नाभि यदि अपने स्थान से ऊपर की तरफ चढ़ जाती है तो खट्टी डकारें, अपच आदि की शिकायतें रहने लगती हैं, कब्जी हो सकती है। परन्तु यदि नाभि अपने स्थान से नीचे की तरफ चली जाती है तो दस्तों की शिकायत हो जाती है। इसी प्रकार नाभि दायें, बायें अथवा तिरछी दिशाओं में भी हट जाती है, जिससे शरीर में अनेक प्रकार के रोग उत्पन्न होने लगते हैं। कभी-कभी सारे परीक्षण एवं पेथोलोजिकल टेस्ट करने के पश्चात् भी रोग पकड़ में नहीं आता है तो ऐसी स्थिति में नाभि केन्द्र को अपने केन्द्र में लाने से तुरन्त राहत मिलने लग जाती है।

नाभि असंतुलन के कारण

गलत ढंग से उठने-बैठने, चलने-फिरने, वजन उठाने, श्वसन क्रिया करने, शरीर का संतुलन बिगाड़ने वाली अन्य प्रवृत्तियों के कारण भी नाभि अपने केन्द्र से हट जाती है।

नाभि निरीक्षण की विधि

नाभि अपने स्थान पर है अथवा नहीं, पता लगाने की अनेक विधियाँ होती हैं, परन्तु यहाँ एक ही प्रमुख विधि का वर्णन किया जा रहा है। जिस व्यक्ति की नाभि चेक करनी हो उस व्यक्ति को जमीन पर पीठ के बल सुला दीजिये। फिर अपने बायें अथवा दाहिनी हथेली की पाँचों अंगुलियों को एक साथ मिलाकर ठीक नाभि पर दबाव देते हुए रखिये। यदि नाभि अपने स्थान पर होती है तो पाँचों अंगुलियों के बीच में स्पन्दन का आभास होता है। यदि नाभि थोड़ी हटी हुई हो तो नाभि का स्पन्दन पाँचों अंगुलियों में किसी अंगुलि के नीचे प्रायः अनुभव होता है।

परन्तु यदि नाभि अपने केन्द्र से अधिक हटी हुई हो तो नाभि क्षेत्र के आसपास पाँचों अंगुलियों से दबाव देते हुए, उस स्थान को मालूम करें, जहाँ स्पन्दन आ रहा हो। जहाँ पर स्पन्दन आता है, नाभिचक्र उसी स्थान पर होता है। परन्तु जिन लोगों का पेट मोटा अथवा कठोर होता है, उन लोगों के नाभि चक्र का स्पन्दन आसानी से पता नहीं चलता तथा ढूँढने वाले को नाभि क्षेत्र में पर्याप्त दबाव डालकर ढूँढना पड़ता है।

नाभि केन्द्र ठीक करने की विधियाँ

रात्रि में सोते समय नाभि केन्द्र में शुद्ध देशी गाय का घी दो-तीन बूंद डालने से नाभि केन्द्र के आसपास जमे विजातीय तत्त्व दूर हो जाते हैं नाभि के अन्दर और चारों तरफ दाणा मैथी स्पर्श कर रखने से तथा आवश्यकतानुसार चुम्बक का मसाज करने से भी नाभि संबंधी रोगों से शीघ्र आराम मिलता है।

नाभि केन्द्र को अपने स्थान पर लाने के लिये भारत में अनेक विधियाँ प्रचलित हैं। वे इतनी सरल हैं कि कोई भी जिज्ञासु, शिक्षित, अशिक्षित, बच्चा एवं बूढ़ा आसानी से उन विधियों को सीख सकता है। नाभि के केन्द्र में स्पन्दन का अनुभव होने पर वह अपने स्थान पर कही जाती है। परन्तु यदि स्पन्दन केन्द्र में न हो तो, बोलचाल की भाषा में धरण का टलना, पेचुटि अथवा नाभि का खिसकना कहते हैं। नाभि ठीक करने की विधियाँ-

1. प्रातःकाल खाली पेट रोगी को सीधा लेटाएँ। नाभि के आसपास बाल हों तो उन्हें साफ कर लें, अथवा पानी से गीला कर लें। उसके पश्चात् रोगी को पाँच सात बार गहरा एवं लम्बा श्वास लेने को कहें। उसके पश्चात् नाभि के केन्द्र पर जलता हुआ दीपक रख उसको कांच की ग्लास से ढ़क दें तथा पेट पर ग्लास को हल्का सा दबाव देकर रखें। थोड़ी देर बाद ग्लास के अन्दर की ऑक्सीजन समाप्त हो जाने से दीपक बुझ जाता है, ग्लास पेट के चिपक जाती है, तथा उसके अन्दर की वायु नाभि के स्पन्दन को अपनी जगह पर लाने के लिये खिंचाव करती है। जब नाभि का स्पन्दन अपने केन्द्र में आ जाता है तो ग्लास अपने आप पेट से हट जाती है। जितनी देर से ग्लास हटती है, उतने ही अनुपात में नाभि क्षेत्र में प्राण ऊर्जा के प्रवाह में अवरोध होता है। अगर नाभि का स्पन्दन अपने केन्द्र में होता है तो ग्लास दीपक बुझने के पश्चात् या तो पेट से नहीं चिपकंती है अथवा तुरन्त हट जाती है। ग्लास हटने के पश्चात् पुनः नाभि का स्पन्दन उसके केन्द्र में जाँच लें। ग्लास हटने के पश्चात् उसी स्थान पर रोगी को बैठा कर कुछ

सात्त्विक ठोस पौष्टिक भोजन करना चाहिये, ताकि पेट में भोजन के दबाव से नाभि का स्पन्दन अपने स्थान पर ही केन्द्रित रहे। आजकल दीपक के स्थान पर पंप खिंचाव का उपयोग भी किया जाता है। विशेषकर उन रोगियों के लिये जिनके तोंद ज्यादा हो अथवा नाभि का स्पन्दन बहुत गहरा अथवा केन्द्र से बहुत दूर हो। जैन श्रमण अग्नि का उपयोग नहीं लेते। उनके भी नाभि खिसक गई हो तो खिंचाव पंप द्वारा उसे केन्द्र में लाया जा सकता है। पम्प द्वारा खिंचाव उतना ही देना चाहिये जितना रोगी सहन कर सके।

2. सुबह खाली पेट कमर सीधी करके सीधे लेट जायें। सर्व प्रथम 25-30 बार सीधी एवं उल्टी साइकलिंग का व्यायाम करें। फिर रीढ़ के घुमावदार राजा और रानी आसन 25-30 बार करें। दोनों पैरों को धीरे-धीरे ऊपर उठायें तथा 90 डिग्री के कोण पर रखें। फिर सिर को बिना जमीन से उठाए दोनों पैरों को सीधे रखते हुए धीरे-धीरे जमीन पर लाएँ। ऐसा उत्तानपादासन 5-6 बार करें। उसके पश्चात् 5-6 बार नौकासन विधि पूर्वक करें। ऐसा करने से खिसकी हुई धरण अपने स्थान पर आ जाती है।

3. सुबह भूखे पेट पीठ के बल सीधे लेट जायें। दोनों टखनों तथा घुटनों को साथ-साथ रखें। यदि धरण अपने स्थान पर नहीं होती है तो पैर का अंगूठा दूसरे पैर के अंगूठे से कुछ बड़ा होता है अर्थात् दोनों अंगूठे बराबर नहीं होते हैं। जो अंगूठा नीचे हो उसे हाथ से ऊपर की ओर खीचें। दो तीन बार खींचने से दोनों अँगूठे बराबर हो जाते हैं और धरण अपने स्थान पर आ जाती है। यदि छोटे पैर खींचना किसी कारण संभव न हो तो पैरों को संतुलन करने की विधि से, दोनों पैरों को बराबर करने से नाभि अपने केन्द्र में आ जाती है।

4. गर्मियों के दिनों में नाभि पर बर्फ रखने से नाभि क्षेत्र में संकोचन होने लगता है और हटी नाभि अपने स्थान पर आ जाती है।

स्वस्थ रहने की कामना रखने वालों को समय-समय पर नाभि केन्द्र की स्थिति का परीक्षण कर लेना चाहिये। यदि नाभि केन्द्र अपने स्थान से विचलित हो गया हो तो प्रमाद छोड़ उसको केन्द्र में लाने का प्रयास करना चाहिये। जो व्यक्ति अपने नाभि केन्द्र के बारे में पूर्ण सजग रहते हैं, उनके जीवन में असाध्य रोग होने की संभावना बहुत कम हो जाती है।

-चोरड़िया भवन, जालोरी गेट के बाहर, जोधपुर-342003 (राज.)

E-mail : cmchordia.jodhpur@gmail.com, swachikitsa@therapist.net

संवाद (22)

माह फरवरी-2009 की जिनवाणी में पूछे गये निम्नांकित प्रश्न के कतिपय उत्तर मार्च 2009 में प्रकाशित किए गए थे, कुछ उत्तर यहाँ प्रकाशित हैं-

प्रश्न-व्यक्ति को पहले धर्म में परिपूर्ण होने के बाद सदाचरण एवं व्यवहार की ओर बढ़ना चाहिए अथवा पहले आचरण व व्यवहार सुधार कर धर्म की ओर अग्रसर होना चाहिए। - *सिंहराज जैन, जोधपुर*

डॉ. श्वेता जैन, जोधपुर- धर्म और सदाचरण एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। इन दोनों पहलुओं को अलग नहीं किया जा सकता। जो व्यक्ति धार्मिक है वह सदाचारी स्वतः होता है। इस तथ्य पर विचार करने से प्रश्न निर्मूल ज्ञात होता है, किन्तु इस प्रश्न की भूमिका की ओर चिन्तन करें तो लगता है कि यह प्रश्न उन श्रावकों के आचरण को ध्यान में रखकर उठाया गया है जो नित्य सामायिक करके और संघ में प्रतिष्ठित पदों पर कार्यरत होकर भी क्रोध का आचरण करते हैं, मायावी होते हैं, अहंकारी एवं लोभी होते हैं। घर में भी बच्चे देखते हैं कि रोज स्थानक जाने वाली माँ भी अवसर आने पर झूठ बोलती है, चुगली करती है, निन्दा करती है। इन परिस्थितियों को देखकर किसी के भी मन में यह प्रश्न उठ सकता है कि धार्मिक व्यक्ति का व्यवहार क्या ऐसा होता है? यहाँ हम जिसे धार्मिक कह रहे हैं, हम उनकी बाहरी क्रियाओं को देखकर कह रहे हैं। वस्तुतः धर्म बाह्य-क्रियाओं तक सीमित नहीं है, भीतर में समता नहीं बढ़े और राग-द्वेष कम न हो तब तक सही स्वरूप में धर्म नहीं हुआ और न व्यक्ति धार्मिक हुआ। अतः यह हमारे व्यवहार का दोष है कि हम क्रिया के आधार पर व्यक्ति को धार्मिक मानकर धर्म का मूल्यांकन करते हैं। अतः स्पष्ट है कि आचरण और धर्म दो नहीं है, एक हैं।

श्री लक्ष्मीचन्द जैन, छोटी कसरावद- धर्म और सदाचरण दोनों साथ-साथ चलते हैं। पहले धार्मिक बनूँ फिर अपने आचरण और व्यवहार को सुधारूँ, ऐसा सोचना ठीक नहीं है। दोनों साथ-साथ सधते रहते हैं। धार्मिकता को तो अपनाते ही रहना चाहिए। इन विचारों की शक्ति अपने को पवित्र बनाती रहेगी। सुसंस्कारों का ध्यान रखना आवश्यक है। मात्र अहिंसा का विचार भी परिवार का आधार बन जाय तो फिर सद्गुणों का आना सहज संभव है।

नोट : नये प्रश्न के लिए द्रष्टव्य पृ. 72

कृति की 2 प्रतियाँ अपेक्षित हैं

नूतन साहित्य

डॉ. धर्मचन्द जैन

सूर्योदय से सूर्यास्त तक-श्री जयमुनि जी, ***प्रकाशक*** - शीलकुमार जैन, कोठी नं. 101, सेक्टर 17, पंचकूला (हरियाणा), ***पृष्ठ***-408, ***मूल्य***-उल्लेख नहीं, ***संस्करण***- सन् 2008

इस ग्रन्थ में पंजाबी संत संघशास्ता शासन प्रभावक श्री सुदर्शनलाल जी म.सा. का जीवन-चरित्र वर्णित है। श्री जयमुनि जी ने सहज, सरल, प्रवाहमयी भाषा में अपने गुरुदेव श्री सुदर्शनलाल जी म.सा. के जीवन को सूर्योदय से सूर्यास्त के रूप में 4 प्रहरों में अभिव्यक्त किया है। प्रथम प्रहर में उनके बचपन का, द्वितीय प्रहर में दीक्षा, तृतीय प्रहर में उनके संयममय जीवन और चतुर्थ प्रहर में अन्तिम क्षणों का वर्णन किया गया है। यह कृति भावप्रवण होने के साथ परम्परा का भी बोध कराती है। इसमें कुछ विशेष प्रसंगों को अलग से संकलित किया गया है।

(1) प्रभावशाली स्वावलम्बी उपचार (2) सजगता ही स्वास्थ्य है (3) स्वास्थ्य हेतु सम्यक् चिन्तन आवश्यक- डॉ. चंचलमल चोरडिया, ***प्रकाशक***- कल्याणमल चंचलमल चोरडिया ट्रस्ट, चोरडिया भवन, जालोरी गेट के बाहर, जोधपुर (राज.) ***पृष्ठ***-16 प्रत्येक, ***सहयोग राशि***-10/-प्रत्येक, ***संस्करण***- सन् 2009

अहिंसात्मक चिकित्सा पद्धतियों के विशेषज्ञ श्री चोरडिया जी ने लघु पुस्तकों का प्रकाशन प्रारम्भ किया है। इन पुस्तकों में उन्होंने एक-एक विषय पर अपने विचार केन्द्रित कर पाठकों को स्वास्थ्य विषयक उपयोगी सामग्री सुलभ करवायी है। 'प्रभावशाली स्वावलम्बी उपचार' पुस्तक में जहाँ मेथी स्पर्श, तेल गंडूस, नमस्कार मुद्रा एवं स्वायसो व्यायाम के द्वारा स्वास्थ्य लाभ का प्रतिपादन हुआ है। वहाँ 'सजगता ही स्वास्थ्य है' पुस्तक में हास्य चिकित्सा, चैतन्य चिकित्सा, सही दिनचर्या, सही दवा का चयन आदि विषयों को स्पष्ट किया गया है। 'स्वास्थ्य हेतु सम्यक् चिन्तन आवश्यक' पुस्तक में मानव शरीर की महत्ता का प्रतिपादन करने के साथ अध्यात्म के बिना आधुनिक स्वास्थ्य विज्ञान को अधूरा सिद्ध किया गया है। स्वयं स्वस्थ होने की क्षमता का अनुभव एवं विश्वास चोरडिया जी ने इस पुस्तक में प्रदान किया है।

समाचार-विविधा

वि.सं. 2066 के अब तक स्वीकृत चातुर्मास

परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा. ने चैत्र कृष्णा सप्तमी, बुधवार, दिनांक 18 मार्च 2009 को साधु मर्यादा में रखने योग्य आगारों के साथ वि.सं. 2066 के लिए निम्नाङ्कित चातुर्मास घोषित किए हैं-

1.	परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा 9	पालड़ी (अहमदाबाद)
2.	परमश्रद्धेय उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा 4	ब्यावर (जिला-अजमेर)
3.	साध्वीप्रमुखा शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा. आदि ठाणा	घोड़ों का चौक, जोधपुर
4.	सेवाभावी महासती श्री संतोषकंवर जी म.सा. आदि ठाणा 4	भकरी (जिला-अजमेर)
5.	व्याख्यात्री महासती श्री इन्दुबाला जी म.सा. आदि ठाणा 5	जयपुर

28 मई को दीक्षा

परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा. ने वैरागी श्री जितेन्द्र जी कोठारी-निमाज की दीक्षा की तिथि ज्येष्ठ शुक्ला पंचमी, गुरुवार, दिनांक 28 मई 2009 साधु मर्यादा के आगारों के साथ घोषित की है। स्थान आदि की विस्तृत सूचना आगामी अंक में प्रकाशित की जाएगी। *-नवरतन डागा, महामंत्री, अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर (राज.)*

विचरण-विहार एवं विहार दिशाएँ : एक नजर में

(1 अप्रेल, 2009)

परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा 9 : सूरत के उपनगरों को पावन कर उतराल, अप्रमा, कठोर, कोसम्बा, पनोली, उमरवाड़ा होते हुए 1 अप्रेल को अंकलेश्वर पधार गये हैं। महावीर जयन्ती तक अंकलेश्वर विराजने की संभावना है।

परमश्रद्धेय उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा 4 : बाड़मेर से 12 मार्च को विहार कर कवास, बायतु होते हुए 28 मार्च को पचपदरा पधारे हैं। कुछ दिन यहाँ विराजने की संभावना है।

साध्वीप्रमुखा शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा. आदि ठाणा 6 : जोधपुर के विभिन्न उपनगरों को लाभान्वित कर रहे हैं।

सेवाभावी महासती श्री संतोषकंवर जी म.सा. आदि ठाणा 4 : भैरून्दा से विहार कर जाटों की ढाणी, सटाणा, कुमारों की ढाणी होते हुए 1 अप्रेल को जाटाबास पधारे हैं। रियां पधारने की संभावना है।

व्याख्यात्री महासती श्री तेजकंवर जी म.सा. आदि ठाणा 7 : 18 मार्च को पौहणा पधारे। कुछ दिन विराजने के पश्चात् पिपरी, बडनेरा, एरंगा होते हुए 31 मार्च को अलीपुर पधारे हैं। वर्धा की ओर विहार चल रहा है।

तत्त्वचिन्तिका महासती श्री रतनकंवर जी म.सा. आदि ठाणा 4 : मेड़ता सिटी से गोटन कुछ दिन विराजकर बारणी होते हुए भोपालगढ़ पधारे हैं। कुछ दिन यहाँ विराजने की संभावना है।

विदुषी महासती श्री सुशीलाकंवर जी म.सा. आदि ठाणा 5 : इचलकरंजी से जयसिंहपुर, कमरगांव, मिरज होते हुए 1 अप्रेल को माधवनगर

	पधारे हैं।
विदुषी महासती श्री सौभाग्यवती जी म.सा. आदि ठाणा 4	: जयपुर के विभिन्न उपनगरों को लाभान्वित कर रहे हैं।
व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकंवर जी म.सा. आदि ठाणा 8	: बड़ौदरा से विहार कर अंकलेश्वर पधारे हैं।
महासती श्री इन्दुबाला जी म.सा. आदि ठाणा 5	: अजमेर में लाखन कोटड़ी, महावीर कॉलोनी फरस कर वैशाली नगर-अजमेर विराज रहे हैं।
व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलता जी म.सा. आदि ठाणा 7	: बैंगलोर के विभिन्न उपनगरों को लाभान्वित कर रहे हैं।
व्याख्यात्री महासती श्री शांतिप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा 3	: अहमदाबाद के उपनगरों को लाभान्वित करते हुए बड़ौदा की ओर विहार चल रहा है।
व्याख्यात्री महासती श्री निःशल्यवती जी म.सा. आदि ठाणा 4	: अहमदाबाद के विभिन्न उपनगरों को लाभान्वित कर मेहसाणा, पालनपुर, होते हुए पाली की ओर विहार चल रहा है।
व्याख्यात्री महासती श्री इन्दिराप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा 5	: मुम्बई में फाल्गुनी चातुर्मासी पूर्ण कर उमरगांव, बलसाड़, नवसारी होते हुए सूरत की ओर विहार चल रहा है।
महासती श्री विमलेशप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा 5	: चन्द्रपुर कुछ दिन विराजकर वरोरा होते हुए हिंगणघाट की ओर विहार चल रहा है।

आचार्यप्रवर का विहार सूरत से बड़ौदा की ओर

परमाराध्य परम पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा., महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्र मुनि जी म.सा. आदि ठाणा 9 समता भवन, सिविल हॉस्पिटल रोड, सूरत में 26 फरवरी से 2 मार्च 2009 तक विराजे। प्रवचनामृत से लाभान्वित श्रावक-श्राविकाओं ने स्वयं को उपकृत अनुभव किया। 3 मार्च को

भटरा रोड पर स्थित सुधर्म भवन में, 4 मार्च को 3 कि.मी. का विहार कर सिटी लाइट एवं 5 मार्च को कैलाशनगर स्थित धानेरा स्थानक भवन में जयघोष के उद्घोष के साथ पदार्पण हुआ। यहाँ प्रभावी धर्मप्रभावना हुई। आचार्य भगवन्त ने प्रतिदिन मांगलिक से पूर्व संक्षिप्त सारगर्भित मार्मिक प्रवचनामृत से श्रद्धालुओं को लाभान्वित किया।

10 मार्च को फाल्गुनी चौमासी के अवसर पर अनेक स्थानों से अनन्य गुरुभक्त दर्शन-वन्दन की भावना से तथा कई संघ आगामी वर्षावास की प्रबल भावना लेकर आचार्यप्रवर के चरणारविन्दों में उपस्थित हुए। उपस्थित संघों में अहमदाबाद, बड़ौदा, मुम्बई, चेन्नई, बैंगलोर, सोरापुर, बीजापुर, रतलाम, नन्दुरबार, फत्तेपुर, सवाईमाधोपुर, जोधपुर, जयपुर, अजमेर, जलगाँव, सैलाना, नवसारी, उमरगांव, सिलवासा आदि विभिन्न क्षेत्र थे। कैलाश नगर स्थित धानेरा स्थानक का बड़ा परिसर इस दिन चारों तरफ से खचाखच भरा हुआ था। सामूहिक सामायिक-साधना का परिदृश्य सुन्दर था। अधिकतम भाई-बहिनों ने कम से कम तीन व कइयों ने 5-5 सामायिक की। 28 तेले, 30 उपवास, 21 दया, 85 एकासना के तेले, 5 आयम्बिल के तेले के प्रत्याख्यान भी हुए।

11 मार्च को आचार्यप्रवर विहार कर पालनपुरी जैन स्थानक, घुड़दौड़ रोड पधारे। यहाँ तीन दिन विराजकर 14 मार्च को संग्रामपुरा जैन स्थानक में पधारे। 16 मार्च को यहाँ से विहार कर मॉडल टाउन अरिहन्त पार्क में आचार्यप्रवर का पदार्पण हुआ। अरिहंत पार्क से 18 मार्च को प्रातः विहार कर आचार्यप्रवर का अमरोली पदार्पण हुआ।

यहाँ पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के 71वें जन्म-दिवस एवं आदिनाथ जयन्ती पर तप-त्याग, व्रत-प्रत्याख्यान के लिये सूरत संघ के उत्साही कर्मठ मंत्री श्री सुनील जी नाहर की विशेष प्रयत्नशीलता रही। इस पावन प्रसंग पर मुम्बई, कोटा, कुश्तला, अहमदाबाद, ब्यावर, किशनगढ़, अजमेर, नागपुर, बीजापुर, नवसारी, वापी, उमरगांव, चेन्नई, हुबली, चीखली आदि स्थानों से अनेक गुरुभक्त अपने आराध्य के पावन चरणों में पधारे। प्रातः 9.15 तक आचार्य भगवन्त के जन्म-दिवस पर श्रद्धा सहित गुणानुवाद किए गए। 9.15 बजे संतप्रवर पधारे। नवकार मंत्र के उच्चारण के साथ श्रद्धेय श्री बलभद्रमुनि जी म.सा. ने अपने भाव व्यक्त करते हुए कहा – मुझे भाग्योदय से रक्षा करने वाले, जीवन बनाने वाले,

महाव्रत का दान करने वाले पूज्य आचार्य भगवन्त की पावन सन्निधि मिली। आज पूज्य भगवन्त का जन्म-दिवस है। मैं वीर प्रभु से प्रार्थना करता हूँ कि आप इसी तरह पतितों को पावन बनाते चलें।

श्रद्धेय श्री मनीषमुनि जी म.सा. ने अपनी भावाभिव्यक्ति में कहा- आपश्री में चारित्र की चमक, ज्ञान की निर्मलता एवं दर्शन की शुद्धि है। श्रद्धेय श्री योगेशमुनि जी म.सा. ने 'गुरुदेव हमारे हो...' भजन की कड़ी रखते कहा- हमारे आराध्य देव का जन्म-दिवस, गुणश्रेणि के साथ चढ़ते हुए जन्म-कल्याणक बने। जैसे 100 का नोट बन्द आँखों से भी दिखता है, वैसे ही बेडरूम में गुरु का फोटो दर्शन के लिए लगाने की जरूरत नहीं, आँख बन्द करते ही दिखने चाहिये। तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनि जी म.सा. ने अपने विचार रखते हुए कहा- आदिनाथ प्रभु का जन्म हुए कई पूर्व व्यतीत हो गये हैं, किन्तु अभी भी मनाया जा रहा है, कारण उन्होंने धर्म को जीवन में उतारा। जबान का कहा कान तक, जीवन का कहा भीतर तक जाता है। आचार्य भगवन्त का व्यसनमुक्ति का संदेश आपके जीवन में उतरे। आपश्री का लेखन सुन्दर, काव्य सुन्दर, आकृति सुन्दर और जीवन भी सुन्दर है। हम भी आपश्री के जीवन से कोई गुण ग्रहण कर जीवन सुन्दर बनायें।

महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्रमुनि जी म.सा. ने अपनी धारा प्रवाह शैली में फरमाया- ''भौतिक एवं जड़ हीरे की चमक से कई गुणा चमक इस आध्यात्मिक चेतन हीरे की है। इनके मार्गदर्शन में चतुर्विध संघ गतिमान है। आपश्री अपने गुरु के प्रति पूर्णभावेन समर्पित हो गये। हमेशा स्वयं की प्रतिभा-महानता को छुपाए रखा, संघ और संघनायक को ही प्रमुखता दी। आज जिस प्रकार पद के लिये लड़ते हैं, राजनीतियाँ चलती हैं, उससे आप सदैव दूर रहे। आपने फरमाया-''आप मेरे अलावा किसी और को चुन लीजिये। मैं इसी प्रकार संघ-सेवा करता रहूँगा।'' गुणपुंज हमारे आचार्य देव मर्यादा पालन एवं अनुशासन में जितने कठोर हैं उतने ही अन्य समय संवेदनशील हैं। आपका सदैव यही चिन्तन रहता है कि कहीं मेरी आत्मा कलुषित न हो जाये। आप स्वस्थ हों, चिरायु हों, इसी प्रकार भव्यों का पथ प्रदर्शन करते रहें।

जब आचार्यप्रवर का सभा में पदार्पण हुआ तब संतों व श्रावकों ने सामूहिक भक्तिसहित अभिव्यक्ति ''तेरे बिना गुरुवर हमारा नहीं कोई रे'' प्रस्तुत की। पूज्य आचार्य भगवन्त ने फरमाया कि चैत्र का मास मधुमास है, गुणों की मधुरता बढ़ाने

का मास है। चित्रा नक्षत्र से प्रारम्भ होने से इसका नाम रखा 'चैत्र'। चैत्र माह से कई महापुरुषों एवं तीर्थंकरों का जन्म जुड़ा है, दीक्षा जुड़ी है। मर्यादा पुरुषोत्तम राम की जन्म-जयन्ती, हनुमान का जन्म, आदिनाथ प्रभु व भगवान् महावीर का भी जन्म-दिवस इसी मास में है। जन्म लेना बड़ी बात नहीं, जीवन बनाना विशेषता वाला है। यह चैत्र मास जीवन-निर्माण के सूत्र प्रदान कर रहा है। भगवान् आदिनाथ के पुत्रों को पुरुषों की बहत्तर कला की शिक्षा के बाद भी संतुष्टि नहीं हुई। भाई-भाई आपस में झगड़ने लगे, प्रभु ने संयम का सूत्र प्रदान किया- 'संबुज्झह किं न बुज्झह संबोहिं खलु पेच्च बोही दुल्लहा'' संयम से समाधि एवं समरसता प्राप्त होती है। भरत-बाहुबली की लड़ाई भी संयम से सुलझी। गृहस्थ में भी संयम अनिवार्य है। संयम के गुणगान गाये जाते हैं, संयमी बनने का लक्ष्य रखें। संयम पर मात्र श्रद्धा कर ही इतिश्री न समझ लें, अपितु वरण कर मुक्तिपथ के लिये पुरुषार्थ करें। चैत्र मास देवीमास कहा जाता है, आप सरागी देवों को नहीं वरन् वीतरागी देव की आराधना करें, करणीय-कर्त्तव्य जीवन में उतारें तो अवश्य ही आत्मा का उद्धार होगा। जो आचरण करेगा वह तिरेगा।

कार्यक्रम का संचालन श्री सुनील जी नाहर ने किया। अमरोली स्थानक का विशाल परिसर खचाखच भरा हुआ था। 500 के लगभग एकाशन, उपवास, आयंबिल के प्रत्याख्यान भी पूज्य श्री के श्रीमुख से अच्छी संख्या में हुए। श्री प्रकाश जी गांधी एवं श्री लाभचन्द जी नाहर एवं उनके परिवारजन गुरु-चरणों में तत्परता से सन्नद्ध हैं।

26 मार्च को अमरोली से आचार्यप्रवर विहार कर उतराल, अप्रमा, कठोर, कोसम्बा, पनोली क्षेत्रों को पावन करते हुए 1 अप्रेल को अंकलेश्वर पधारे हैं।

सम्पर्क सूत्र- *(1) राजेश जी बाफणा, बाफणा फाइनेन्स, एफ.एफ. 13, (द एम्परर), फतेहगंज मेनरोड़, बड़ौदा (गुजरात) मो. 09825035771, 09426403301 फैक्स- 0265-2795779*

उपाध्याय प्रवर का विहार बाडमेर से पाली की ओर

परमश्रद्धेय उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा., मधुर व्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा. आदि ठाणा 4 थार नगरी बाड़मेर एवं उपनगरों में 12 मार्च तक विराजे। यहाँ प्रतिदिन धर्म-ध्यान का ठाट लगा रहा।

भक्ति-भावना का एक अद्भुत नजारा दृष्टिगोचर हुआ। बीच के 10 दिन आराधना भवन बिराजे, वहाँ पर भी प्रवचन में लगभग 300-400 की उपस्थिति रहती थी। 12 मार्च को यहाँ से विहार कर उपाध्यायप्रवर बाड़मेर के उपनगर महावीर नगर में पधारे। महावीर नगर से 13 मार्च को प्रातः 10 कि.मी. विहार कर उत्तरलाई हवाई अड्डे पधारे। यहाँ श्री लूणाराम जी गहलोत के निवास पर बिराजे। गहलोत परिवार की भक्ति-भावना प्रेरणादायी रही। 14 मार्च को उपाध्यायप्रवर मरुक्षेत्र कवास विराजे। 18 वर्ष पूर्व आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. भी इसी समय में कवास पधारे थे। उत्तरलाई से कवास विहार में श्रावक-श्राविकाओं ने अच्छी संख्या में लाभ लिया। कवास में पूर्व सरपंच, अनन्य गुरुभक्त श्री भीमराज जी चौपड़ा के निवास पर विराजना हुआ। यहाँ बालोतरा, बाड़मेर, बायतु, जसोल, असार्डा, पचपदरा, सिवाना, पाली, जोधपुर, जयपुर, कनाना आदि क्षेत्रों के श्रावक-श्राविकाओं ने दर्शन-लाभ प्राप्त किया। बाड़मेर के वर्तमान विधायक श्री मेवाराम जी जैन, बालोतरा के पूर्व विधायक एवं राज्य गृहमंत्री श्री अमराराम जी चौधरी, आई.टी.ओ. श्री राजेन्द्र जी जैन, कवास सरपंच बाकाराम जी, वार्ड के ग्राम पंच आदि गणमान्य श्रद्धालु भी पधारे। चौपड़ा परिवार की भक्ति-भावना प्रशंसनीय थी। श्री रूपकुमार जी, मोहनराज जी, मदनराज जी, युवाशक्ति श्री धर्मेश जी चौपड़ा एवं समस्त चौपड़ा परिवार आगन्तुकों का आतिथ्य-लाभ लेने हेतु पलक-पांवड़े बिछाये खड़ा रहा। विधायक श्री मेवाराम जी जैन, चौधरी अमराराम जी एवं ओमप्रकाश जी बांठिया ने प्रवचन में अपने भाव प्रस्तुत किए। रूपकुमार जी चौपड़ा ने अष्टमी तक कवास बिराजने की विनति की। बाड़मेर संघ के श्री दिनेश जी लुणिया एवं जितेन्द्र जी बांठिया ने उपाध्यायप्रवर एवं महासतियाँ जी के आगामी चातुर्मास हेतु विनति प्रस्तुत की।

15 मार्च को दोपहर पश्चात् उपाध्यायप्रवर विहार कर भगाणियों की ढाणी स्थित स्कूल में विराजे।16 मार्च को बायतु पधारे। बायतु के श्रावक-श्राविकाओं ने प्रवचन-श्रवण एवं ज्ञानचर्चा का सात दिन लाभ लिया। 19 मार्च को अष्टमी के दिन भगवान् आदिनाथ के जन्म एवं दीक्षा कल्याणक तथा परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के 71वें जन्म-दिवस के अवसर पर यहाँ विशेष धर्माराधन हुआ। यहाँ से 23 मार्च को भिमलाई फांटा, 24 को दुधावा गांव, 25 को बागुण्डी गांव तथा 26 मार्च को तिलवाड़ा गांव पधारे। यहाँ

श्री होताराम जी माली के घर विराजे। 27 मार्च को खेड़ रणछोड़ राई मंदिर विराजकर 28 मार्च को उपाध्यायप्रवर जैन स्थानक, मुकुन्द भवन, पचपदरा पधारे हैं। यहाँ 5-6 दिन विराज कर रामसिंग, मूगड़ा, पारलू, समदड़ी, अजित, दुन्धाड़ा होते हुए अक्षय तृतीया पर पाली पधारने की संभावना है। **सम्पर्क सूत्र-** *श्री धर्मेश जी चौपड़ा-बालोतरा, 09414108191*

भगवान् आदिनाथ का जन्म एवं दीक्षा कल्याणक तथा आचार्य हीरा का 71वाँ जन्म दिवस धर्माराधन पूर्वक मनाया गया

चैत्र कृष्णा अष्टमी, गुरुवार, दिनांक 19.3.2009 को प्रथम तीर्थंकर भगवान् आदिनाथ का जन्म व दीक्षा कल्याणक एवं परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर 1008 श्री हीराचन्द्र म.सा. का 71वाँ जन्म-दिवस सभी क्षेत्रों में सामायिक-स्वाध्याय, तप-त्याग एवं ज्ञानाराधन के साथ मनाया गया। आचार्यप्रवर एवं उपाध्यायप्रवर के सान्निध्य में आयोजित कार्यक्रम की रिपोर्ट पृथक् रूप से विचरण-विवरण में दी गई है। कतिपय अन्य क्षेत्रों से प्राप्त समाचार इस प्रकार हैं-

चेन्नई- भगवान् आदिनाथ का जन्म एवं दीक्षा कल्याणक तथा परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. का 71वाँ जन्म-दिवस 'संयम-दिवस' के रूप में दया, संवर, एकाशन, आयम्बिल, उपवास-पौषध, व्रत-नियम एवं 3 सामायिक के साथ स्वाध्याय भवन साहुकार पेठ, चेन्नई में मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ प्रातः 7.30 से 8.30 बजे तक महामंत्र जाप, प्रार्थना एवं स्वाध्याय से हुआ। तत्पश्चात् 8.30 बजे से स्तुति एवं गुणगान का कार्यक्रम रखा गया, जिसमें श्री महावीरचन्द जी तातेड़, श्रीमती उषा जी चोरडिया, श्री चम्पालाल जी बोथरा, श्री सुरेन्द्र जी कोठारी, श्रीमती बसंता जी सुराणा, श्री चम्पालाल जी कोठारी, श्री हरखचन्द जी ओस्तवाल, श्रीमती प्रमिला जी दुगड़, श्री जवाहरलाल जी बागमार, श्री रमेशचन्द जी जांगड़ा, श्री मंगलचन्द जी भंसाली, श्री गौतमराज जी सुराणा, श्री पी.एस. सुराणा, श्री पी. एम. चोरडिया, श्री कैलाशमल जी दुगड़ आदि ने गद्य-पद्य शैली में आदिनाथ भगवान् एवं आचार्यप्रवर के जीवन दर्शन पर प्रकाश डालते हुए श्रद्धा-भक्ति के साथ गुणानुवाद किया। श्रीमती निर्मला जी संकलेचा एवं श्रीमती निर्मला जी चोरडिया ने इस अवसर पर बहुत ही सुन्दर ढंग से प्रश्नमंच का कार्यक्रम प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का कुशल संचालन संघमंत्री श्री

जवाहरलाल जी कर्णावट ने किया।

मुम्बई- रत्नसंघ के अष्टम पट्टधर आचार्यप्रवर 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा. का 71वाँ जन्म-दिवस, श्री वर्द्ध. स्था. जैन श्रावक संघ उपाश्रय, विलेपार्ले (वेस्ट) में गोंडल संघाणी सम्प्रदाय के पूज्य महासती श्री वनीताबाई जी म.सा. आदि ठाणा 8, महासती श्री प्राणकुंवर बाई जी म.सा. आदि ठाणा एवं अजरामर सम्प्रदाय के पूज्य कमलप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा के सान्निध्य में त्याग-तप, सामायिक-स्वाध्याय के साथ मनाया गया। गोंडल सम्प्रदाय के महासती जी ने अपने प्रवचन में गुरुदेव के जीवन में अनेक विशेषताओं का उल्लेख करते हुए फरमाया कि जन्म-दिवस उन्हीं के मनाये जाते है जिन्होंने अपने पुरुषार्थ से जीवन को धन्य बनाया है। उन्होंने गुरुदेव के विशेष संदेश 'व्यसनमुक्ति' पर सारगर्भित प्रवचन दिया। महासती प्राणकुंवर जी म.सा. ने रत्नसंघ की महनीय परम्परा का उल्लेख करते हुए आज के दिन कुछ न कुछ नियम लेकर जाने का आह्वान किया। संघ-संरक्षक श्री मोफतराज जी मुणोत ने गुरुदेव के जीवन पर प्रकाश डाला। उन्होंने भाव विभोर होकर दोनों आचार्य भगवन्तों से अपने सम्बन्ध की चर्चा करते हुए दोनों को पीपाड़ का होने पर एवं स्वयं को भी पीपाड़ से होने पर गर्व एवं हर्ष प्रकट किया। उन्होंने कहा कि आचार्य श्री हीरा ने पहले के 8 साल राजस्थान के कोने-कोने में धर्मसंघ की सारणा-वारणा की एवं उसके पश्चात् दक्षिण भारत में धर्म की महती प्रभावना की। मुम्बई श्राविका मण्डल की ओर से श्रीमती नीरू जी गोखरू ने भजन के माध्यम से स्तुति की। इस अवसर पर मुख्य वक्ता एवं मुम्बई विश्वविद्यालय के प्रो. डॉ. बिपीन जी दोशी ने जैन जीवन शैली पर प्रकाश डाला। वरिष्ठ स्वाध्यायी श्री कपूरचन्द जी जैन ने भी भजन प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का संचालन एवं संयोजन रत्नसंघ के कोषाध्यक्ष श्री नरेन्द्र जी हीरावत ने किया एवं आभार श्री गौतम जी मेहता ने ज्ञापित किया।

सवाईमाधोपुर- चैत्र कृष्णा अष्टमी, 19 मार्च 2009 को महावीर भवन, सवाईमाधोपुर में आचार्यप्रवर 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा. का 71वाँ जन्म-दिवस तप-त्याग दिवस के रूप में मनाया गया, जिसमें अनेक वक्ताओं ने पूज्य आचार्य भगवन्त के जीवन पर प्रकाश डालते हुए भावभक्ति पूर्वक उनके दीर्घायु जीवन की कामना की। श्रावक-श्राविकाओं ने पाँच-पाँच सामायिकं, दया, एकाशन, उपवास एवं सायंकाल संवर व प्रतिक्रमण किये। अध्यक्ष महोदय श्री

सुबाहुकुमार जी ने सभी का आभार प्रदर्शित किया।

बीजापुर- पूज्य आचार्यप्रवर के 71वें जन्म-दिवस पर यहाँ 125 की संख्या में श्रावक-श्राविकाओं ने सामायिक-साधना की। वक्ताओं ने आचार्यप्रवर के जीवन पर विचार रखे। उपवास, एकाशन आदि प्रत्याख्यान भी हुए।

अक्षय तृतीया हेतु बड़ौदा एवं पाली के सम्पर्क सूत्र

परम श्रद्धेय आचार्य प्रवर 1008 पूज्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. आदि ठाणा 9 ने अक्षय तृतीया के पावन प्रसंग पर (27 अप्रेल, 2009) साधु मर्यादा के आगारों सहित बड़ौदा विराजने की स्वीकृति फरमाई है। तप एवं दान के इस विशिष्ट पर्व पर गुरु चरणों में नवीन व्रत-प्रत्याख्यान अंगीकार कर तपस्वी साधकों के तप-साधना की अनुमोदना कर कर्म-निर्जरा का लाभ लिया जा सकता है। तपस्वी साधक अपने पहुँचने की सूचना निम्न पते पर देवें :-

राजेश जी बाफणा

बाफणा फाइनेन्स,

एफ.एफ. 13, (द एम्परर), फतेहगंज मेनरोड़, बड़ौदा (गुजरात)

09825035771, 09426403301

फैक्स- 0265-2795779

ठहरने का स्थान :- श्री सौराष्ट्र लेउबा पटेल सेवा समाज

गोरबा इन्डस्ट्रीज एस्टेट के नाका पर,

बी.आई.डी.सी. के पास, एलम्बिक रोड, बड़ौदा (गुजरात)

जो तपस्वी भाई-बहन बड़ौदा न पधार सकें, वे **उपाध्याय प्रवर पं. रत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा** के सान्निध्य में पाली में तप एवं दान के इस विशिष्ट पर्व पर गुरु चरणों में नवीन व्रत-प्रत्याख्यान अंगीकार कर तपस्वी साधकों की तप-साधना की अनुमोदना कर कर्म-निर्जरा का लाभ ले सकते हैं। तपस्वी साधक अपने पहुँचने की सूचना निम्न पते पर देवें :-

श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ

सामायिक स्वाध्याय भवन, सुराणा मार्केट

पाली मारवाड़ (राज.), फोन नं. 02932-250021

जिनवाणी की श्रेष्ठ रचनाओं के पुरस्कार घोषित

जिनवाणी के जनवरी 2008 से दिसम्बर 2008 के अंकों में प्रकाशित विभिन्न लेखों/रचनाओं में से सर्वश्रेष्ठ रचनाओं का चयन पूर्व न्यायाधिपति श्री कृष्णमल जी लोढ़ा की अध्यक्षता में गठित सात सदस्यीय समिति ने कर लिया है। परिणाम इस प्रकार है-

(1) आध्यात्मिक/ नैतिक शिक्षा परक लेख- इस वर्ग में एक ही लेखक की दो रचनाएँ प्रकाशित हुई थीं। अतः तुलनात्मक मूल्यांकन सम्भव नहीं होने के कारण इस वर्ग में कोई पुरस्कार नहीं दिया गया।

(2) शोधालेख/ वैज्ञानिक लेख-आध्यात्मिक/ नैतिक शिक्षा परक लेख के वर्ग में किसी रचना को पुरस्कृत नहीं किये जाने के कारण तथा शोधालेख एवं वैज्ञानिक लेख की संख्या अधिक होने के कारण इस वर्ग में दो पुरस्कार देने का निर्णय किया गया।

1. 'विक्रमादित्य की ऐतिहासिकता : जैन साहित्य के सन्दर्भ में' (अप्रेल, 2008)
   डॉ. सागरमल जैन, शाजापुर 5100/-
2. 'जैन कर्म-सिद्धान्त और वंश परम्परा विज्ञान' (सितम्बर - अक्टूबर, 2008)
   डॉ. सोहनराज तातेड़, लाडनूँ 5100/-

(3) आगमिक/ तात्त्विक/ जीवन शैली से सम्बद्ध लेख

उपांगों में पुण्य तत्त्व (मार्च - मई, 2008)

सुश्री नेहा चोरड़िया, जलगाँव 5100/-

(4) अंग्रेजी भाषा की रचनाएँ-Namaskār Sūtra (अगस्त-नवम्बर, 2008)

डॉ. प्रियदर्शना जैन, चेन्नई 5100/-

(5) युवा स्तम्भ- मर्यादाओं का उल्लंघन न करें (अक्टूबर, 2008)

श्री पदमचन्द गाँधी, जयपुर 5100/-

(6) नारी स्तम्भ- मुमुक्षु बहन को पत्र (अप्रेल, 2008)

रुचि जैन, दिल्ली 5100/-

(7) बाल स्तम्भ- निराला स्वप्न (जुलाई, 2008)

डॉ. धर्मेन्द्र कुमार कांकरिया, जयपुर 5100/-

(8) कविता– गर्भस्थ बालिका के हृदयोद्गार (नवम्बर, 2008)

श्री जितेन्द्र चोरडिया 'प्रेक्षक', खींचन 3100/-

(9) संवाद स्तम्भ – संवाद -14 (अगस्त, 2008)

डॉ. श्वेता जैन, जोधपुर 3100/-

(10) प्रेरक प्रसंग

डॉ. दिलीप धींग, उदयपुर 2100/-

उपर्युक्त पुरस्कारों का वितरण यथावसर किसी समारोह में किया जाएगा। पुरस्कार राशि सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के अध्यक्ष माननीय श्री पी. शिखर जी सुराणा के सौजन्य से प्रदान की जाएगी।- प्रेमचन्द जैन, मन्त्री, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर (राज.)

अ.भा.श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल, जयपुर शाखा

'उत्तराध्ययन-सूत्र' खुली किताब परीक्षा परिणाम

आगम श्रेष्ठी सम्मान- कोई नहीं

आगम जागृति सम्मान (21000/-)

(एक समान अंक (496) प्राप्त होने पर राशि 3000/- प्रत्येक को)

1. सुश्री प्रियंका जैन सुपुत्री श्री इन्दरचन्द जी जैन, जोधपुर
2. श्रीमती प्रियंका मेहता धर्मपत्नी श्री अमित जी मेहता, जयपुर
3. सुश्री पूजा मेहता सुपुत्री श्री दौलतराज जी मेहता, मुम्बई
4. श्रीमती राजकुमारी लोढ़ा धर्मपत्नी श्री सुभाषचन्द जी लोढ़ा, जयपुर
5. श्रीमती रोहिणी लोढ़ा धर्मपत्नी श्री शालभद्र जी लोढ़ा, उज्जैन
6. श्रीमती सुशीला रांका धर्मपत्नी श्री इन्दरचंद जी रांका, जलगांव
7. श्रीमती विमला लूनियां धर्मपत्नी श्री विजयकुमार जी लूनियां, जयपुर

आगम मेधावी सम्मान (11000/-)

(एक समान अंक (495) प्राप्त होने पर राशि 1835/- प्रत्येक को)

1. श्रीमती बीना भांडिया धर्मपत्नी श्री राजकुमार जी भांडिया, जयपुर
2. श्रीमती (डॉ.) पुष्पा अग्रवाल धर्मपत्नी डॉ. राधेश्याम जी अग्रवाल, धुलिया
3. श्रीमती सरला कांकरिया धर्मपत्नी श्री शांतिलाल जी कांकरिया, जलगांव
4. श्रीमती सिम्पल कांकरिया धर्मपत्नी श्री दिलीप जी कांकरिया, नासिक
5. श्रीमती सोनाली बोथरा धर्मपत्नी श्री संदीप जी बोथरा, जयपुर

6. श्रीमती सुशीलाबाई कोठारी धर्मपत्नी श्री विजयराज जी कोठारी, पूना

आगम चेतना सम्मान (5000/-)

(एक समान अंक (494) प्राप्त होने पर राशि 1250/- प्रत्येक को)

1. श्री धर्मेन्द्र जैन पुत्रश्री प्रेमचन्द जी जैन, जयपुर
2. श्रीमती लता आंचलिया धर्मपत्नी श्री सतीश जी आंचलिया, धुलिया
3. सुश्री मंगला जैन सुपुत्री श्री परशराम जी जैन, नागपुर
4. श्रीमती स्नेहलता शाह धर्मपत्नी श्री प्रवीनचन्द्र जी शाह, बेलगाँव

आगम वाचना सम्मान

(राशि 1000/- प्रत्येक को)

1. श्री दिलीप कांकरिया सुपुत्र श्री हरकचन्द जी कांकरिया, नासिक।
2. श्री हस्तीमल गोलेच्छा सुपुत्र श्री मांगीलाल जी गोलेच्छा, ब्यावर।
3. सुश्री हेमा गांधी सुपुत्री श्री रमेशलाल जी गाँधी, पुणे।
4. श्री जयवन्त भाई शाह सुपुत्र श्री पीतांबरदास जी शाह, पीपलोद- सूरत।
5. श्रीमती कमला लोढ़ा धर्मपत्नी श्री (डॉ.) प्रेमसिंह जी लोढ़ा, जयपुर।
6. श्री राकेश खरचे सुपुत्र श्री इन्दरचन्दजी, जलगांव।
7. सुश्री सुरभि जैन सुपुत्री श्री धनवन्त कुमार जी जैन, इन्दौर।
8. श्रीमती अलकारानी जैन धर्मपत्नी श्री अनिलकुमार जी जैन, जयपुर।
9. सुश्री अंकिता बोहरा सुपुत्री श्री अरुणकुमार जी बोहरा, उज्जैन।
10. सुश्री मीना जैन सुपुत्री श्री सुरेशचन्द जी जैन, बोदवड़-जलगांव।
11. सुश्री निर्मला बोरा सुपुत्री श्री मिश्रीलाल जी बोरा, लोणीकंद-पूना।
12. श्रीमती प्रमिला बोहरा धर्मपत्नी श्री विनोदकुमार जी बोहरा, ब्यावर।
13. श्रीमती साधना ओस्तवाल धर्मपत्नी श्री कपिल जी ओस्तवाल, हिंगनघाट।
14. सुश्री सुधा जैन सुपुत्री श्री पंकज कुमार जी जैन, इन्दौर।
15. सुश्री अदिति जैन सुपुत्री श्री सर्चकुमार जी जैन, इन्दौर।
16. श्रीमती अनिता जैन धर्मपत्नी श्री नीरज जी जैन, जयपुर।
17. सुश्री अन्तिमा श्रीमाल सुपुत्री श्री नेमराज जी श्रीमाल, मेड़ता सिटी।
18. श्री दिनेशकुमार मुणोत सुपुत्र श्री जवरीलाल जी मुणोत, भोपालगढ़।
19. श्री लेखराज सेठिया सुपुत्र श्री पृथ्वीराज जी सेठिया, मसूदा।
20. सुश्री मयूरी जैन सुपुत्री श्री एस.आर.जैन, धुलिया।
21. सुश्री मीना ललवाणी सुपुत्री श्री गौतमचन्दजी ललवाणी, मालेगांव।
22. सुश्री पल्लवी जैन सुपुत्री श्री संजीव कुमार जैन, होशियारपुर-पंजाब।

23. सुश्री पिंकी मेहता सुपुत्री श्री कमलचन्द जी मेहता, मेड़ता सिटी।
24. श्रीमती राजुल जैन धर्मपत्नी श्री हरीशचन्द जी जैन, गंगापुर सिटी।
25. श्रीमती रितिका कांठेड धर्मपत्नी श्री रितेश जी कांठेड, उज्जैन।
26. श्रीमती संगीता मण्डलेचा धर्मपत्नी श्री सुनीलकुमार जी मंडलेचा, जामनेर।
27. श्रीमती सरिता पटवा धर्मपत्नी श्री महेश जी पटवा, जोधपुर।
28. श्रीमती श्वेता बाफना धर्मपत्नी श्री सुभाषचन्द जी बाफना, महासमुंद।
29. श्रीमती विद्या संघवी धर्मपत्नी श्री अशोककुमार जी संघवी, बदनावर।
30. श्री विजयकुमार श्री श्रीमाल सुपुत्र श्री शोभाचन्द जी श्री श्रीमाल, नासिक।

उर्मिला बोथरा — अध्यक्ष

मीना गोलेच्छा — मंत्री

पंजाब, हरियाणा एवं विदर्भ क्षेत्र में आध्यात्मिक प्रचार यात्रा सम्पन्न

पंजाब एवं हरियाणा- अ.भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर एवं श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर के संयुक्त तत्त्वावधान में दिनांक 21 से 26 मार्च 2009 तक पंजाब एवं हरियाणा के मण्डी डबवाली, कालाबाली, सार्दुलगढ़, मानसा, सुनाम, संगरूर, पटियाला, नाभा, धुरी, मलारकोटला, अहमदगढ़, फरीदकोट, सुलतानपुर, कपूरथला, होशियारपुर, जडियाला गुरु, जालन्धर (दाणा मण्डी), जालन्धर (गुड़ मण्डी), आदि क्षेत्रों में प्रचार एवं सम्पर्क कार्यक्रम आयोजित किए गए। इस प्रचार कार्यक्रम में अ.भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड की संयोजक श्रीमती सुशीला जी बोहरा-जोधपुर, श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ के संयोजक श्री चंचलमल जी चोरडिया-जोधपुर, शिक्षण बोर्ड की क्षेत्रीय संयोजक श्रीमती किरण जी जैन-होशियारपुर एवं श्री प्रकाश जी सालेचा-जोधपुर की महनीय सेवाएँ प्राप्त हुईं। वरिष्ठ सुश्रावक रत्न श्री नवनीत जी जैन-होशियारपुर, युवारत्न श्री अजितकुमार जी जैन-फगवाड़ा की भी अल्पकालीन सेवाएँ प्रचार कार्यक्रम के दौरान प्राप्त हुईं। सभी स्थलों पर नये स्वाध्यायी बनने, पर्युषण में स्वाध्यायी बुलाने, शिक्षण बोर्ड की परीक्षाओं में भाग लेकर ज्ञानवृद्धि करने, धार्मिक पाठशाला प्रारम्भ करने के साथ ही संघ एवं संघ की सहयोगी संस्थाओं की गतिविधियों से अवगत कराया गया। कार्यक्रम के दौरान शिक्षण बोर्ड के 8 नये केन्द्रों की स्थापना की गई, 3 नये स्वाध्यायी बनाये गये एवं

बोर्ड के पूर्व संचालित केन्द्रों की समीक्षा की गई। पर्युषण में स्वाध्यायी भेजने हेतु दो क्षेत्रों की मांगे प्राप्त हुईं। जिनवाणी एवं स्वाध्यायशिक्षा के सदस्य भी बनाये गये। सभी स्थानों पर स्थानक में सामूहिक प्रार्थना एवं स्वाध्याय करने की प्रभावी प्रेरणा की गई।

विदर्भ- श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर द्वारा 19 से 24 मार्च 2009 तक विदर्भ के सांवनेर, खापरखेडा, कामठी, पारसिवनी, भण्डारा, सदर नागपुर, पश्चिमी नागपुर, इतवारी नागपुर, वर्धा, हिंगणघाट, माण्डेली, पौहणा, वरोरा, चन्द्रपुर, वणी, पांडरकवड़ा, रालेगांव, कलंब, यवतमाल, बाभुलगांव, आसेगांव देवी, मांगला देवी, नेर परसोपंत, बडनेरा, अमरावती, परतवाड़ा, चांदुर बाजार, चांदुर रेलवे, धामणगांव आदि क्षेत्रों में प्रचार एवं सम्पर्क कार्यक्रम आयोजित किए गए। इस प्रचार कार्यक्रम में शासन सेवा समिति के सदस्य एवं विदर्भ शाखा के संयोजक श्री महेन्द्र जी कटारिया-नागपुर, स्वाध्याय संघ, जोधपुर की सचिव श्रीमती मोहनकौर जैन-जोधपुर एवं स्वाध्याय संघ, जोधपुर के कार्यालय प्रभारी श्री कमलेश मेहता की महनीय सेवाएँ प्राप्त हुई। साथ ही भारतीय जैन संघटना के कार्यकर्ता श्री रमेश जी कोचर-पारसिवनी, वरिष्ठ स्वाध्यायी श्री नवीन भाई जी कामानी-अमरावती एवं आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड के प्रचारक श्री मनोज जी संचेती-जलगांव की भी अल्पकालीन सेवाएँ प्रचार-कार्यक्रम के दौरान प्राप्त हुईं। सभी स्थलों पर नये स्वाध्यायी बनने, पर्युषण में स्वाध्यायी बुलाने, शिक्षण बोर्ड की परीक्षाओं में भाग लेकर ज्ञानवृद्धि करने, बच्चों हेतु संस्कार केन्द्र प्रारम्भ करने के साथ ही संघ एवं संघ की सहयोगी संस्थाओं की गतिविधियों से अवगत कराया गया। प्रचार-प्रसार के दौरान 11 नये स्वाध्यायी बनाए गए। पर्युषण हेतु 5 मांगें भी प्राप्त हुईं। आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड के नये केन्द्र खोले गये, पुराने केन्द्रों को पुनः प्रारम्भ किया गया तथा पुरस्कार वितरित किए गए। जिनवाणी एवं स्वाध्याय शिक्षा पत्रिका के सदस्य भी बनाए गए। सभी स्थानों पर आगामी महावीर जयन्ती के अवसर पर प्रातः 1 घंटे के लिए सभी सम्प्रदायों की सामूहिक सामायिक की पुरजोर प्रेरणा की गई। सभी स्थानों पर स्थानक में सामूहिक प्रार्थना, सामायिक एवं स्वाध्याय, शाकाहार तथा सदाचारी जीवन जीने की प्रभावी प्रेरणा से सब प्रमुदित थे। प्रचार कार्यक्रम के दौरान पौहणा में व्याख्यात्री महासती श्री तेजकंवर जी म.सा. आदि ठाणा 7 तथा चन्द्रपुर में महासती श्री विमलेशप्रभा जी म.सा. आदि

ठाणा 5 के दर्शन-वन्दन का लाभ प्राप्त हुआ। साथ ही अन्य सम्प्रदाय की सती-मण्डलों के भी दर्शनों का लाभ विभिन्न स्थानों पर प्राप्त हुआ।

-चंचलमल चोरडिया, संयोजक

बोर्ड की आगामी परीक्षा 19 जुलाई 2009 को

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर द्वारा कक्षा 1 स 14 तक की आगामी परीक्षा 19 जुलाई 2009, रविवार को दोपहर 12.30 से 3.30 बजे तक आयोजित की जाएगी। अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें- *अ.भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, घोड़ों का चौक, जोधपुर, फोन-0291-2630490*

महास्थविर श्री प्रकाशचन्द जी म.सा. का जोधपुर में प्रभावी विचरण

संघशास्ता श्री सुदर्शनलाल जी म.सा. (पंजाबी) के ज्येष्ठ सुशिष्य महास्थविर तपस्वीराज श्री प्रकाशचन्द जी म.सा., विद्वत्रत्न श्री जयमुनि जी म.सा. आदि ठाणा 4 जयपुर का चातुर्मास सम्पन्न कर अजमेर होते हुए 21 फरवरी 2009 को जोधपुर नगर पधारे। यहाँ पर लक्ष्मीनगर, पावटा, एयरफोर्स, नेहरूपार्क, शास्त्रीनगर, घोड़ों का चौक, महिलाबाग, मूथाजी का मन्दिर, सिंहपोल, चौपासनी हाउसिंग बोर्ड, अमरनगर, गुलाबनगर, सरस्वतीनगर, कुड़ी भगतासनी आदि क्षेत्रों में आपका विचरण सौहार्दपूर्ण वातावरण में हुआ। रत्नसंघ के साथ पूज्य मयाराम जी म.सा. की परम्परा के संतों के अत्यन्त मधुर एवं प्रगाढ़ सम्बन्ध रहे हैं। इसकी स्मृति एवं पुष्टि संतों के सद्यः विचरण विहार से हुई है। फाल्गुनी पूर्णिमा पर महास्थविर श्री प्रकाशचन्द जी म.सा. आदि ठाणा घोड़ों का चौक विराजे। जहाँ अनेक दया-संवर, उपवास-पौषध आदि हुए। रत्नसंघ के श्रावकों ने संतों की विहार-सेवा का भी लाभ लिया।

अखिल भारतीय निबन्ध स्पर्धा का आयोजन

विषय- जिनशासन की प्रभावना कैसे हो? शब्द सीमा- 1000 शब्द। पुरस्कार : प्रथम-2000/-, द्वितीय- 1000/-, तृतीय- 500/-, प्रोत्साह- पाँच को प्रत्येक 200/-। सौजन्य : सम्पत नर्सिंग होम, चेन्नई।

निबन्ध भेजने की अन्तिम तिथि- 30 मई 2009। पता- महेश नाहटा, पो. नगरी, जिला-धमतरी (छत्तीसगढ़), मो. 09406201351

निबन्ध-प्रतियोगिता का परिणाम घोषित

पार्श्वनाथ विद्यापीठ द्वारा वर्ष 2007-2008 में 'अनेकान्तवाद : सिद्धान्त और व्यवहार' विषय पर निबन्ध-प्रतियोगिता आयोजित की गई, जिसमें ग्रुप 'ए' (18 वर्ष से कम आयु वर्ग वाले प्रतिभागी) एवं ग्रुप 'बी' (18 वर्ष से अधिक आयु वर्ग वाले प्रतिभागी) में क्रमशः 2 एव 26 निबन्ध प्राप्त हुए। निर्णायक मण्डल द्वारा घोषित परिणाम इस प्रकार है-

ग्रुप 'ए' का परिणाम

क्र.स.	पुरस्कार श्रेणी	नाम प्रतिभागी	अंक	पुरस्कार राशि
1.	प्रथम पुरस्कार	कुमारी हीना कोठारी, जयपुर	57	2500/-
2.	द्वितीय पुरस्कार	कुमारी गरिमा जैन, कोटा	53	1500/-

ग्रुप 'बी' का परिणाम

क्र.स.	पुरस्कार श्रेणी	नाम प्रतिभागी	अंक	पुरस्कार राशि
1.	प्रथम पुरस्कार	श्रीमती केशर जैन, इन्दौर	89	2500/-
2.	द्वितीय पुरस्कार	श्रीमती बिनोद जैन, बागपत	86	1500/-
	(संयुक्त)	सुश्री जयश्री जैन, जोधपुर	86	
3.	तृतीय पुरस्कार	श्री जयवन्त पी.शाह, सूरत	83	1000/-
	(संयुक्त)	श्रीमती अनिता शाह, पंढरपुर	83	

-डॉ. श्रीप्रकाश पाण्डेय, निदेशक, पार्श्वनाथ विद्यापीठ

संक्षिप्त समाचार

जलगांव- श्री महाराष्ट्र जैन स्वाध्याय संघ, जलगांव द्वारा 15 पदाधिकारी एवं 45 कार्यकारिणी सदस्यों की नई कार्यकारिणी समिति का गठन किया गया। समिति द्वारा श्री हस्ती जन्म शताब्दी वर्ष हेतु निम्न संकल्प किये गये- 100 नये स्वाध्यायी तैयार करना, 50 वरिष्ठ स्वाध्यायी तैयार करना, 100 जैनोलोजी व प्राकृत के परीक्षार्थी तैयार करना, 1000 प्रेमी स्वाध्यायी तैयार करना, महाराष्ट्र क्षेत्र में परीक्षा बोर्ड के 100 केन्द्र बनाना एवं 2000 परीक्षार्थी तैयार करना, 100 धार्मिक पाठशालाएँ तैयार करना। *- कस्तूरचंद सी. बाफणा, संयोजक*

चेन्नई- आर्थिक दृष्टि से कमजोर जैन विद्यार्थियों को शिक्षा एवं युवाओं को रोजगार उपलब्ध करवाने हेतु जैन्स इण्डिया ट्रस्ट, चेन्नई सराहनीय प्रयास कर रहा है। पिछले छ वर्षों में 87 लाख की राशि सहयोग के लिए प्रदान की जा चुकी है। वर्तमान में केवल तमिलनाडू में रहने वाले छात्रों को ही छात्रवृत्ति प्रदान की जाती है। जरूरतमन्द छात्र इस संस्था से सम्पर्क कर सकता है तथा सम्पन्न परिवार अपने धन का सदुपयोग संस्था को सहयोग देकर कर सकता है। *सम्पर्क सूत्र-जैन इण्डिया ट्रस्ट, न. 11, पोन्नप्पा लेन, ट्रिप्लिकेन, चेन्नई-600005*

दिल्ली- दिल्ली हाई कोर्ट ने रिट संख्या **CM2622/2005 in WP (C) 14175/2005** के निर्णय के अंतर्गत उन गोशालाओं को जो सुव्यवस्थित-सुसंचालित हैं, सरकार द्वारा प्रतिदिन रु. 25 प्रति गाय (पशु) देने का आदेश दिया है। दिल्ली सरकार इसका पालन कर रही है। अतः समस्त गोशाला (पिंजरापोलों) के संचालकों से निवेदन है कि इस योजना के अंतर्गत सरकार से आग्रह करके अनुदान प्राप्त करने का प्रयास करें। *सम्पर्क सूत्र- मोतीलाल जैन, 108/3, मोती बाजार, चाँदनी चौक, दिल्ली। फोन : 011-23269904, 09868208730, 9312558730 (मो.)*

झालरापाटन- पाटन श्री संघ द्वारा होली के अवसर पर विशेष रूप से धर्माराधना की जाती है। पिछले 10 वर्षों से नवयुवक श्रावक-श्राविकाएँ होली नहीं खेलकर प्रातः 8 बजे से स्थानक में आकर 5 सामायिक, दया, प्रतिक्रमण, संवर और पौषध करते हैं, जो कि अपने आपमें एक अनुकरणीय एवं प्रशंसनीय कार्य है।

मुम्बई- पनवेल नवी मुम्बई स्थित 'आचार्य श्री नानेश छात्रावास' में प्रवेश के लिए जैन छात्र आवेदन कर सकते हैं। चार्टर्ड अकाउन्टेन्ट, एम.बी.ए. आदि उच्च शिक्षा के अध्ययनार्थी छात्रावास में प्रवेश ले सकते हैं। इच्छुक छात्र निम्न फोन नम्बर अथवा ई मेल पर सम्पर्क करें- फोन नं.-022-27467340, 093246-10630, Email- mrFoundtaion@rediffmail.com

जालना- भारतीय जैन संघटना, जालना द्वारा आयोजित एक समारोह में विवाह में रात्रिभोज, संगीत संध्या में अनावश्यक खर्च और बहू-बेटियों के भद्दे, नृत्य करने पर प्रतिबन्ध लगाने के लिए विचार किया गया। इस कार्यक्रम के

प्रमुख वक्ता श्री रतनलाल जी बाफना-जलगाँव, विशिष्ट अतिथि श्री भागचन्द जी विनायके-औरंगाबाद और अध्यक्ष श्री हस्तीमल जी बंब थे। सभी पंथ एवं सम्प्रदाय के प्रमुख व्यक्तियों ने ऐसे अनावश्यक अनैतिक खर्चीले आयोजन पर प्रतिबंध लगाने की सहमति अभिव्यक्त की और इस प्रकार के कार्यक्रमों में शामिल न होने का आश्वासन दिया।

राजनांद गाँव- श्री देव आनन्द जैन शिक्षण संघ, राजनांद गाँव में मैनेजर एवं छात्रावास अधीक्षक की आवश्यकता है। वेतन आकर्षक तथा अनुभव व कार्य कुशलता के अनुसार देय होगा। **मैनेजर हेतु शैक्षणिक योग्यता-** पोस्ट ग्रेजुएट, कम्प्यूटर एवं एकाउंट का ज्ञान। **अधीक्षक हेतु न्यूनतम योग्यता-** स्नातक, सामायिक एवं प्रतिक्रमण का ज्ञान। ***आवेदन के लिए पता-* *सचिव, श्री देव आनन्द जैन शिक्षण संघ, राजनांदगाँव(छ.ग.)।* *फोन-* *09425247304(मो.)***

बधाई/चुनाव

मुम्बई- युवा रत्न श्री अमर जी बाफना को अखिल भारतीय सी.ए. इन्स्टीट्यूट

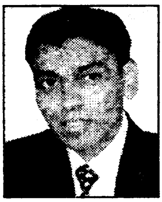

के पश्चिम आंचलिक कार्यालय द्वारा व्यावसायिक क्षेत्र में 2008 में दी गयी सेवाओं के लिए विशेष पुरस्कार से सम्मानित किया गया। श्री अमर जी बाफना गत वर्ष जे.बी. नगर सी.ए. स्टडी सर्कल के प्रमुख चुने गये, जो कि देश का सबसे बड़ा सी.ए.स्टडी सर्कल है। आप श्री जैन रत्न युवक परिषद् मुम्बई शाखा के उप-प्रमुख हैं तथा संघ से सक्रिय रूप से जुड़े हुए हैं।

जयपुर- सुश्री गरिमा डागा पुत्री श्री सुनीलचन्द जी डागा ने **M.Sc.I.T.**

(Master of Science Information Technology) में राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर से 77 प्रतिशत अंक अर्जित कर द्वितीय स्थान प्राप्त किया। इसके लिए उन्हें एस.एस. जैन सुबोध पी.जी. महाविद्यालय, जयपुर द्वारा सम्मानित किया गया। आपने आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड की सातवीं कक्षा में 88 प्रतिशत अंक प्राप्त किये।

पाली- श्रीमती लीला जैन धर्मपत्नी श्री ताराचन्द जी जैन को जयपुर के एक कार्यक्रम में राजस्थान के मुख्यमंत्री श्री अशोक जी गहलोत ने 'लक्ष्मी

मजूमदार' नामक राष्ट्रीय अवार्ड से सम्मानित किया है।

श्रद्धाञ्जलि

जयपुर- त्यागमूर्ति, श्रावक श्रेष्ठ, महान् तपस्वी, समाज गौरव, सुप्रतिष्ठित

रत्न व्यवसायी श्री गुमानमल जी चोरडिया का 26 मार्च, 2009 को संथारा पूर्वक समाधिमरण हो गया। आपने 16 मार्च को पूरी सजगता के साथ संथारा ग्रहण किया और 20 मार्च को प्रातः आजीवन मौन व्रत धारण कर लिया। आप बाल्यकाल से ही धार्मिक भावना से ओतप्रोत थे। आपने अपने जीवन को धार्मिक आचरण के साथ सामाजिक एवं परोपकारी कार्यों में भी समर्पित किया। आपने समाज के समक्ष अद्वितीय एवं दुर्लभ गृहस्थ-जीवन का आदर्श प्रस्तुत किया। व्यावसायिक उन्नति के साथ-साथ आपने सामाजिक क्षेत्र में अपूर्व सेवा देकर धार्मिक क्षेत्र में धर्म-ध्यान एवं तप-त्याग का आराधन किया। आप लगभग 45 वर्षों से रात्रि-चौविहार का प्रत्याख्यान कर रहे थे एवं आपने 38 वर्ष की युवावस्था में ही शीलव्रत अंगीकार कर लिया था। लगभग 22 वर्षों से एकान्तर, बेले-बेले, तेले-तेले की तपाराधना तथा कई अठाइयाँ एवं बड़ी तपस्या के साथ करीब तीस वर्षों से आप निरन्तर मात्र 8 द्रव्य की मर्यादा एवं प्रतिदिन दो विगयों का त्याग रख रहे थे। सामायिक स्वाध्याय एवं पौषध-संवर तो नित्यक्रम से करते ही थे।

आप श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गीय जैन संघ बीकानेर के अध्यक्ष, श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, जयपुर के संघमंत्री एवं श्री अमर जैन अस्पताल, जयपुर के वर्षों तक अध्यक्ष एवं अन्य अनेक पदों पर सक्रिय रहे। इसके अतिरिक्त श्री सुबोध शिक्षा समिति जयपुर की कार्यकारिणी के लम्बे समय तक प्रभावी सदस्य रहे। आपने समाज एवं अन्य विभिन्न चिकित्सा संस्थाओं, धार्मिक एवं सामाजिक संस्थाओं में तन-मन-धन से सहयोग प्रदान कर जनकल्याण की भावनाओं को मूर्त रूप प्रदान किया।

आप सादा जीवन उच्च विचार के पोषक थे एवं सदैव दूसरों के लिये प्रेरणापुंज थे। आप विनय एवं सरलता की प्रतिमूर्ति थे। अपने विचारों को भी आप प्रभावी रीति से प्रस्तुत करते थे। लालभवन पधारने वाले सन्त-सतीवृन्द

की सेवा में सदैव तत्पर रहते थे। आचार्य श्री नानेश एवं रामेश के साथ आपकी आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा., आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के प्रति भी पूर्ण निष्ठा रही। श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ बीकानेर द्वारा 'प्रथम समता पुरुस्कार' प्रदान कर आपको सम्मानित किया गया। आपके जीवन में सामायिक-स्वाध्याय का प्रमुख स्थान था। आपके धार्मिक विचार एवं त्यागमय प्रवृत्ति से सभी का उत्साहवर्द्धन होता था। आज के भौतिकवादी युग में सभी सुख सुविधाओं से सम्पन्न होते हुए भी आपका आदर्श त्यागमय जीवन था। जीवनभर की साधना का ही सुफल है कि अन्तिम अवस्था में आपने सजगता के साथ संथारा स्वीकार किया एवं उत्कृष्ट भावना के साथ पूर्ण कर साधना को फलवती बनाया।

चौरू- वीरमाता, धर्मनिष्ठ सुश्राविका श्रीमती बिरदी देवी जैन धर्मपत्नी स्व. श्री चौथमल जी जैन का 75 वर्ष की उम्र में 10 मार्च, 2009 को स्वर्गवास हो गया। वे प्रतिदिन सामायिक-स्वाध्याय के साथ यथासामर्थ्य तपाराधना में संलग्न रहती थीं। आपने वर्षीतप, मासखमण, अट्ठाई, तेले, बेले आदि कई तपस्याएँ भी कीं। रत्नसंघ में महासती श्री तेजकंवर जी म.सा. के सान्निध्य में आपने अपनी पुत्री को संयम मार्ग पर प्रशस्त किया। सम्प्रति आपकी पुत्री महासती श्री मंजुलता जी म.सा. के नाम से धर्म की जाहोजलाली कर रही है। गुरुदेव श्री हस्ती-हीरा-मान के प्रति आपकी व आपके परिवार की पूर्ण श्रद्धा भक्ति है।

जोधपुर- धर्मनिष्ठ सुश्राविका श्रीमती प्रेमकंवर जी सुराणा धर्मपत्नी स्व. श्री

सूरतराज जी सुराणा का 12 मार्च, 2009 को कोलकाता में समाधि मरण हो गया। आपका जीवन सहज, सरल एवं सादगी से परिपूर्ण था। आप सन्त-सतियों की सेवा में सदैव अग्रणी रहती थीं। सुश्राविका के जीवन पर आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा., आचार्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. एवं उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. का विशेष प्रभाव था। आपके परिवार की प्रेरणा से ही स्व. श्री शुभेन्द्रमुनि जी म.सा. ने दीक्षा अंगीकार की थी। आप अपने पीछे संस्कारित परिवार छोड़कर गई हैं।

जयपुर- सन्तसेवी, समाज सेवी, श्रद्धानिष्ठ सुश्रावक श्रीमान् उत्तमचन्द जी

बढ़ेर का हृदयगति रुक जाने से आकस्मिक स्वर्गवास दिनांक 23.03.2009 को हो गया। आप देव, गुरु एवं धर्म के प्रति पूर्णतः समर्पित थे। सन्त-सतियों की सेवा में सदैव अग्रणी रहते थे। आपने खतरगच्छ संघ में 22 वर्षों तक मंत्री पद को सुशोभित करते हुए समाज को अपनी सेवाएँ प्रदान की। आपके सुपुत्र श्री नरेन्द्र जी ने मरणोपरान्त आपश्री के चक्षु नेत्र विभाग को दान कर दिये। आप अपने पीछे भरापूरा परिवार छोड़कर गये हैं।

पहुँना- धर्मपरायणा सुश्राविका श्रीमती रुक्मण बाई धर्मपत्नी श्री रोशनलाल जी बोहरा का 21 मार्च 2009 को स्वर्गवास हो गया। आपकी संत-सतीवृन्द के प्रति गहरी आस्था थी। आपका जीवन त्याग-तप से परिपूर्ण था।

श्योपुर- सरलमना, सुश्राविका श्रीमती सुशीला देवी जी धर्मपत्नी श्री रमेशचन्द्र

जी जैन का 27 जनवरी, 2009 को निधन हो गया। आप मृदुभाषी, व्यवहार कुशल, सामाजिक कार्यों में अग्रणी रहने वाली महिला थीं। आप अपने पीछे भरापूरा परिवार छोड़कर गई हैं।

चेन्नई- सुश्रावक श्री रतनचन्द जी बोहरा सुपुत्र स्व. श्री गुलाबचन्द जी बोहरा (कुचेरा वाले) का 66 वर्ष की आयु में 13 मार्च, 2009 को देहावसान हो गया। आप अपने पीछे संस्कारशील धार्मिक परिवार छोड़कर गई हैं।

उपर्युक्त दिवंगत आत्माओं के प्रति सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जिनवाणी तथा अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनके परिवारजनों के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त करते हैं।

जिनवाणी सबसुं बड़ी, इण सुं बड़ी नहीं कोय।
जिनके हृदय बस गई, उण घर आनन्द होय।।
उण घर आनन्द होय, मौज मनचाही आवे।
वीतराग की वाणी सुण, जीव सद्गति में जावे।।
वाणी मंगल कारणी, देती भवजल तार।
'घेवरचन्द' जिनवाणी सुण, तिर जावे संसार।।

-घेवरचन्द तातेड़, राता कोट, वाया विजयनगर, जिला-अजमेर (राज.)

साभार-प्राप्ति-स्वीकार

500/- जिनवाणी पत्रिका की आजीवन-सदस्यता हेतु प्रत्येक

11891 अम्बिका जी भंसाली, शास्त्रीनगर, जोधपुर (राजस्थान)
11892 श्री शोनू जी कुम्भट, वाई. एन. रोड, इन्दौर (मध्यप्रदेश)
11893 श्रीमती कल्पना जी बया, 448, मोक्षमार्ग, शास्त्रीसर्किल, उदयपुर (राजस्थान)
11894 श्री आशीष जी बोथरा, परतानियों का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर (राजस्थान)
11895 श्री शांतिलाल जी सेठिया, रिवेरा टॉवर, कांदिवली (ईस्ट), मुम्बई (महाराष्ट्र)
11896 Shri Anil ji Vaya, Usha Nagar Extension, Indore(M.P.)
11904 श्री चम्पालाल जी बांठिया (पूर्व विधायक), बालोतरा, बाड़मेर (राजस्थान)
11905 श्री मयंक जी चौपड़ा, श्री रुद्राक्ष भवन, उधना-मगदल्ला रोड, सूरत (गुजरात)
11906 श्रीमती अम्बिका जी भंसाली, श्रीपाल रेजीडेन्सी, कॉर्नर पॉइन्ट, सीटी लाइट, सूरत (गुजरात)
11907 श्रीमती सरला देवी भंसाली, न्यू रीटा पार्क, बंगला नं. 5, शाहीबाग, अहमदाबाद (गुजरात)
11908 सौ. वन्दना जी छाजेड़, सद्गुरु कॉम्पलेक्स, बी.डी.सी.सी. बैंक के पास, बुलढाणा (महाराष्ट्र)
11909 श्री दिनेश कुमार जी ओस्तवाल, शेन्दूर्णी, जलगाँव (महाराष्ट्र)
11910 श्री नीलेश जी वेदमुथा, महावीर जनरल स्टोर्स, शेन्दूर्णी, जलगाँव (महाराष्ट्र)
11911 श्री दुलीचन्द जी मकाणा, पीपलिया बाजार के सामने, ब्यावर, अजमेर (राजस्थान)
11912 श्री दिलीपचन्द जी मेहता, एन-17, मुख्य मंडी, मंडोर रोड, जोधपुर (राजस्थान)
11913 श्री ऋषभ कुमार जी जैन, शुभम् एन्क्लेव, 136 शक्तिनगर, कोटा (राजस्थान)
11914 श्री सौरभ जी भंडारी, माणक चौक, टीनू प्लास्टिक के पास, जोधपुर (राजस्थान)
11915 श्री नरेन्द्र जी नाहर, पंजाब नेशनल बैंक के पास, भुसावल, जलगाँव (महाराष्ट्र)
11916 श्रीमती बबीता जी संचेती, बीरबल का मौहल्ला, जैन मंदिर के पास, अलवर (राजस्थान)
11917 श्रीमती सरिता जी जैन, ए-30, कीर्ति नगर, टोंक रोड, जयपुर (राजस्थान)
11918 श्री नितेश जी तातेड़, म्युनिसिपिल बिल्डिंग, नंदुरवार, जलगाँव (राजस्थान)
11919 श्रीमती नमिता जी मेहता, 6 डोरे नगर, सेवाश्रम रेलवे क्रासिंग के पास, उदयपुर (राजस्थान)

श्री विमलचन्द जी धोका, मैसूर के सौजन्य से

11898 श्री लोकेश कुमार जी जैन, सुनार गली, गंगापुरसिटी, सवाईमाधोपुर (राजस्थान)
11899 श्री लालचन्द जी संचेती, रेलवे कॉलोनी रोड, दलीराजहरा, दुर्ग (छत्तीसगढ़)
11900 श्री त्रिलोक जी जैन, ग्राम-शेमाला, तहसील-गंगापुरसिटी, जिला-सवाईमाधोपुर (राजस्थान)
11901 श्री पदमचन्द जी जैन (प्रेस वाले), गंगापुरसिटी, जिला-सवाईमाधोपुर (राजस्थान)
11902 श्री रामस्वरूप जी गुर्जर, ग्राम-दुब्बी, तहसील-हिण्डौनसिटी, जिला-करौली (राजस्थान)
11903 श्री रतनलाल जी मीणा पूर्व तहसीलदार, कोयला, गंगापुरसिटी, सवाईमाधोपुर (राजस्थान)

श्री लाभचन्द जी कोठारी, जयपुर के सौजन्य से

11897 श्री अशोक जी वेदमूथा, अन्ना साहिब पाटिल नगर, चबूकर वर्डी रोड, धुलिया (महाराष्ट्र)

250/- श्री व्ही. पारस भय्या चोरड़िया, उज्जैन के सौजन्य से

11920 श्री संजीव कुमार जी पाटनी, महावीर पार्क के सामने, किशनपोल बाजार, जयपुर

जिनवाणी हेतु साभार

11000/- श्री महेन्द्र कुमार जी संचेती सुपुत्र स्व. श्री ज्ञानचन्द जी संचेती (राठौड़), अलवर, सुपुत्री सौ.का. मेघना संग चि. प्रशान्त जी सुराणा सुपुत्र श्री विजयकुमार जी सुराणा निवासी नाथद्वारा का दिनांक 26.02.2009 को पाणिग्रहण संस्कार सम्पन्न होने के उपलक्ष्य में।

11000/- श्री विजयकुमार जी सुराणा सुपुत्र स्व. श्री कन्हैयालाल जी सुराणा, नाथद्वारा, सुपुत्र चि. प्रशान्त ज़ी सुराणा संग सौ.कां. मेघना जी सुपुत्री श्री महेन्द्र कुमार जी संचेती निवासी अलवर का दिनांक 26.02.2009 को पाणिग्रहण संस्कार सम्पन्न होने के उपलक्ष्य में।

11000/- श्री ओमप्रकाश जी, टीकमचन्द जी जैन, नवसारी-गुजरात, आचार्य भगवन्त श्री हीराचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा-9 के नवसारी में पदार्पण तथा विराजने के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

5100/- श्री बुद्धिप्रकाश जी, नरेन्द्र कुमार जी, महेन्द्र कुमार जी जैन, कोटा, सौ.कां. प्रियंका सुपुत्री श्री बुद्धिप्रकाश जी संग चि. रतीश जी सुपुत्र श्री उम्मेदमल जी जैन, जरखोदा वाले के शुभविवाह के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

5100/- श्री बुद्धिप्रकाश जी, नरेन्द्र कुमार जी, महेन्द्र कुमार जी जैन, कोटा, सौ.कां. नयना सुपुत्री नरेन्द्रकुमार जी जैन संग चि. विकासराज जी सुपुत्र श्री राजेन्द्र कुमार जी जैन 'राजा' जयपुर के शुभविवाह के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

5100/- श्रीमती विमलकंवर जी-छतरचन्द जी मेहता, जोधपुर, अपने सुपौत्र तथा श्रीमती शशि - श्री आनन्दचन्द जी मेहता के सुपुत्र श्री कुणाल मेहता के शुभ विवाह के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

5100/- श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, नवसारी, परम पूज्य आचार्य भगवन्त श्री हीराचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा के नवसारी में मंगलमय पदार्पण एवं शेषकाल में विराज कर प्रवचनामृत से लाभान्वित करने के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

1100/- श्रीमती रतन जी कर्नावट एवं समस्त परिवार, जयपुर, स्व. श्री मोतीचन्द जी कर्नावट की दिनांक 13.03.2009 को पुण्यस्मृति के उपलक्ष्य में भेंट।

1100/- श्रीमती कमला जी पल्लीवाल, गंगापुरसिटी-करौली स्व. श्री हरिशचन्द जी पल्लीवाल भूतपूर्व एम.एल.ए. की छठी पुण्य स्मृति के उपलक्ष्य में भेंट।

1001/- श्री ज्ञानेश कुमार जी, रणजीतसिंह जी कुम्भट, नवसारी, पूज्य आचार्य भगवन्त श्री हीराचम्द्र जी म.सा. के 71वें जन्मदिवस के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

1000/- श्रीमान् सुरेश कुमार जी, अखेराज जी, राकेश कुमार जी छाजेड़, इचलकरंजी, चि. डॉ. प्रवीण कुमार जी सुपुत्र श्रीमान् शाह सुरेश कुमार जी का शुभविवाह दिनांक 17.02.2009 को सौ.कां. दीपिका जी सुपुत्री श्री प्रकाशचन्द जी कांकरिया, रायचूर, के संग सुसम्पन्न होने पर सप्रेम भेंट।

1000/- श्री रंगरूपमल जी चोरड़िया, कु. मीनू जी चोरड़िया, चेन्नई, पूज्य आचार्य भगवन्त श्री हीराचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा के सूरत नगरी में दर्शन लाभ प्राप्त होने के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

650/- श्रीमान् नरेन्द्र जी मेहता, कलकत्ता द्वारा जिनवाणी सहायतार्थ।

501/- श्री उम्मेदचन्द जी जैन (सरपंच), जरखोदा, चि. रतीश जैन का शुभविवाह दिनांक 16.02.2009 को सम्पन्न होने की खुशी में भेंट।

501/- श्री प्रदीप कुमार जी बंसल, मानसरोवर-जयपुर, सौ.कां. प्रियंका जी सुपुत्री श्रीमती प्रीति जी श्रीमान् प्रदीप जी बंसल का शुभ विवाह चि. सोमेश जी सुपुत्र श्रीमती प्रमिला जी एवं श्रीमान् शीतल कुमार जी अग्रवाल, बीकानेर के संग दिनांक 26.02.2009 को सुसम्पन्न होने के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

501/- श्री अक्षयसिंह जी ढ़ाबरिया, जयपुर, अपनी धर्मपत्नी श्रीमती प्रेमकुमारी जी ढ़ाबरिया का स्वर्गवास होने पर उनकी पुण्य स्मृति में भेंट।

501/- श्रीमती शारदा जी, श्री मनीष जी, अरूण जी, अमित जी जैन, खेरली-मंडी, श्री सुरेशचन्द जी जैन, वरिष्ठ स्वाध्यायी खेरली मंडी के प्रधानाध्यापक पद से दिनांक 28.02.2009 को सेवानिवृत्त होने के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

501/- श्री गणपतलाल जी, मनोज कुमार जी जैन, सवाईमाधोपुर, पूज्य आचार्य भगवन्त श्री हीराचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा के कैलाशनगर-सूरत में दर्शनलाभ व होली चौमासा के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

501/- श्रीमती त्रिशला देवी, श्री रमेशचन्द जी जैन (अलीगढ़ वाले), नवसारी, सुपुत्र श्री कुलदीप जी जैन की प्लाण्ट ऑफिसर सिफ्ट इंचार्ज कैमिकल इन्जीनियरिंग पद पर यशस्वी रसायन प्राइवेट लि. मरौली में नियुक्ति होने के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

500/- श्री पंकज जी, रतनलाल जी फूलफगर, फत्तेपुर (महाराष्ट्र) पूज्य आचार्य भगवन्त श्री हीराचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा के सूरत नगरी में दर्शनलाभ प्राप्त करने की खुशी में सप्रेम भेंट।

500/- श्री बुधमल जी, पदमचन्द जी कोठारी (रणसीगाँव वाले), पालड़ी-अहमदाबाद, पूज्य आचार्य भगवन्त श्री हीराचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा द्वारा पालड़ी-अहमदाबाद में चातुर्मास की स्वीकृति प्रदान कर उपकृत करने के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

500/- श्री नौरतनमल जी गांग, सूरत, अपनी धर्मपत्नी स्व. श्रीमती किरणकंवर गांग की तृतीय पुण्य तिथि पर भेंट।

500/- श्री रोशनलाल जी बोहरा, पहुंना, जिला-चित्तौड़गढ, अपनी धर्मपत्नी स्व. श्रीमती रूक्मण जी बाई का दिनाँक 21/03/2009 को स्वर्गगमन होने पर उनकी पुण्य स्मृति में भेंट।

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मंडल को प्राप्त साभार

11111/- श्री राजेन्द्र जी जैन 'राजा', मानसरोवर-जयपुर द्वारा अपने सुपुत्र चि. विकासराज संग सौ. कां नयना जी सुपुत्री श्री नरेन्द्र जी जैन, कोटा के शुभ विवाह के उपलक्ष्य में सप्रेम

भेंट।

5000/- श्रीमती कुशलदेवी जी डागा धर्मपत्नी श्री प्रकाशचन्द जी डागा, जयपुर अपने परिवार के साथ सूरत शहर में परम पूज्य आचार्य श्री एवं संत-सतियों के दर्शन लाभ प्राप्त करने के उपलक्ष्य में भेंट।

2000/- श्री सम्पतराज जी बाफना (भोपालगढ वाले) द्वारा सहायतार्थ।

1100/- श्री प्रकाशचन्द जी पगारिया, अपर जिला एवं सेशन न्यायाधीश, बांसवाड़ा, की ओर से भेंट।

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मंडल से प्रकाशित साहित्य हेतु साभार

5000/- श्री जिनेश कुमार जी जैन की ओर से गमा के थोकड़े के प्रकाशन हेतु सप्रेम भेंट।

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर को प्राप्त साभार सहयोग

2000/- श्री जौहरीमल सा छाजेड़, द्वारा सहायतार्थ हेतु।

600/- जैन श्रावक संघ, पो. बागली, जिला-देवास(म.प्र.)

501/- श्री लड्डूलाल जी रतनलाल जी जैन, कुश्तला-सवाईमाधोपुर, चि.सुनील जैन के विवाहोपलक्ष्य में स्वाध्याय संघ को सप्रेम भेंट।

अ.भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड को प्राप्त साभार

10000/-श्री सोहनलाल जी, बुधमल जी बाघमार एवं परिवार, मैसूर द्वारा पुस्तक प्रकाशन हेतु भेंट।

गजेन्द्र निधि द्वारा संचालित आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना

(अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् द्वारा क्रियान्वित)

दानदाता एवं दान एकत्रित करने वालों की सूची

1,08,000/- मैसर्स पृथ्वी सोफ्टेक लिमिटेड, चेन्नई (तमि.)

36,000/- श्री रतनलाल नेमीचन्द जी भण्डारी, मुम्बई (महा.)

24,000/- श्री विजयराज जतिनराज जी नाहर, इन्दौर (म.प्र.)

12,000/- मैसर्स चेनकंवर कनकमल चोरडिया ट्रस्ट, चेन्नई (तमि.)

12,000/- श्री रिखबचन्द जी सिंघवी, जोधपुर (राज.)

12,000/- मैसर्स नेहसुख अमन जी जैन, जोधपुर (राज.)

12,000/- श्री सुमेरमल जी वसन्त जी मोहनोत, मुम्बई (महा.)

12,000/- श्री नरपत सिंह जी वैद, मुम्बई (महा.)

छात्रवृत्ति-योजना में इच्छुक दानदाता एक छात्र के लिए 12000/- रु. अथवा उनके गुणक में जितनी छात्रवृत्तियाँ देना चाहें तदनुसार दानराशि 'गजेन्द्र निधि आचार्य श्री हस्ती स्कॉलर शिप फण्ड' योजना के नाम चैक या ड्राफ्ट(Donations to Gajendra Nidhi are exempted u/s 80G of IncomeTax Act 1961) से निम्नांकित पते पर भेजने का कष्ट

करें- *श्री अशोक जी कवाड़,* 33, *Montieth Road, Egmore, Chennai-600008 (Mob. 9381041097)*

आगामी पर्व

वैशाख कृष्णा 8	शुक्रवार, 17.04.2009	अष्टमी
वैशाख कृष्णा 8	शनिवार, 18.04.2009	अष्टमी
वैशाख कृष्णा 14	शुक्रवार, 24.04.2009	चतुर्दशी, पक्खी,
वैशाख शुक्ला 3	सोमवार, 27.04.2009	अक्षय तृतीया वर्षीतप पारणा
वैशाख शुक्ला 8	शनिवार, 02.05.2009	अष्टमी, आचार्यप्रवर पूज्य श्री हस्तीमल जी म.सा. की 18वीं पुण्यतिथि
वैशाख शुक्ला 11	मंगलवार 05.05.2009	चतुर्विध संघ स्थापना दिवस
वैशाख शुक्ला 14	शुक्रवार 08.05.2009	चतुर्दशी, पक्खी

आवश्यक सूचना

(1) श्रीमान् व्ही पारस भय्या जी चोरड़िया, उज्जैन के सौजन्य से जिनवाणी के 70 आजीवन सदस्य बनाने हेतु आधी राशि जमा करवायी गई है। इस योजना के अन्तर्गत जिनवाणी का आजीवन सदस्य बनने के इच्छुक महानुभाव आधी राशि रुपये 250/- जिनवाणी कार्यालय में जमा करवा सकते हैं। यह योजना केवल 70 सदस्यों के लिए ही उपलब्ध होगी, उसके पश्चात् नहीं।

(2) मंडल का साहित्य चेन्नई, जलगांव, जोधपुर आदि स्थानों के साथ निम्नाङ्कित पते पर भी उपलब्ध रहेगा :-श्रीमती प्रेमलता जी जैन, 65 ई, कमला नगर, दिल्ली-110007 फोन नं. 011-23846604, 23841291, मो. 09868050127

शुभकामनाएँ

चैत्र शुक्ला प्रतिपदा को नव संवत्सर संवत् 2066 प्रारम्भ होने पर सभी पाठकों एवं लेखकों को हार्दिक मंगलकामनाएँ। जिनवाणी के लिए मौलिक, प्रेरणास्पद एवं अप्रकाशित रचनाएँ अवश्य भेजें।

-सम्पादक

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

अनूठा दान छात्रवृत्ति का जीवन बनता एक विद्यार्थी का

Surana TMT - A perfect vaccination for your constuctions.

• Excellent Bond Strength • Greater resistance to Corrosion • Superior Weldability • Excellent Ductility and High Bendability • Uniform properties throughout length • Enhanced Resistance to Fire • Ability to withstand Earthquakes • Bigger savings in steel consumption (almost 18%) • Available in Fe 415 / 500 / 550 / 600 grades with IS 1786 standard

For marketing enquiries, contact : 91-44-2855 0715 / 2855 0736

Corporate Head Office :
29, Whites Road, Second Floor, Royapettah, Chennai - 600 014
Phone : 91-44-2852 5127 (3 Lines) / 2852 5596 Fax : 91-44-2852 0713
E-mail : steelmktg@surana.org.in / silimited@surana.org.in
Website : www.surana.org.in

Surana TMT - *Lifeline of every Construction...*

IS:1786

SURANA™ yes, the best TMT RE BARS

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

देने वाले निरभिमानी, पाने वाले हैं [illegible]
आचार्य हस्ती छात्रवृत्ति में, ज्ञानदान की [illegible]

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

With Best Compliments From :

पारसमल सुरेशचन्द कोठारी

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

प्रतिष्ठान

KOTHARI FINANCERS

23, Vada malai Street, Sowcarpet
Chennai-600079 (T.N.) Ph. 044-25292727
M. 9841091508

BRANCHES :

Bhagawan Motors
Chennai-53, Ph. 26251960

Bhagawan Cars
Chennai-53, Ph. 26243455/56

Balalji Motors
Chennai-50, Ph. 26247077

Padmavati Motors
Jafar Khan Peth, Chennai, Ph. 24854526

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

ज्ञान का एक दीया जलाइये
सहयोग के लिए आगे आइए
आचार्य हस्ती छात्रवृत्ति योजना का
लाभ उठाकर आनन्द पाईये

आदरणीय रत्न बन्धुवर

छात्रवृत्ति योजना में एक छात्र के लिए Rs. 12,000 के गुणक में दान राशि "Gajendra Nidhi Acharya Hasti Scholarship Fund" योजना के नाम चैक/बैंक ड्राफ्ट (Donations to Gajendra Nidhi are Exempt u/s 80G of Income Tax Act, 1961) से निम्नांकित पते पर भेंजे, पुण्यधन कमाइऐं।

Ashok Kavad

PRITHVI EXCHANGE

33, Montieth Road, Egmore, CHENNAI-600008
Tele Fax 044-43434249, 09381041097

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

छोटा सा नियम धोवन का।
लाभ बड़ा इसके पालन का।।

GURU HASTI GOLD PALACE

(Govt. Authorised Jewellers) (916. KDM)

22 Ct. Gold ! 24 Ct. Trust !

No. 4 Car Street, Poonamallee, Chennai-600 056
Ph. 044-26272609, 55666555, 26272906, 55689588

Guru Hasti Bankers :

P. MANGILAL HARISH KUMAR KAVAD

N0. 5, Car Street,
Poonamallee, Chennai-600 056
Ph. 26272906, 55689588

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

प्यास बुझाये, कर्म कटाये
फिर क्यों न अपनायें
धोवन पानी

Narendra Hirawat & Co.

Flat No. 1, Building No. 2, Navjeevan Society,
Senapati Bapat Marg, Matunga (West), MUMBAI-400 016

Trin-Trin

Matunga Office : 022-24370713, 24380713, 66669707
Opera House Office : 022-23669818
Mobile : 09821040899

JAI GURU HASTI JAI GURU HEERA JAI GURU MAAN

प्यास बुझाये, कर्म कटाये
फिर क्यों न अपनायें
धोवन पानी

With best compliments from :

SOHANLAL UMEDRAJ SURENDER HUNDIWAL

S.UMEDRAJ JAIN (HUNDIWAL)
098407 18382
2027 'H' BLOCK 4th STREET,12TH MAIN ROAD,
ANNA NAGAR, CHENNAI-600040
044-32550532

BRANCHES

APPOLO BRIGHT STEELS PVT LTD.
S.P.59, 3 rd MAINROAD
AMBATTUR ESTATE CHENNAI-600058
044-26258734, 9840716053, 98407 16056
FAX: 044-26257269
E-MAIL: appolobright@yahoo.com

APPOLO CORRUGATORS PVT LTD.
NO.400 NORTH PHASE, SIDCO INDUSTRIAL ESTATE,
AMBATTUR CHENNAI-60098
FAX: 044-26253903, 9840716054
E-MAIL:appolocorrugators@yahoo.com

SAPNA PACKAGING INDUSTRIES
NO.410 NORTH PHASE INDUSTRIAL ESTATE
AMBATTUR, CHENNAI-600098
044-26241041

PENINSULAR PACKAGINGS
NO.25 SIDCO INDUSTRIAL ESTATE
AMBATTUR CHENNAI-600098
044-26250564

आर.एन.आई. नं. 3653/57
डाक पंजीयन संख्या RJ/JPC/M-07/2009-11
वर्ष : 66 ★ अंक : 4 ★ मूल्य : 10 रु.
10 अप्रेल, 2009 ★ चैत्र 2066

धोवन पानी - निर्दोष जिन्दगानी

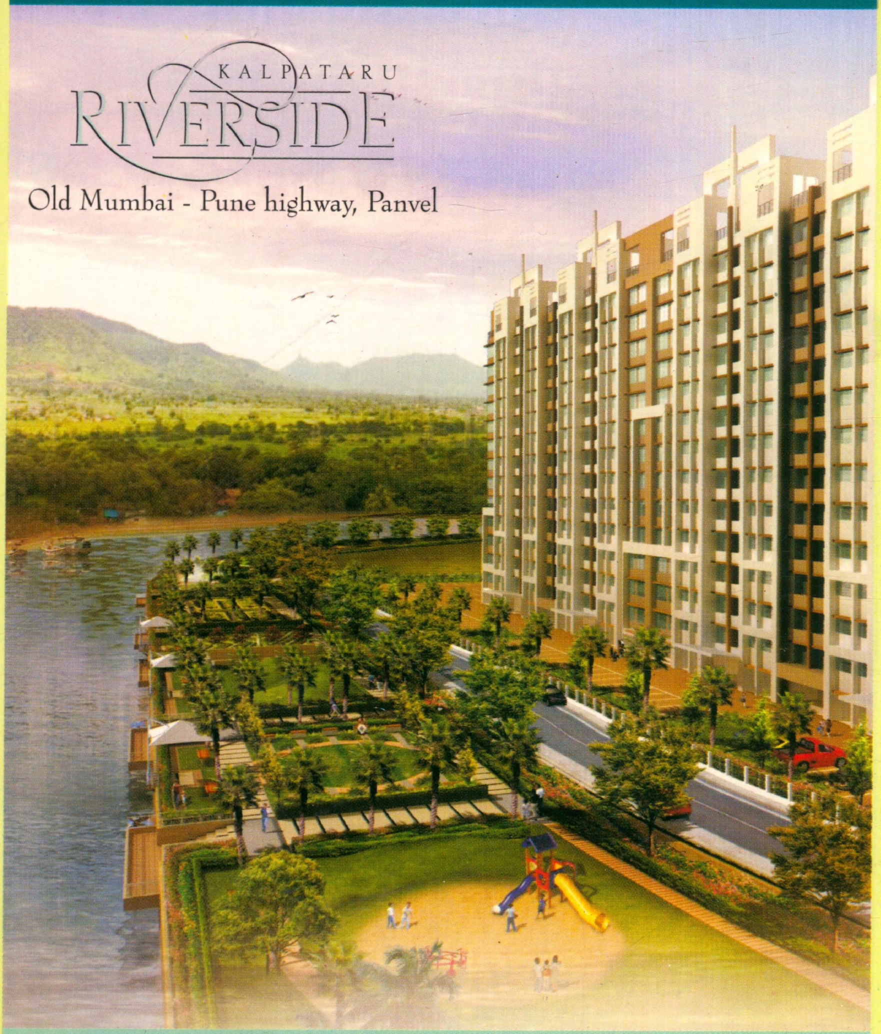

KALPA-TARU
101, Kalpataru Synergy, Opp. Grand Hyatt, Santacruz (East),
Mumbai - 400 055. • Tel.: 3064 3065, 98339 45470 • Fax: 3064 3131
Website: www.kalpataru.com

स्वामी–सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के लिये मुद्रक संजय मित्तल द्वारा दी डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, एम.एस.बी. का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर से मुद्रित एवं प्रकाशक प्रेमचन्द जैन, बापू बाजार, जयपुर से प्रकाशित। सम्पादक डॉ. धर्मचन्द जैन।